राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 10] चतुर्थ विधान सभा के दशम् सत्र का तृतीय दिवस [संख्या 3

बुधवार,

दिनांक 17 मार्च, 1971

विधान सभा की बैठक म०पू० 11.01 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री निरंजन नाथ आचार्य, अध्यक्ष, पदासीन)

तारांकित प्रश्नोत्तर

[जन-स्वास्थ्य, स्वायत्त शासन, उद्योग, राजस्व, सार्वजनिक निर्माण विभाग]

श्री अध्यक्ष : प्रश्न।

श्री फतेहसिंह।

अजमेर जिले में सड़कों पर कार्य

12. **श्री फतेहसिंह** (ब्यावर) : क्या सार्वजनिक निर्माण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) पिछले दुर्भिक्ष (1969-70) के समय अजमेर जिले में सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा कौन कौन सी सड़कों का कार्य हाथ में लिया गया था ?

(2) इन प्रत्येक पर कितना धन खर्च हुआ ?

(3) कौन कौन सी सड़कों का कार्य अधूरा रह गया है और उन्हें पूरा कराने की सरकार की क्या योजना है ?

उप मंत्री, सार्वजनिक निर्माण (श्री माधोसिंह) : (1) सूची (अ) प्रस्तुत है।

(2) सूची (अ) में खर्चा अंकित है।

(3) सूची (ब) में वितरण अंकित है। भारत सरकार द्वारा रूरल वर्क्स प्रोग्राम के अन्तर्गत अत्याधिक अकाल ग्रस्त 10 जिलों में कार्य कराने की स्वीकृति दी है जिसमें अजमेर जिला शामिल नहीं है।

(सूची विस्तृत होने के कारण विधान सभा पुस्तकालय में रखी गई)

एक माननीय सदस्य : साफ बोलो साहब।

श्री अध्यक्ष : बहुत साफ है।

श्री विजयसिंह : क्या बोल गये ?

Page No 2

श्री अध्यक्ष : सूची सदन की मेज पर रख दी गई है, प्रस्तुत है, अंकित है।

श्री फतेहसिंह : जो सूची अजमेर जिले के सम्बन्ध में दी गई है और उसमें यह कहा है सूची (अ) में कि फलां फलां कार्यों को छोड़कर शेष कार्य अधूरे पड़े हैं, मैं पूछना चाहता हूं कि यह जो सूची उपलब्ध कराई है उसमें क्रम संख्या 17, 20, 21, 22 और 34, क्या ये पूरे हो गये या अधूरे पड़े हैं ?

श्री माधोसिंह : मैंने निवेदन किया कि 20 तो पूरा हो गया, 22 पूरा हो गया, 24 पूरा हो गया।

श्री फतेहसिंह : मैं इसको चैलेंज करता हूं। ये कार्य पूरे नहीं हुए हैं और आपने भी कहा है कि इनको छोड़कर शेष कार्य अधूरे हैं। आपने बताया है कि 17 पूरा हो गया, लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि 17 नम्बर पर जो देवाता लेतियाना रोड है उसके तीन फर्लांग बिल्कुल अधूरे पड़े हैं, वहां पुलिया बनने का काम भी अधूरा पड़ा है, संख्या बीस पर देवाता, सूर्या संगरीयावास रोड, यह भी अधूरा पड़ा है, उसमें पुल वगैर अधूरे पड़े हैं, यहां तक कि बैल गाड़ियों का चलना भी मुश्किल हो गया है। इसी तरह से 21नं० पर ब्यावर, कोटरा, काबरा रोड पर जहां कार्पेटिंग होने का था, वहां चार मील का टुकड़ा बिल्कुल अधूरा पड़ा है। इसी तरह से 34 नंबर पर बाराखेड़ा भीम रोड है वहां पर भी पुलियाओं का काम अधूरा पड़ा है। इसी प्रकार 44 नंबर पर जेसाखेड़ा से बाराखेड़ा रोड पर तीन चार मील में कार्पेटिंग का काम बिल्कुल अधूरा पड़ा है। यह जो सूचना आपके विभाग ने उपलब्ध कराई है वह बिल्कुल गलत है।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी (छबड़ा) : मंत्री ही गलत हैं।

श्री माधोसिंह : जी हां।

श्री जयनारायण सालोदिया (निवाई): इतना स्पष्ट मंत्री कोई नहीं होगा।

श्री माधोसिंह : मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूं कि पुलियाओं की सैंक्शन अलग होती है। जो जो काम मंजूर हुए हैं वे सैंक्शन के अनुसार कम्पलीट किये गये हैं। 833मील का काम कम्पलीट किया गया है, जिसमें 100 मील तो कोलतार रोड है, 41 मील मेटल रोड है और 692 मील ग्रेवल किया गया है। जितनी सैंक्शन थी उसके अनुसार काम कम्पलीट किया गया है।

श्री फतेहसिंह : क्या यह सही है कि रावत कमेटी की सिफारिश पर जेसाखेड़ा बाराखेड़ा रोड पर कार्पेटिंग के लिये पूरी धनराशि स्वीकार हुई थी और उसके लिये कोल तार वगैरा सब खरीद लिया गया था।

श्री माधोसिंह : मैं इसकी जानकारी करवा लूंगा।

श्री फतेहसिंह : मैं इसकी जानकारी दे देता हूं। इसके लिये सब सामान खरीद लिया गया है और सामान अभी भी वहां पड़ा हुआ है, डामर आदि सब वहीं पर पड़ा हुआ है। क्या आप उस काम को पूरा करने की योजना बनायेंगे ?

श्री माधोसिंह : मैं निवेदन करूं कि अकाल राहत कार्यों के अन्दर जो अधूरे काम रह गये हैं उनके बारे में सरकार विचार कर रही कि व्यय किया जाये। सरकार के विचाराधीन

(श्री माधोसिंह)

है कि अधूरे काम कैसे पूरे किये जायें और धनराशि उपलब्ध होगी, विचार करके जैसे काम पूरे किये जायेंगे।

श्री फतेहसिंह : मेरे कहने का मतलब है कि जैसाखेड़ा से बड़ाखेड़ा और ब्यावर कोटरा काबरा रोड पर जहां कि सामान खरीद कर पड़ा हुआ है, डामर पड़ा हुआ है, वह सब बेकार हो रहा है, उसको काम में लेने के लिये योजना बनाने के लिये क्या कर रहे हैं आप ?

श्री माधोसिंह : सरकार के विचाराधीन है और जो माल पड़ा हुआ है । उसको खराब नहीं होने देंगे।

श्री फतेहसिंह : कब तक ? मैं आपको निमन्त्रण देता हूं कि आप वहां आकर देखें।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट ।

श्री फतेहसिंह : यह जो उत्तर दिया गया है कि इन को छोड़कर शेष कार्य अधूरे हैं, मैं कहना चाहता हूं कि ये कार्य भी अधूरे पड़े हैं । आपने यह गलत इनफोर्मेशन कैसे दे दीं ? ब्यावर कोटरा, काबरा रोड पर तीन फर्लांग का टुकड़ा बिलकुल अधूरा पड़ा है और आपने साढे तीन, चार लाख रुपये का जो खर्चा किया है वह बेकार गया। इसी तरह से सिरोही रोड पर भी यह हुआ है और आप कहते हैं कि कार्य पूरे हो गये। यह गलत सूचना है और जिन अधिकारियों ने आपको यह गलत सूचना दी है उनके खिलाफ आपको कार्यवाही करनी चाहिये । काम पूरा नहीं हुआ है।

श्री अध्यक्ष : काम पूरा होने से क्या अभिप्राय है ? क्या पुलियाओं का काम भी इसमें आता है ?

श्री माधोसिंह : पुलियाओं के लिये अलग सैंक्शन होती है। अगर मामूलीतौर का कोई काम होता है तो पूरा कर दिया जाता है, लेकिन वैसे पुलियाओं के लिये अलग सैंक्शन होती है और जहां अलग सैंक्शन नहीं है वह काम नहीं किया जा सकता। अकाल राहत कार्य समाप्त होने पर जो काम अधूरे रह गये हैं उनको पूरा करने के लिये सरकार विचार कर रही है।

श्री अध्यक्ष : वह आपने फर्मा दिया।

श्रीमती मदनकौर ।

राजस्थान मनी लेन्डर्स के अधीन रजिस्ट्रेशन

13. श्रीमती मदनकौर (पचपदरा) : क्या राजस्व मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(1) राजस्थान मनी लेन्डर्स एक्ट कब से प्रभाव में आया ?

(2) इस एक्ट के प्रभाव में आने से आज दिन तक कितने मनी लेन्डर्स का रजिस्ट्रेशन किया गया ?

(3) इस एक्ट के अन्तर्गत वार्षिक कितने रुपयों का धन्धा करने वालों को रजिस्ट्रेशन से छूट है ?

(4) क्या यह एक्ट इस छूट अथवा अन्य कारणों से अप्रभावशील नहीं है ?

(5) क्या राज्य सरकार प्रत्येक मनी लेन्डर का इस एक्ट के अन्तर्गत रजिस्ट्रेशन

(श्रीमती मदनकौर)

अनिवार्य करने का विचार रखती है ताकि मनी लेन्डर्स एक्ट सही मायने में प्रभावशील बन सके ।

राजस्व मंत्री (श्री रामकिशोर व्यास):

(1) दिनांक 1. 10. 65 से प्रभाव में आया ।

(2) दिसम्बर 1970 तक 14,092 साहूकारों का रजिस्ट्रेशन हुआ ।

(3) इस समय रजिस्ट्रेशन के लिये किसी को भी छूट नहीं है ।

(4) जी नहीं, एक्ट प्रभाव में है ।

(5) अधिनियम के तहत प्रत्येक साहूकार (मनी लेन्डर) को लाइसेन्स लेना अनिवार्य है ।

श्रीमती मदनकौर : अध्यक्ष महोदय, क्या मंत्री महोदय यह मानते हैं कि राजस्थान के सम्पूर्ण प्रदेश में केवल 14,092 लोग ही मनीलेन्डिंग का धंधा करते हैं ?

श्री रामकिशोर व्यास : मैं यह नहीं मानता हूं ।

श्रीमती मदनकौर : तो फिर जब रजिस्ट्रेशन हुआ ही नहीं, तो ये कैसा धंधा करते हैं ? यह क्या चीज है ?

श्री रामकिशोर व्यास : आपने रजिस्ट्रेशन की फिगर्स मांगी थी, वे दे दी । बाकी तो और जो जानकारी की है, उसमें कार्यवाही करेंगे ।

श्रीमती मदनकौर : जिन लोगों ने रजिस्ट्रेशन करवा रखा है, वे क्या कानून की पालना करते हैं ? प्रोविजन्स के अनुसार जो पास बुक उन्हें डेटर्स को देनी है और जो रजिस्टर्स रजिस्ट्रार और असिस्टेंट रजिस्ट्रार के सामने पेश करने होते हैं, वे करते हैं ?

श्री राम किशोर व्यास : ये तो करने ही चाहिये ।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी (छबड़ा) : मनी लेन्डर्स ऐक्ट की पालना में कुछ दिक्कतें आती हैं, जब असिस्टेंट रजिस्ट्रार के सामने मनी लेंडर्स जाते हैं, तो उनके सामने कुछ दिक्कतें आती हैं ।

श्री रामकिशोर व्यास : आप जो दिक्कतें बतायेंगे, उनको दूर करने की कोशिश करेंगे ।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : मैं पूछना चाहता हूं कि इस एक्ट का कोई उपयोग भी है या नहीं ? अगर इसका कोई उपयोग नहीं, तो इसे चालू रखने से क्या फायदा ?

श्री रामकिशोर व्यास : इसका उपयोग है अभी तो सदन ने इसको पारित किया है ।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : जहां तक मनी लेन्डर्स एक्ट के अन्तर्गत ब्याज के दर का प्रश्न है कि नौ या बारह प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिये, क्या वह दर आज सामान्य लोगों के लिये ठीक है ?

श्री अध्यक्ष : अलग से प्रश्न ।

आर्डर प्लीज ।

श्रीमती मदनकौर : एक्ट के प्रभाव में आने के 5 वर्ष पहले केवल 14 हजार साहूकारों का रजिस्ट्रेशन हुआ है। यह अपने आप में सबूत है कि यह एक्ट प्रभावशील नहीं है।

श्री रामकिशोर व्यास : सन् 65 से ही है।

श्री अध्यक्ष : सुनाई नहीं दिया।

श्रीमती मदनकौर : जो साहूकार मनी लेन्डिग का कार्य कर रहे हैं राजस्थान के गांवों में उनकी जानकारी प्राप्त करने के लिये सरकार के पास क्या ऐजेन्सी है ? जो साहूकार राजस्थान के गांवों में मनी लेन्डिग का काम करते हैं उनकी जानकारी प्राप्त करने के लिये सरकार की क्या एजेन्सी है ?

श्री रामकिशोर व्यास : कोआपरेटिव डिपार्टमेन्ट द्वारा ही यह होता है। अब जो नया बिल आ रहा है उसके माफिक काम होगा।

श्रीमती मदनकौर : तो क्या आपका यह मतलब है कि जो मनी लेन्डिग बिल है वह सारा ही बदल जायेगा।

श्री अध्यक्ष : श्री रावतराम।

प्रश्न संख्या 14.

अनुसूचित जाति एवं जन जाति के छात्रावास

14. **श्री रावतराम** (छापर) : क्या समाज कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) गैर सरकारी संस्थाओं एवं व्यक्तियों द्वारा राजस्थान में अनुसूचित जाति एवं जन जाति के कितने छात्रावास कहां कहां चलाये जा रहे हैं ? संस्थाओं एवं व्यक्तियों के नाम सहित सूची सदन की मेज पर रखें।

(2) जिन व्यक्तियों द्वारा छात्रावास चलाये जाते हैं क्या उन्हें मासिक वेतन मिलता है ? यदि हां तो कितना और उनकी शैक्षणिक योग्यता क्या होती है ?

(3) गैर सरकारी छात्रावासों में रहने वाले छात्रों को कितना खर्चा किस तरह की व्यवस्था से मिलता है ? तत्संबंधी क्या सरकार ने कोई नियम बनाये हैं ? यदि हां तो नियमों की प्रतिलिपि सदन की मेज पर रखें।

(4) विभागीय छात्रावास के और गैर सरकारी छात्रावास के मध्य क्या अन्तर है।

समाज कल्याण मंत्री (श्री बिश्वम्भर नाथ जोशी) :

(1) राजस्थान में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन जातियों के लिये समाज कल्याण विभाग के अनुदान से स्वयंसेवी संस्थाओं एवं व्यक्तियों द्वारा संचालित केटेगरी11 छात्रावासों की सूची 'अ' मय स्थानों के सदन की मेज पर रख दी गई है।

(2) स्वयंसेवी संस्थाओं के छात्रावासों को चलाने वालों में से सामान्यत: केवल छात्रावास अधीक्षक को मासिक वेतन मिलता है जो संस्थाओं की जिम्मेदारी है। संस्था की कार्यकारिणी के सभी सदस्य अवैतनिक होते हैं अधीक्षक की योग्यता एवं वेतनमान निर्धारित नहीं है।

(श्री विश्वम्भरनाथ जोशी)

(3) उपरोक्त अनुदानित छात्रावासों में रहने वाले छात्र/छात्राओं के लिये समाज कल्याण विभाग द्वारा स्वीकृत अनुदान के नियमानुसार स्वीकृत व्यय का 90% अथवा निर्धारित सीमा तक जो भी कम हो संस्था को अनुदान दिया जाता है और 10% व्यय संस्था द्वारा जुटाया जाता है। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, अजमेर, उदयपुर शहरों में संचालित अनुदानित छात्रावासों के लिये इन दरों से 10% अतिरिक्त अनुदान स्वीकृत करने की व्यवस्था है। इन नियमों की सूची 'ब' सदन की मेज पर रख दी गई है ?

(4) विभागीय छात्रावासों की तरह ही अनुदानित छात्रावासों के छात्रों को निःशुल्क आवास, भोजन, शिक्षण सुविधा, तेल साबुन, वस्त्र व बिस्तर आदि की सुविधाएं उपलब्ध कराने की व्यवस्था है किन्तु अंतर यह है कि विभागीय छात्रावासों का सम्पूर्ण भार राज्य सरकार वहन करती है जबकि स्वयं-सेवी संस्था द्वारा चलाये जाने वाले छात्रावासों में प्रश्न 3 में वर्णित दरों पर विभाग से मिलने वाली अनुदान की रकम तथा संस्था द्वारा जुटाई जाने वाली 10% चन्दे की योगिक राशि से उपलब्ध होने वाली सुविधायें ही जुटाई जाती हैं।

(सूची विस्तृत होने के कारण विधान सभा पुस्तकालय में रखी गई)

श्री रावतराम : क्या सरकार को यह विश्वास है कि गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा जो 10% सहायता के रूप में देती है वह क्या मिलता है ?

श्री विश्वम्भरनाथ जोशी : ऐसी कई संस्थाएं हैं। कुछ संस्थाएं हैं जो 10% से भी ज्यादा अपने साधनों से चंदे इकट्ठा कर लेती हैं। वे अच्छी व्यवस्था करती हैं अपने साधनों से ही। कुछ ऐसी भी संस्थाएं हैं जो अपने साधनों से 5/7 प्रतिशत ही जुटा पाती हैं और कुछ अनुदान की राशि से ही अपना कार्य चलाया करती है। यह तो मैं नहीं कह सकता हूं कि सभी संस्थाएं 10 प्रतिशत चंदा जुटा लेती हैं।

श्री रावतराम : गैर सरकारी व्यक्तियों के द्वारा जो छात्रावास चलाये जाते हैं वे भी क्या दस प्रतिशत कन्ट्रीब्युट करते हैं ?

श्री विश्वम्भरनाथ जोशी : साधारणतः जो स्वयं सेवी संस्थाएं होती हैं वे रजिस्टर्ड होती हैं, जिनके नियमों में, जिनके उद्देश्य में यह होता है छात्रावासों का चलाना, यह उनका एक उद्देश्य होता है। कुछ जगह कुछ व्यक्ति भी छात्रावास चलाते हैं। आप चाहेंगे तो इन संस्थाओं की भी जानकारी आपको दे दूंगा।

श्री रावतराम : इस तरह की कई संस्थाएं हैं जो गैर सरकारी व्यक्तियों द्वारा संचालित की जा रही हैं।

श्री गामा फत्ता (आबू) : अध्यक्ष महोदय अभी तक वह सहायता नहीं मिली है जो राज्यपाल महोदय ने आबू में घोषित की थी।

श्री विश्वम्भरनाथ जोशी : मैं निश्चित तौर से ऐसे तथ्य आपको बता सकता हूं। जो छात्रावास संस्थाओं को दिये हुए हैं और जो छात्रावास गैर सरकारी व्यक्तियों को दिये हुए हैं।

(श्री विश्वम्भर नाथ जोशी)

वे तृतीय श्रेणी की केटेगरी में आते हैं और उनमें केवल रोशनी की, पानी को और आवास की व्यवस्था है। कुछ बरतन देते हैं ताकि विद्यार्थी स्वयं अपना काम चला सकें। ऐसे छात्रावास जिनको कि 90 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है वे कोई गैर सरकारी व्यक्तियों को नहीं दिया जाता है और वे सारे संस्थाओं को दिये हुए हैं।

श्री गामा फत्ता : 15,500 अभी तक नहीं मिले हैं।

श्री विश्वम्भरनाथ जोशी : जल्दी ही भिजवाने की व्यवस्था करेंगे।

श्री रावतराम : गैर सरकारी व्यक्तियों को आप छात्रावासों के लिये अनुदान देते हैं वह किस आधार पर दिया जाता है और उनको मासिक वेतन मिलता है। यदि आप मासिक वेतन नहीं देते हैं तो उनका इन्ट्रेस्ट क्या होता है ?

श्री विशम्भरनाथ जोशी : जैसा कि निवेदन किया है तीन प्रकार के छात्रावास राजस्थान में हैं। फर्स्ट केटेगरी में जो छात्रावास आते हैं वे सीधे ही विभाग द्वारा चलाये जाते हैं, अधिकारी द्वारा चलाये जाते हैं और राजकीय दौरों के अनुसार तनख्वाह मिलती है। द्वितीय श्रेणी के छात्रावास रजिस्टर्ड संस्थाओं के द्वारा चलाये जाते हैं। ये सार्वजनिक संस्थाएं होती हैं और वे अपने नियमानुसार छात्रावास चलाने वालों को वेतन देती है। यह उनकी जिम्मेदारी होती है। इसके बाद तृतीय श्रेणी के छात्रावास हैं जो गैर सरकारी व्यक्तियों के द्वारा चलाये जाते हैं जिनमें केवल आवास, रोशनी और पानी की व्यवस्था होती है। ये ऐसे छात्रावास होते हैं जो जिम्मेदार व्यक्तियों को दिये हुए हैं। जहां किसी हैडमास्टर ने कहा तो उसको दे दिया। इसके अलावा और कोई छात्रावास नहीं है।

श्री रावतराम : इन्हीं तृतीय श्रेणी के छात्रावास में गडबड़ होती हैं।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट। श्री लाभचन्द वैद।

प्रश्न संख्या 15

नगरपालिका सुजानगढ़ की सीमा

श्री लाभचन्द वैद (सुजानगढ़) : क्या स्वायत्त शासन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि चूरू जिला स्थित सुजानगढ़ नगर में दुलिया नाम की एक बस्ती है ? अगर हां तो क्या सरकार उस बस्ती को नगरपालिका सुजानगढ़ की हद में नहीं मानती है ? अगर हां तो क्यों ?

(2) क्या यह सही है कि पृथ्वीराज बनाम स्टेट वाली रिट याचिका में हाईकोर्ट ने अपने फैसले में दुलिया को सुजानगढ़ नगरपालिका की हद में माना है।

(3) क्या यह सही है कि बीकानेर स्टेट के जमाने में जो सुजानगढ़ नगरपालिका की सीमा निश्चित की गई थी उसमें दुलिया को सुजानगढ़ नगरपालिका की सीमा के अन्दर माना है। अगर हां तो सरकार ने किस आधार पर दुलिया को पंचायत समिति क्षेत्र बना रखा है।

उपमंत्री, (श्री खेतसिंह) : (1) जी नहीं। नहीं मानती हैं क्योंकि यह पंचायत क्षेत्र है।

Page No 8

(श्री खेतसिंह)

उत्तर

(2) जी नहीं ।

(3) उक्त विज्ञप्ति में सुजानगढ़ नगरपालिका के अगून (पूर्व) की सीमा पर रकबा रोही सुजानगढ़ व आबादी मौजा दुलिया व रकबा दुलिया बताया गया है । उस समय भी यह ग्राम नगरपालिका सीमा में नहीं था ।

श्री लाभचन्द बैद : क्या यह सही है कि दुलिया बस्ती सुजानगढ़ के पास है ।

श्री खेतसिंह : जी हां यह बिल्कुल सही है ।

श्री लाभचन्द बैद : क्या सरकार यह उचित नहीं समझती है कि दुलिया गांव सुजानगढ़ नगर का है और आगे से उसे नगरपालिका क्षेत्र में परिणित कर दिया जाये ।

श्री खेतसिंह : आज की जो परिस्थिति थी वह मैंने आपको उत्तर में बता दी है । वह अलग से पंचायत क्षेत्र में है । अब अगर नगरपालिका सीमा में आना चाहता है तो इस प्रकार का कोई प्रस्ताव हमारे पास में नहीं है ।

श्री देवीदत्त गाड़िया (बारां) : राशन कार्डों के द्वारा उसे राशन सुजानगढ़ कस्बे से मिलता है ।

श्री खेतसिंह : इसकी मुझे जानकारी नहीं है ।

श्री देवीदत्त गाड़िया : इससे संबंधित प्रश्न है ।

श्री अध्यक्ष : अलग से प्रश्न है । नेक्स्ट । श्री सुलानिया ।

प्रश्न कर्ता ।

श्री लाभचन्द बैद : क्या यह आपके ध्यान में है कि यह नगरपालिका की सीमा के पास ही बसा हुआ है और वहां पर नगरपालिका के टैक्स की चोरी की जाती है । तो क्या आप यह उचित नहीं मानते हैं कि उसे नगरपालिका के क्षेत्र में सम्मिलित किया जाये ।

श्री खेतसिंह : पहले ही जवाब दिया है । यह हमारे हाथ की बात नहीं है । नगरपालिका के सारे सदस्य, दुलिया बस्ती की पंचायत के लोग लिखकर भेजें कि हम सुजानगढ़ बस्ती में सम्मिलित होना चाहते हैं ।

श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ़) : क्या यह सही है कि राजस्थान सरकार की यह नीति है कि ग्राम या कोई बस्ती जब मांग करती है तभी उसको किसी में विलीन किया जाता है या राज्य सरकार आवश्यक समझती है कि उपयोगिता के हिसाब से तभी उसको पंचायत क्षेत्र या नगरपालिका क्षेत्र में सम्मिलित किया जाता है । क्या नीति है ?

श्री खेतसिंह : दोनों ही नीतियां है ।

श्री दौलतराम सारण : दोनों ही नीतियां नहीं हो सकती हैं ।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट श्री सुलानिया ।

श्री लाभचन्द : जब दोनों ही नीतियां हैं तो टैक्स की चोरी होती है । इस टैक्स की चोरी को रोकने की नीयत से सरकार इस सम्बन्ध में कार्यवाही करना आवश्यक नहीं समझती है ।

श्री खेतसिंह : सरकार की चोरी नहीं होती है, म्युनिसिपल बोर्ड के टैक्स की चोरी होती है।

श्री देवीदत्त गाड़िया : कितनी लापरवाही से कह रहे हैं। बोर्ड की चोरी हो रही है और गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। फिर किस तरह से रोकथाम लगे ?

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज। नेक्स्ट। श्री उद्योग मंत्री जी।

श्री दौलतराम सारण : अध्यक्ष महोदय एक आपत्ति की बात है। माननीय मंत्री जी ने कहा सरकार के टैक्स की तो चोरी होती नहीं है, नगरपालिका की चोरी होती है तो क्या नगरपालिका की चोरी का नियंत्रण करना राज्य सरकार का कर्तव्य नहीं है।

श्री खेतसिंह : मैंने यह नहीं कहा है।

प्रश्न सं० 16

श्री अध्यक्ष : श्री सुलानिया।

(अनुपस्थित, कृपया आगे देखिये)

श्री हंसराज आर्य।

हनुमानगढ़ जं. पर तस्करी की गिरफ्तारी

17. श्री हंसराज आर्य (भादरा) : क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि दिसम्बर सन् 70 के आखिरी दिनों में हनुमानगढ़ जं० पर एक पाकिस्तानी तस्कर को चरस सहित गिरफ्तार किया गया था ?

(2) यदि हां, तो वह तस्कर कौन था, कहां का रहने वाला था तथा उसके पास में कुल कितनी चरस थी और वह चरस कहां से किस रास्ते से लाया था और कहां पर ले जा रहा था ? चरस कितनी कीमत की थी ?

(3) तस्करी को पकड़ने वाला पुलिस का कौन अधिकारी था ?

(4) क्या यह सही है कि गंगानगर जिले में तस्करियों का कोई सक्रिय गिरोह है और उसका पाकिस्तान के साथ में लगाव है ?

राज्यमंत्री, गृह (श्री हीरालाल देवपुरा):
(1) जी नहीं, माह दिसम्बर, 70 में ऐसी कोई घटना नहीं हुई बल्कि माह नवम्बर, 70 में दो पाकिस्तानी श्री फैजमोहम्मद और सरजल्लाम नामी व्यक्ति हनुमानगढ़ रेल्वे स्टेशन पर मय 9 किलो 400 ग्राम चरस के गिरफ्तार किये गये थे।

(2) गिरफ्तार किये गये तस्करों में से एक का नाम फैज मोहम्मद पुत्र श्री मोहम्मद पुत्र श्री मोहम्मद मोसनखान मुसलमान, साकिन काठ छोगा सिंह वाली ढाणी थाना डूंगा और दूसरा सरजल्लाम मस्तकीम उर्फ कुल्लया पुत्र अहमद बक्स फकीर साकिन, मण्डी हरनूनाबाद जिला बहावलनगर पाकिस्तान के रहने वाले थे। प्रत्येक तस्कर चरस पाकिस्तान से लाये थे। चरस की कीमत करीब 1500)रु० मानी गई है।

(3) तस्करों को मय चरस के रेलवे पुलिस थाना हनुमानगढ़ जं० के सर्व श्री भूपसिंह एस० आई० देवीराम, एच० सी०

(श्री हीरालाल देवपुरा)

उत्तर

रामजीलाल कानिस्टेबिल तथा जिला गंगानगर के. सी. आई. डी. विभाग के अमीचन्द कानिस्टेबल ने गिरफ्तार किया था।

(4) जी नहीं, इस बात का ठोस प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ है।

श्री हंसराज आर्य : क्या यह सही है कि तस्करी काफी समय से सक्रिय है ?

श्री हीरालाल देवपुरा : मैंने निवेदन किया कोई प्रमाण नहीं है।

श्री हंसराज आर्य : क्या ये सक्रिय गिरोह के रूप में कार्य कर रहे हैं ?

श्री हीरालाल देवपुरा : बताया कि इस बारे में कोई प्रमाण नहीं है।

श्री हंसराज आर्य : यह तस्करी किस रास्ते से आये और कब कहां पकड़े गये ?

श्री हीरालाल देवपुरा : यह प्रश्न के उत्तर में बता दिया गया है।

श्री हंसराज आर्य : मेरा मतलब है, सड़क के रास्ते से आये, मोटर से आये, जेल से आये आखिर कहां से आये ?

श्री हीरालाल देवपुरा : मैंने कहा तफतीश जारी है, तफतीश होने के बाद ही मालूम हो सकेगा।

श्री रोशनलाल (सलूम्बर): यह तफतीश कब तक पूरी हो जायगी ?

श्री हंसराज आर्य : चार महीने में तफतीश का पता नहीं लगा। यह बात तो पहले ही मालूम हो जानी चाहिये थी।

श्री हीरालाल देवपुरा : केस रजिस्टर किया गया है। उनके पासपोर्ट का, आने-जाने का सबका पता तफतीश होने के बाद ही मालूम पड़ेगा। अभी तफतीश चालू है।

श्री हंसराज आर्य : चार महीने में पता नहीं लगा।

श्री अध्यक्ष : मन्त्री महोदय ने कहा तफतीश जारी है।

श्री रामचन्द्र आर्य (नोहर) : क्या इस तफतीश में वहां के सत्ताधारी नेताओं का मुख्य हाथ है।

श्री हीरालाल देवपुरा : यह बिल्कुल असत्य है।

श्री रामचन्द्र आर्य : अध्यक्ष महोदय, मैं इसका उत्तर चाहता हूं। यह कह दें जी नहीं।

एक माननीय सदस्य : कह तो दिया।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट।

झूंठे मस्टर रोल के मामले

18. **श्री हरलालसिंह खर्रा (श्रीमाधोपुर) :** क्या सार्वजनिक निर्माण मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि सीकर जिले में अकाल राहत कार्यों में ए. इ. एन. सीकर से झूंठा मस्टर रोल पकड़ा गया था ? यदि हां, तो कहां का था व कितने मजदूरों का व कब व किसके द्वारा पकड़ा गया ?

(2) क्या अधिशासी अभियन्ता, झुंझुनूं द्वारा इस मामले को सही पाने पर जांच के

(श्री हरलालसिंह खर्रा)

लिये पुलिस को सौंप दिया गया था? यदि हां, तो कब व उसमें अब तक क्या कार्यवाही हुई ?

उप मन्त्री, सार्वजनिक (श्री माधोसिंह): (1) सहायक अभियन्ता सीकर के विरुद्ध झूंठे मस्टर रोल का मामला नहीं पकड़ा गया।

(2) प्रश्न नहीं उठता।

(विराम)

श्री अध्यक्ष : नो सप्लीमेन्टरी।

प्रश्न संख्या 19

श्री नथमल चौहला।

(अनुपस्थित, कृपया आगे देखिये)

श्री मनोहरसिंह।

श्री हरलालसिंह : क्या अकाल राहत कार्यों के बारे में कोई एफ. आई. आर. ही दर्ज नहीं हुई ?

श्री अध्यक्ष : श्री मनोहरसिंह मेहता।

श्री देवीदत्त गाड़िया : सप्लीमेन्टरी क्वेश्चन है साहब।

श्री हरलालसिंह खर्रा : क्या इस तरह की कोई एफ. आई. आर. दर्ज नहीं हुई ?

श्री माधोसिंह : इस तरह की कोई शिकायत नहीं है।

श्री हरलालसिंह खर्राः अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करूंगा जो सलाहकार समिति की बैठक हुई थी उसमें यह डिस्कस हुआ था। एस. डी. ओ. फतेहपुर ने कहा था मस्टर रोल एक्स. इ. एन के पास है, एक्स.इ.एन. के पास गये तो बताया गया ए. इ. एन. के पास है, ए. इ. एन. के पास गये तो बताया कि किसी और अधिकारी के पास है और उन्होंने कहा था कि एन्क्वायरी करवा दूंगा।

श्री देवीदत्त गाड़िया : क्या किसी कर्मचारी के खिलाफ इन्क्वायरी हुई है क्या ?

श्री अध्यक्ष : अलग से प्रश्न है।

श्री मनोहरसिंह : सार्वजनिक निर्माण मन्त्री जी।

भीलवाड़ा बिजोलिया सड़क

20. श्री मनोहरसिंह मेहता (मांडलगढ़) : क्या सार्वजनिक निर्माण मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि भीलवाड़ा से बिजोलिया तक केवल पांच माइल का टुकड़ा ऐसा है जहां डामर नहीं बिछ रहा है ?

(2) क्या यह सही है कि वह सड़क ऐसी है जहाँ हर पांच मिनिट या इससे भी कम समय में एक गाड़ी आ जाती है ?

(3) क्या यह सही है कि यह सड़क का टुकड़ा अत्यन्त खराब है ? यदि हां, तो इसे कब तक सुधारा जावेगा ?

उप मंत्री, सार्वजनिक (श्री माधोसिंह): चार मील में डामर नहीं हुआ है।

(2) इस विभाग को जानकारी नहीं है।

(श्री माधोसिंह)

उत्तर.

जी हां, कार्य प्रगति पर है।

श्री मनोहर सिंह मेहता : यह कब तक पूरा हो जायगा ?

श्री माधोसिंह : मई महीने तक पूरा हो जायेगा।

श्री मनोहरसिंह मेहता : धन्यवाद।

श्री रामचन्द्र आर्य (नोहर) : अध्यक्ष महोदय, इस तरह के कई आश्वासन दिये गये हैं। आज तक एक काम भी पूरा नहीं हुआ है। इन्होंने अनेक बार आश्वासन दिये हैं लेकिन एक बार भी इनका आश्वासन पूरा नहीं हुआ है। ऐसे झूंठे आश्वासन देने से क्या फायदा ?

श्री नथमल चोहला (लक्ष्मणगढ़) : अध्यक्ष महोदय, प्रश्न सं० 19 लिया जाय।

श्री अध्यक्ष : बाद में ले लिया जायगा।

श्री विजयसिंह : दल बदलुओं को बाद में चान्स दिया जायेगा।

श्री अध्यक्ष : श्री फूलचन्द बाफना।

ग्राम वेनपुरा की कृषि भूमि

21. **श्री फूलचन्द बाफना** (सुमेरपुरा): क्या राजस्व मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :-

(1) क्या यह सही है कि ग्राम वेनपुरा (तहसील बाली जिला पाली) में कुल कृषि भूमि प्राय: 5 हजार बीघा है जिसमें से प्राय: 3 हजार बीघा बिना काश्त के पड़त पड़ी हुई है ?

(2) उपर्युक्त इतनी भूमि पड़ी रहने के कारणों का क्या कभी कोई विश्लेषण सरकार द्वारा करवाया गया है ? यदि हां, तो क्या नतीजा आया और भूमि को कृषि योग्य बनाने हेतु क्या कार्यवाही सरकार ने की ?

(3) क्या यह सही है कि वेनपुरा के कुछ लोगों ने परेशान होकर कृषि भूमि के त्याग-पत्र भी दे दिये है ? क्या यह सही है कि निम्न लोगों की निम्न भूमि, कुए व रहट सहित थी फिर भी इन्होंने त्याग पत्र दे दिये हैं :—

(1) श्री केना पत्ता माना आत्मज श्री नवाजी 60 बीघा कुए एवं रहट सहित।

(2) श्री केसा आत्मज श्री कसाजी घांची 174 बीघा कुए एवं रहट सहित।

(3) श्री जगदाना, धना रबाडी 125 बीघा कुए एवं रहट सहित।

(4) श्री नाथा आत्मज श्री जगा 48 बीघा कुए एवं रहट सहित।

(5) क्या यह सही है कि बाली तहसील के अन्य गांवों से वेनपुरा की कृषि-भूमि अपेक्षाकृत रद्दी है परन्तु वेनपुरा की कृषि का लगान 12 प्रतिशत अधिक है अन्य गांवों (बाली तहसील के) से ?

(6) (1) वेनपुरा की रद्दी कृषि भूमि को कृषि योग्य बनाने का सरकार ने क्या सोचा है ?

(2) जब तक वेनपुरा की रद्दी कृषि भूमि को योग्य नहीं बनाया जावे तब तक सरकार क्या वेनपुरा की ऐसी भूमि का

(श्री फूलचन्द बाफना)

लगान माफ नहीं कर सकती ? क्या लगान रुपये 5,25 प्रति बीघा बहुत अधिक व वेनपुरा की भूमि के लिये असह्य नहीं है ?

राजस्व मन्त्री (श्री रामकिशोर व्यास): (1) ग्राम वेनपुरा में कुल काश्त की भूमि 2,148 एकड़ है उसमें से 278 एकड़ भूमि पर काश्त होती है और इस तरह 1,87C एकड़ भूमि खाली पड़ी रहती है ।

(2) उपर्युक्त भूमि पड़ी रहने के कारणों की जाँच परगना अधिकारी पाली से करवाई गई और लगान में कमी करने का मामला सरकार के विचाराधीन है ।

(3) (1) यह सही है कि ग्राम वेनपुरा के निवासियों ने भूमि का त्याग-पत्र दे दिया है । श्री केना, फत्ता, माना पुत्र श्री नवाजी (2) केसा पुत्र श्री कसाजी (3) श्री जग्गा दाना, धन्ना रेवारी (4) नाथा पुत्र जग्गा का नाम राजस्व रेकार्ड में नहीं है ।

(4) यह सही है कि बाली तहसील के ग्राम वेनपुरा की जमीन अन्य गांवों की अपेक्षा कम उपजाऊ है और लगान 12 प्रतिशत अधिक है ।

(5) 1. इस मामले पर विचार किया जावेगा ।

2. लगान में कमी करने का मामला राज्य सरकार के विचाराधीन है ।

श्री फूलचन्द बाफना : अध्यक्ष महोदय, जब सेटिलमेंट हुआ था तब गांव वालों ने जिनके पास जमीनें थी वह दे नहीं पाये थे और उसका नतीजा ये भुगत रहे हैं। जमीन कम उपजाऊ होते हुए भी लगान ज्यादा है और इतनी खराब जमीन है उदाहरण दिया गया है उनके रहट, कुआ आदि साधन होते हुए भी जमीन छोड़ रहे हैं । इस कमी के युग में अगर जमीन छोड़ते हैं कितनी कठिनाई होगी । आपने आश्वासन दिया है इसके लिए तो धन्यवाद लेकिन अभी तक इस ओर ध्यान क्यों नहीं किया गया, इसका खेद है ।

श्री रामकिशोर व्यास : अभी एन्क्वायरी होकर आ गई है ।

श्री फूलचन्द बाफना : क्या इसको उपजाऊ बनाने का उपाय किया जा सकता है ?

श्री रामकिशोर व्यास : यह तो साईंटिस्टों के देखने की बात है–सेलाइन भूमि है ।

श्री फूलचन्द बाफना : आप इसके लिये कोई समय बता सकते हैं कब तक पूरी हो जायगी ।

श्री रामकिशोर व्यास : जल्दी से जल्दी ।

श्री फूलचन्द बाफना : आप समय बता दीजिये दो साल, तीन साल, चार साल पांच साल ताकि हम उस समय तक इन्तजार करें ।

श्री रामकिशोर व्यास : आप अगले सत्र में सवाल पूछ लेना ।

श्री फूलचन्द बाफना : वह तो हम पूछते ही रहेंगे । आप समय भी नहीं बता सकते हैं ।

श्री रामकिशोर व्यास : हमने सेटिलमेंट को भेजा है ।

प्रश्न सं 22

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट । श्री लादूराम सुलानियां ।

(अनुपस्थित, कृपया आगे देखिये)

श्री हंसराज आर्य ।

कैदियों को अनिवार्य शिक्षा ।

• 23. **श्री हंसराज आर्य** (मादरा) : क्या कारागृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या राजस्थान सरकार ने कैदियों के लिए अनिवार्य शिक्षा लागू कर दी है ?

(2) यदि नहीं, तो क्यों नहीं ?

(3) क्या यह सही है कि पंजाब और हरियाणा सरकारों ने ऐसी आज्ञा जारी कर दी है कि जेल के कैदी को अनिवार्यरूप से पढ़ना होगा ।

(4) क्या राजस्थान में कुछ कैदियों को साधारणतौर पर साक्षर किया जाता है ?

(5) कैद में आने के बाद 68 से लेकर 70 तक कितने कैदियों को साक्षर किया गया है ?

उप मंत्री कारागृह (श्री खेतसिंह) : (1) अनिवार्य शिक्षा लागू नहीं की है मगर जिन बन्दियों की रुचि शिक्षा ग्रहण करने में रही है उन्हें पूरा प्रोत्साहन दिया गया है ।

(2) सरकार का पिछले वर्षों का यह तजुर्बा रहा है कि जो बन्दी बिलकुल अशिक्षित है और आयु में काफी प्रौढ़ हो गये हैं, उनकी रुचि शिक्षा ग्रहण करने की नहीं रही है । लिहाजा उन्हें अन्य कार्यों में लगाकर निवार, दरी आदि बढ़ई का कार्य आदि सीखने का पूरा मौका दिया जाता रहा है । जो आयु में नाबालिग है उन्हें शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाने का प्रबन्ध है ।

(3) ऐसी आज्ञा की जानकारी विभाग को नहीं है ।

(4) राजस्थान में कैदियों को साक्षर ही नहीं बनाया जाता है अपितु उन्हें राज्य एवं केन्द्रीय सरकारों में मान्यता प्राप्त राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वृद्धा और बम्बई हिन्दी विद्यापीठ बम्बई की विभिन्न हिन्दी परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए भी प्रोत्साहित कर अध्ययन करवाया जाता है । बाल सुधार गृह उदयपुर के बन्दियों को प्राथमिक शिक्षा दिये जाने की समुचित व्यवस्था की हुई है । जिन बन्दियों की अध्ययन में रुचि हैं उनको राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की एवं राजस्थान विश्व विद्यालय की विभिन्न परीक्षा में स्वयं पाठी और नियमित छात्र के रूप में परीक्षाओं में सम्मिलित होने की भी व्यवस्था है ।

(5) वर्ष 67-68 से 69-70 तक 1006 अशिक्षित बन्दियों को साक्षर बनाया गया । जिसका विवरण निम्न भांति है:–

वर्ष 67-68	364
वर्ष 68-69	206
वर्ष 69-70	436
कुल	1006

श्री हंसराज आर्य : क्या सरकार का यह इरादा है कि जो प्रौढ़ हैं उनको छोड़कर जो आपकी आयु के हैं उनके ऊपर भी लागू किया जायेगा ?

श्री खेतसिंह : मैंने आपके प्रश्न के उत्तर में जैसा निवेदन किया है कि जो ज्यादा प्रौढ़ हो जाते हैं और जिनकी रूचि नहीं होती उनको फिर दूसरे कामों में लगाकर उस प्रकार की शिक्षा दी जाती है कि जिससे वह अपने भविष्य के जीवन में उस काम को करके अपना जीवन निर्वाह कर सकें।

श्री हंसराज आर्य : नौजवानों के ऊपर लागू करते हैं या नहीं ?

श्री खेतसिंह : अभी अभी जैसा मैंने निवेदन किया कि नाबालिग बन्दियों के लिए ही शिक्षा है और जो नौजवान पढ़ना चाहें उसके लिए पूरा प्रोत्साहन दिया जाता है और अब जो पढ़ना नहीं चाहते उनके लिए कोई व्यवस्था नहीं है। हां, इसके ऊपर विचार किया जा सकता है कि जिनकी आयु 30 वर्ष से कम है उनके ऊपर पाबन्द किया जाये।

श्री हंसराज आर्य : हरियाणा और पंजाब में तो इस प्रकार का है और आप कब तक विचार करेंगे ?

श्री अध्यक्ष : जानकारी नहीं है।

श्री खेतसिंह : मुझे तो इसकी जानकारी नहीं है और इसकी हम जानकारी कर रहे हैं कि हरियाणा और पंजाब के अन्दर क्या सभी बन्दियों को चाहे वे 60 वर्ष के हों उनको भी शिक्षा देने का प्रावधान है या किस तरह से किया जाता है। सारी व्यवस्था मालूम करके इस पर भी विचार किया जा सकता है।

श्री हंसराज आर्य : 40 वर्ष से ज्यादा हों उनके ऊपर भी लागू किया जाता है ?

श्री खेतसिंह : जैसा मैंने निवेदन किया कि इसके ऊपर हम भी विचार करेंगे और हम मालूम करेंगे कि उन्होंने क्या बन्दोबस्त किया है और उसका क्या नतीजा निकला है।

श्री फूलचन्द बाफना : इस शिक्षा से मतलब क्या साक्षरता है या कुछ और है ?

श्री विजयसिंह (मकराना) : इस शिक्षा में गुण्डागर्दी का प्रावधान है क्या ?

श्री खेतसिंह : कारागृह में ऐसा प्रावधान नहीं है, बाहर ज्यादा है।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट, श्री लादूराम सुलानिया।

गांधी शताब्दी वर्ष में अलॉट की गई भूमि

24. **श्री लादूराम सुलानिया** (फागी सु०) : क्या राजस्व मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(1) क्या यह सत्य है कि गांधी शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में जयपुर जिले में अनुसूचित जाति, जन जाति व विमुक्त जाति के लोगों को ही 1970 में भूमि अलाट करने की राज्य सरकार द्वारा घोषणा की गई थी ? यदि हां, तो इसके तहत दिनांक 15-2-70 तक कितनी भूमि अलॉट की गई ?

(2) वर्तमान में जयपुर जिले की किस किस तहसील के किस किस ग्राम में कितनी सिवाय चक भूमि बिना अलॉट शुदा राज्य सरकार के कब्जे में मौजूद है तथा उसे कब तक अलॉट की जावेगी ?

(श्री लादूराम सुलानियां)

(3) क्या यह सत्य है कि सिवाय चक भूमि हरिजनों को अलॉट करने के बजाय रिजर्व गोचर भूमि के नाम पर अधिकारियों ने स्टे कर दिया है ? यदि हां, तो क्यों ?

(4) क्या यह सत्य है कि रिजर्व गोचर भूमि को दिनांक 31-3-70 तक अनुसूचित जाति जन जाति व अन्य पिछड़ी हुई जाति के व्यक्तियों को सरकार अलॉट करेगी ?

राजस्व मन्त्री (श्री रामकिशोर व्यास) : (1) जी हां। दिनांक 14-11-70 तक अनुसूचित जाति के 4302 व्यक्तियों को 14423 एकड़ भूमि तथा अनुसूचित जन जाति के 1502 व्यक्तियों को 4796 एकड़ भूमि अलॉट की गई।

(2) जयपुर जिले में 44619 एकड़ भूमि सिवाय चक बिना अलॉट शुदा मौजूद है। इसे शीघ्र अलॉट करने की कार्यवाही की जा रही है। ग्रामवाइज सूचना एकत्र की जा रही है।

(3) रिजर्व गोचर भूमि के नाम से अधिकारियों ने कोई स्टे नहीं किया है।

(4) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता है।

श्री लादूराम सुलानिया : माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय ने बताया कि स्टे नहीं दिया मैं आपको राजस्थान की बात नहीं लेकिन जयपुर जिले के कलेक्टर ने सारे जयपुर जिले में जितने भी बड़े बड़े 100-100 और 150-150 बीघा के टुकड़े हैं गांवों में गोचर के नाम से सारी जगह स्टे हुए हैं, क्या आपने जानकारी की है कि स्टे हुआ है या नहीं ?

श्री रामकिशोर व्यास : कोई इन्डीविजुअल केस बतायें तो जानकारी कर सकते हैं।

श्री लादूराम सुलानिया : जयपुर में दिये है और ऐसी जमीनों पर दिये हैं जो कि हरिजनों को अलॉट होनी चाहिए थी और वह दसियों हजार बीघा जमीन है।

श्री रामकिशोर व्यास : मैंने कब कहा कि अलॉट नहीं हुई है। हां, अगर गोचर है तो वह अलॉट नहीं हो सकती है।

श्री लादूराम सुलानिया : सवाई चक जमीन है।

श्री रामकिशोर व्यास : आपने गोचर के लिये लिखा है तो वह तो अलाट नहीं की जा सकती है लेकिन आप एक दो मामले बतायें जिनमें ऐसा हुआ है तो हम जानकारी कर लेंगे।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी (छबड़ा) : क्या मंत्री महोदय बता सकते हैं कि इस प्रकार की गोचर भूमि को कन्वर्ट करके किन्हीं जगहों पर अलॉट की गयी है ?

श्री रामकिशोर व्यास : कनवर्ट की जा सकती है।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : तो इस जगह क्यों नहीं की जा रही है ?

श्री रामकिशोर व्यास : मैंने कब कहा कि नहीं की जा रही है।

श्री दुर्गालाल बाढदार (हवामहल–जयपुर) : यह किन परिस्थितियों में कन्वर्ट की है और जयपुर जिले में कितनी की है ?

श्री रामकिशोर व्यास : मैंने नहीं कहा है कि कन्वर्ट नहीं की जा सकती है। मैंने कहा है कि कन्वर्ट की जा सकती है।

Page No 17

श्री लादूराम सुलानिया : अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न सीधा सा है। मैंने यह जानकारी चाही है कि इसमें एक वर्ष केवल हरिजनों के बारे में कहा और उस वर्ष में जो बड़े बड़े टुकड़े थे वह सारे के सारे सैकड़ों गांवों में सादा एप्लीकेशनों पर जयपुर जिलाधीश ने डाइरेक्ट स्टे दिया है और आज भी केसेज चल रहे हैं। पार्टियों ने प्रार्थना की है कि यह सवाई चक जमीन है और केवल इस बात का स्टे दे दिया कि एक आदमी ने दरख्वास्त दे दी। मैं आपको उदाहरण के लिये बताऊं कि फागी तहसील में पचास गांवों में कलेक्टर ने स्टे दिया है। आपने जानकारी प्राप्त नहीं की है।

श्री रामकिशोर व्यास : जानकारी नहीं है लेकिन कलेक्टर को अधिकार है कि वह स्टे दे ।

श्री लादूराम सुलानिया : आपने कहा यह दूसरी बात है कि सवाई चक जमीन को अलॉट नहीं की जाये। यह कौन सा कानून है कि हरिजनों को जमीन अलॉट नहीं की जाये।

श्री रामकिशोर व्यास : आप कहते हैं कि सवाई चक है और गांव वाले कहते हैं कि गोचर है। इसकी जानकारी करनी पड़ेगी।

श्री लादूराम सुलानिया : जानकारी तो हुई हुआई है। खतौनी के अन्दर साफ लिखा है। मैं यह निवेदन करूं कि जयपुर जिले में 50 हजार बीघा जमीन जो हरिजनों को अलॉट हो सकती थी वह नहीं हुई और इससे वह वंचित रहे हैं।

श्री रामकिशोर व्यास : जयपुर जिले के अन्दर करीब 19219 एकड़ भूमि अलॉट हुई है।

श्री लादूराम सुलानिया : हुई इसके बारे में तो बाद में पछूंगा लेकिन आप यह कहें कि वह स्टे क्यों हुए ?

श्री रावतराम (छापर): अध्यक्ष महोदय, एक प्रश्न यह है कि सवाई चक जमीन अलॉटमेंट कमेटी ने भूमि अलॉट कर दी तो अलॉटमेंट कमेटी के सामने यह प्रश्न नहीं था कि यह गोचर जमीन नहीं दी जाये ?

श्री रामकिशोर व्यास : दूसरी जमीन की बात कह रहा हूं।

श्री रावतराम : सवाई चक जमीन के नाम से अलॉट की।

श्री रामकिशोर व्यास : इनका कहना यह है कि वह जमीन अलॉट होनी चाहिए थी और इसलिए नहीं हुई कि कलेक्टर ने स्टे कर दिया।

श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर) : अध्यक्ष महोदय, प्रश्नकर्त्ता ने अमुक तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए यह प्रश्न पूछा है। मंत्री महोदय को भी कोई जानकारी होगी क्या वे इस प्रश्न के संबंध में वास्तविक तथ्य हैं उनके ऊपर प्रकाश डालने की कृपा करेंगे ?

श्री रामकिशोर व्यास : अलग अलग केस की जानकारी नहीं दे सकता जब तक कि आप नहीं पूछें कि क्यों स्टे दिया हुआ है।

श्री लक्ष्मणसिंह : आपने सवाई चक जमीन का बताया कि 19 हजार के करीब एकड़ जमीन अलॉट हुई है तो कुल रकबा कितना था ?

श्री रामकिशोर व्यास : अलग अलग जगह की अलग अलग तहसीलों के हैं। अगर आप पूछो तो उत्तर दे दूंगा।

श्री लादूराम सुलानिया : क्या यह सही है कि इस वर्ष में जो अलॉटमेन्ट से भूमि रखकर स्टे कर दिया उससे हटाकर उसी गांव के हरिजनों को अलाट करवायेंगे ?

श्री अध्यक्ष : अलग से प्रश्न है

श्री लादूराम सुलानिया : मैं बहुत नम्रता से निवेदन करूंगा कि इस भूमि से वंचित रखने के लिए इस प्रकार का स्टे लाकर उनको अलॉट नहीं की गयी और दूसरी बात यह है कि 19 हजार बीघा जमीन आपने अलॉट की बताते हैं क्या इस भूमि का सर्वे करायेंगे कि यह देखेंगे कि यह काबिलेकाश्त है या नहीं?

श्री जयनारायण सालोदिया (निवाई): एक प्रश्न है। क्या माननीय मंत्रीजी यह बताने की कृपा करेंगे कि 19 हजार एकड़ जमीन जयपुर डिस्ट्रिक्ट में गांधी शताब्दी वर्ष में एलाट हुई थी तो क्या सब हरिजनों ने उस पर कब्जा पा लिया ?

श्री अध्यक्ष : यह अलग से प्रश्न है।

श्री जयनारायण सलोदिया : अध्यक्ष महोदय, अलग से नहीं। हरिजनों ने साथ बेईमानी हुई है। अध्यक्ष महोदय कुछ जमीन जो काबिल काश्त थी ····

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट, श्री नथमल चोहला।

श्री जयनारायण सालोदिया: ···उसके लिए गांव वालों ने मिलकर कलेक्टर साहब से स्टे करवा लिया और जो खरडा नवी खरडा थी वह हरिजनों के नाम पर एलाट करवाकर आंकड़े बना दिये। वह काबिले काश्त जमीन नहीं है···

श्री अध्यक्ष : 19, राजस्व मंत्रीजी।

श्री जयनारायण सालोदिया : ये आंकड़े झूठे हैं।

श्री लादूराम सुलानिया : अध्यक्ष महोदय, एक छोटा सा प्रश्न रह गया है।

श्री अध्यक्ष : अब प्रश्न बन्द है।

श्री लादूराम सुलानियां : जो जमीन···

श्री अध्यक्ष : 19 श्री नथमल चोहला, राजस्व मंत्रीजी।

कस्बा फतहपुर में भूमि पर नाजायज कब्जे

19. **श्री नथमल चोहला (लक्ष्मणगढ़)** : क्या राजस्व मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(1) सीकर जिला अन्तर्गत कस्बा फतेहपुर के दक्षिण साइड में वन विभाग द्वारा जो भूमि रेवेन्यू विभाग को दी गई है वह कौन सी तारीख को दी गई और क्या इस भूमि पर बहुत से आदमियों ने नाजायज कब्जा कर लिया है ? कितने आदमियों ने नाजायज कब्जा किया है ? उनकी सूची सदन की मेज पर रखने की कृपा करें।

(2) क्या यह सही है कि तहसील द्वारा नाजायज कब्जा करने वालों को हटाने मे ढिलाई बरती जा रही है, यदि हां, तो क्यों ?

(3) क्या यह सही है कि तहसील की ढिलाई के कारण नाजायज कब्जाधारियों की संख्या बढ़कर सैकड़ों हो गई है ?

(श्री नथमल चौहला)

(4) क्या यह सही है कि बहुत से व्यक्तियों के विरुद्ध लैण्ड रैवेन्यू एक्ट की धारा 91 के तहत कार्यवाही चल रही है और बहुत सों के ऊपर नहीं ? यदि हां, तो क्यों ?

राजस्व मंत्री (श्री रामकिशोर व्यास) : (1) कस्बा फतहेपुर के दक्षिण साइड में वन विभाग द्वारा रेवेन्यू विभाग को दिनांक 21-6-69 को भूमि दी गई उस भूमि पर 42 व्यक्तियों ने नाजायज कब्जा किया है। सूची संलग्न है।

(2) यह सही नहीं है।

(3) यह सही नहीं है।

(4) यह सही है कि जिन आदमियों ने नाजायज कब्जा किया है उनके विरुद्ध राजस्थान लैण्ड रेवेन्यू एक्ट की धारा 91 के तहत कार्यवाही चल रही है। पेर यह सही नहीं है कि बहुत सों के ऊपर कार्यवाही नहीं चल रही है।

श्री नथमल चौहला : क्या यह सही है कि 41 आदमियों ने ही नाजायज कब्जा किया है जो सूची में है या 70 आदमियों ने कब्जा किया है ?

श्री रामकिशोर व्यास : जिनका कब्जा नाजायज है उन पर मुकद्दमा चल रहा है।

श्री नथमल चौहला : क्या आप जांच करवाने के आदेश देंगे कि 70 आदमियों का नाजायज कब्जा है।

श्री रामकिशोर व्यास : जी हां।

श्री नथमल चौहला : जांच कब तक करवा ली जायगी ?

श्री रामकिशोर व्यास : आप सूची मुझे दे दें कि किन किन आदमियों का नाजायज कब्जा है।

श्री नथमल चौहला : जिनका जायज कब्जा है उनका भी नाम दिया गया है जिनको कि सरकार ने एलाट किया है उनके भी नाम हैं।

श्री रामकिशोर व्यास : एक केस है।

श्री नथमल चौहला : पंचायतों की जमीन सरकार द्वारा एलॉट की गई है।

श्री रामकिशोर व्यास : नाजायज कब्जा है।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी (छबड़ा) : क्या यह सही है कि माननीय सदस्य ने नाजायज कब्जा किया है दल बदलने के बाद।

श्री नथमल चौहला : दल बदलू तो आपके पास में बैठे हैं।

श्री लादूराम सुलानिया : अध्यक्ष महोदय, मेरे दो प्रश्न ले लिये जायं। अभी तो टाइम बाकी है 12 में।

अनुपस्थित सदस्यों के तारांकित प्रश्नोत्तर

झोटवाड़ा औद्योगिक क्षेत्र

16. श्री लादूराम सुलानिया (फागी): क्या उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) क्या यह सत्य है कि जयपुर तहसील के झोटवाड़ा ग्राम में उद्योग क्षेत्र है ? यदि हां, तो उसमें कुल कितनी फैक्ट्रियां वर्तमान में लगी हुई हैं ?

(2) क्या यह भी सत्य है कि उपरोक्त औद्योगिक क्षेत्र में लगी फैक्ट्रियों को सरकार द्वारा कोई कोटा एलॉट किया जाने की व

(श्री लादूराम सुलानिया)

अन्य सुविधायें दी जाती है ? यदि हां, तो क्या क्या व कहां कहां से व कितनी कितनी मात्रा में ? पूर्ण विवरण सदन की मेज पर रखने की कृपा करें।

(3) क्या उपरोक्त सभी फैक्ट्रियां नियमित रूप से कार्य कर रही हैं ? यदि हां, तो कार्यरत फैक्ट्रियों के नामों की सूची सदन की मेज पर रखने की कृपा करें और जो कार्य नहीं कर रही हैं उनके क्या कारण हैं ? फैक्ट्रियों के नाम सहित सूची सदन की मेज पर रखने की कृपा करें।

(4) क्या झोटवाड़ा औद्योगिक क्षेत्र की सीमा और बढ़ाई जाकर इसमें और उद्योग धन्धे सरकार द्वारा स्थापित किये जाने की योजना है ? यदि हां तो बढ़ाये जाने वाले क्षेत्र की भूमि के खसरा नम्बरान व ग्रामों के नामों सहित सूची सदन की मेज पर रखने की कृपा करें ?

(5) क्या इस औद्योगिक क्षेत्र में परिगणित जाति के व्यक्तियों के लिये नियमानुसार रिजर्व प्लॉट रखे गये हैं ? यदि हां, तो कितने और नहीं तो क्यों ?

(6) उपरोक्त बस्ती में अब तक कुल कितने प्लाट अलॉट किये जा चुके हैं व कितने शेष हैं ? सूची अलॉट-शुदा व्यक्तियों के नाम, पिता का नाम, फर्म का नाम, उद्योग का नाम व खाली प्लाटों के नम्बर सहित सदन की मेज पर रखने की कृपा करें।

उत्तर

(1) जी हां।

कुल 63 फैक्ट्रियां वर्तमान में लगी हुई है।

(2) जी हां, सुविधायें दी जाती है।

सुविधाओं का पूर्ण विवरण सदन की मेज पर रखा दिया गया है।

कुछ कच्चा माल जैसे लोहा, अलोह, धातु, व रसायन आदि भारत सरकार व सरकारी निगमों के माध्यम से प्राप्त होता है। कच्चे माल के आवंटन की मात्रा उद्योग की क्षमता एवं माल की उपलब्धि पर निर्भर करती है।

(3) जी नहीं। सूचना समयाभाव के कारण तत्काल उपलब्ध करना सम्भव नहीं है।

(4) जी नहीं। प्रश्न नहीं उठता।

(5) जी नहीं।

औद्योगिक क्षेत्र में आवंटन भावी अनुक्रमियों से प्राप्त प्रार्थना पत्र के अनुसार किया जाता है, चाहे वह परिगणित जाति का हो व अन्य।

(6) अब तक कुल 242 प्लाट अलाट किये जा चुके है। अन्य सूचना समयाभाव के कारण देना सम्भव नहीं है।

(सूची विस्तृत होने के कारण विधान सभा पुस्तकालय रखी गई)

झोटवाड़ा क्षेत्र में पीने के पानी की व्यवस्था

22. श्री लादूराम सुलानिया (फागी): क्या जन स्वास्थ्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :–

(1) क्या नगर परिषद जयपुर के झोटवाड़े क्षेत्र में पीने के पानी की कोई सार्वजनिक व्यवस्था है ? यदि हां, तो क्या व्यवस्था है ?

(श्री लादूराम मुलानिया)

(2) क्या यह सही है कि झोटवाड़ा विकास समिति द्वारा इस संबंध में 1967 से लगातार प्रार्थना-पत्र संबंधित अधिकारियों एवं मंत्री महोदय को दिये गये हैं ? यदि हां, तो उन पर क्या कार्यवाही हुई है ?

(3) क्या राज्य सरकार उक्त क्षेत्र के निवासियों के लिये पीने की पानी की व्यवस्था, शीघ्र ही करने का विचार रखती है ? यदि हां, तो कब तक ? यदि नहीं, तो क्यों नहीं ?

उत्तर

(1) जी हां, पंचायत समिति की ओर से पानी वितरण की व्यवस्था की जा रही हैं जिस में एक कुऐ में पम्पिग मशीन लगाकर 10,000 गैलन के टैंक द्वारा पानी वितरण किया जाता है। ग्राम में दो सार्वजनिक नल व 175 निजी कनेक्शन है।

(2) जी हां, मामला विचाराधीन है।

(3) जी हां, उक्त क्षेत्र के निवासियों के लिए नलों द्वारा पीने के पानी की व्यवस्था करने हेतु योजना के पुनर्गठन पर विचार किया जा रहा है और आवश्यक धनराशि उपलब्ध होने पर योजना कार्यान्वित की जावेगी।

अतारांकित प्रश्नोत्तर

गंगानगर में ड्रेनेज का कार्य

15. श्री हंसराज आर्य (भादरा) : क्या जन स्वास्थ्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे–

(1) कस्बा गंगानगर में बनने वाले ड्रेनेज में अब तक क्या प्रगति हुई है ?

(2) ड्रेनेज का कितना कार्य हो चुका है और कितना बाकी है ?

(3) शेष कार्य कितने समय में पूरा हो जावेगा ?

(4) इस ड्रेनेज में कुल कितनी धनराशि खर्च होगी ?

(5) ड्रेनेज किस इन्जीनियर की देख-रेख में बन रही है ?

(6) क्या यह सही है कि ड्रेनेज के निर्माण की कुछ शिकायतें वहां के नागरिक कर रहे हैं ?

(7) यदि हां, तो किस प्रकार की शिकायतें हैं ?

(सरकार द्वारा उत्तर प्राप्त नहीं हुआ)

झोटवाड़ा सड़क पर बिजली की बत्तियां

16. श्री लादूराम मुलानिया (फागी): क्या स्वायत्त शासन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सत्य है कि वाटर वर्क्स जयपुर के चौराहे से झोटवाड़ा रेल्वे फाटक तक सड़क की 8 बत्तियां लगाये जाने हेतु आवश्यक ऐस्टीमेट काफी समय पूर्व राजस्थान विद्युत बोर्ड, जयपुर द्वारा बनाया जाकर आवश्यक कार्यवाही हेतु नगर परिषद्, जयपुर में भिजवाया जा चुका है ? यदि हां, तो कब व कितने रुपयों का ?

(2) क्या यह भी सत्य है कि इस सम्बन्ध में झोटवाड़ा विकास समिति की ओर से समय समय पर प्रशासक, नगर परिषद् का ध्यान इस ओर आकर्षित कराया जाकर शीघ्र ही उचित व्यवस्था कि मांग की गई थी ? यदि हां, तो सन् 1967 से

(श्री लादूराम सुलानिया)

जुलाई, 69 तक कुल कितने पत्र परिषद् को प्राप्त हुए व उन पर अब तक क्या कार्यवाही की गई ?

(3) क्या शीघ्र ही इस संबंध में आवश्यक कार्यवाही कर रोड लाईटें लगवाई जायेंगी ? यदि हां, तो कब तक व कितनी लाईटें ?

उत्तर

1. जी हां।

प्रथम में पत्र दिनांक 3-1-67 के द्वारा व रिवाईज्ड पत्र दिनांक 23-11-67 द्वारा प्राप्त हुआ था।

प्रथम में 8267/–रुपयों का तखमीना भेजा गया था व पुनः रिवाईज्ड तखमीना 4835/–रुपयों का भेजा गया था।

2. जी हां।

16 प्रार्थना-पत्र झोटवाड़ा विकास समिति से नगर परिषद् जयपुर को प्राप्त हुए थे।

ऐस्टीमेट बनवाये गये व रिवाईज्ड ऐस्टीमेट बनाये गये। स्थान का नक्शा भी बनवाया गया है। ऐस्टीमेट की रकम का भुगतान करने हेतु नगर विकास न्यास को नगर परिषद् द्वारा लिखा गया है।

3. नगर विकास न्यास जयपुर से ऐस्टीमेट की रकम जमा होने पर एस्टीमेट के अनुसार 40 लाईटें मौजूदा खम्भों पर लगाने की व्यवस्था की जावेगी।

झोटवाड़ा औद्योगिक क्षेत्र में उद्योगों के लिए अलॉट किये गये प्लाट

17. श्री लादूराम सुलानिया (फागी): क्या उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे।

(1) क्या औद्योगिक बस्ती झोटवाड़ा जिला जयपुर में उद्योग स्थापित करने के लिए जिन जिन को जमीन अलॉट की है उन सबने उद्योग स्थापित कर लिए हैं ?

(2) इस बस्ती में कुल कितनी फैक्ट्रियां हैं तथा उनमें से किस किस फैक्ट्री को कितनी कितनी भूमि, अनुदान व कितना कितना ऋण दिया गया है ? सूची सदन की मेज पर फैक्ट्री मालिक के नाम सहित रखने की कृपा करें।

(3) क्या इन फैक्ट्रियों को भारत सरकार व राज्य द्वारा किन्हीं वस्तुओं का कोटा भी दिया जाता है? यदि हां तो, किस किस वस्तु का किस किस फैक्ट्री को व कितना कितना कब कब दिया गया ? पूर्ण विवरण सदन की मेज पर रखने की कृपा करें।

(4) क्या इन फैक्ट्रियों से बराबर उपयोगिता प्रमाण-पत्र सरकार को प्राप्त हो रहे हैं ?

(5) क्या कोटे से उत्पादित वस्तु की बिक्री के विषय में कीमतों आदि का कोई नियन्त्रण है ? यदि हां, तो उसका विवरण देने की कृपा करें। यदि नहीं, तो क्यों नहीं ?

(6) क्या इन फैक्ट्रियों में कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए वेतन, अवकाश व आयु तथा समय निर्धारित है ?

(श्री लादूराम सुलानिया)

(7) क्या यह भी सत्य है कि इस बस्ती से सम्बन्धित फैक्ट्रियों के कुछ विवाद-ग्रस्त मामले श्रम विभाग में चल रहें हैं ? यदि हां, तो किस किस फैक्ट्री के कितने कितने ?

(8) इस औद्योगिक बस्ती में निर्मित फैक्ट्रियों को जो भूमि अलॉट की गई है उसकी क्या योजना हैं ? क्या ये विक्रय शुदा है या लीज पर ? सूचना मय नियमावली सहित सदन की मेज पर रखने की कृपा करें।

उत्तर

(1) जी, नहीं।

(2) औद्योगिक क्षेत्र झोटवाड़ा में कुल 63 फैक्ट्रियां है। अन्य सूचना समयाभाव के कारण तत्काल उपलब्ध करना सम्भव नहीं है।

(3) जी, नहीं। कभी कभी कुछ कच्चा माल जैसे लोहा, अलोह धातु, रसायन आदि भारत सरकार व सरकार द्वारा स्थापित निगमों के माध्यम से प्राप्त होता है जिस उद्योगों की क्षमता एवं माल की उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए, लघु उद्योगों में आवंटित कर दिया जाता है।

(4) उपयोगिता प्रमाण-पत्र प्राप्त करने का प्रावधान नहीं हैं।

(5) जी, नहीं। प्रश्न नहीं उठता। नियमों में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। यह विषय श्रम मंत्री से सम्बन्धित है।

(6) यह विषय श्रम मंत्री से सम्बन्धित है।

(7) यह विषय श्रम मंत्री से सम्बन्धित है।

(8) औद्योगिक क्षेत्र में भूमि 99 वर्ष के पट्टे पर राजस्थान इण्डस्ट्रीयल एरिया अलाटमेंट रूल 1959 के अन्तर्गत दी जाती है जो कि राज पत्र में प्रकाशित किये जा चुके हैं।

लगान की वसूली

18. श्री फूलचन्द बाफना (सुमेरपुर) : क्या राजस्व मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :-

(1) क्या यह सही है कि पटवार सर्कल बर (तहसील रायपुर, जिला पाली) में स्थित श्री कानसिंह, श्री धूला और श्री रघुनाथ से रु. 1800 की गलत वसूली की गई ?

(2) क्या यह सही है कि इस कथित लगान (संवत् 2011 से) की वसूली का आदेश कथित अधिक भूमि के लगान के नाम से दिया गया ? यदि हां, तो इस सम्बन्धित कृषि भूमि के खसरा नम्बर क्या क्या हैं और पटवारी के रेकार्ड में सम्वत् 2011 में बाकी निकलते भी हैं क्या ?

(3) यदि उपर्युक्त रकम पटवारी के रेकर्ड में बाकी निकलती हैं तो सम्बन्धित रेकर्ड के सम्बन्धित अंश की प्रतिलिपि सदन पटल पर रखी जावे। यदि पटवारी के रेकार्ड में इन तीनों कृषकों के नाम कोई रकम बकाया नहीं निकलती है तो उप राजस्व सचिव (ग) जयपुर ने वसूली की आज्ञा सं. प. 5 (25) राज/ख/ग/60 जयपुर दि० 31-10-68 जिलाधीश पाली के नाम किस आधार पर दी है ?

(श्री फूलचन्द बाफना)

(4) उपरोक्त तीनों कृषकों से रु० 1800 लिये गये वे सम्बन्धित तहसील में किस शीर्षक (हैड) के अन्तर्गत जमा किये गये है ?

(5) क्या यह सही कि इस गलत वसूली की रकम रु० 1800 को तहसील में अमानत शीर्षक (हैड) में जमा की गई है ? यदि हां, तो अमानत के शीर्षक में जमा करने की आवश्यकता क्यों पड़ी ?

(6) यदि यह रकम सम्बन्धित जागीरदार की बताई जाती है तो ग्राम बर आधा जागीर का व आधा सरकार का (खालसा) था, तो क्या पटवारी के रेकार्ड में यह रकम बकाया आनी जरूरी नहीं थी क्या ?

(7) यदि यह रकम जागीरदार की बकाया बताई जाती है तो क्या जागीर का अधिकार 50 प्रतिशत रकम पर और 50 प्रतिशत रकम की वसूली का अधिकार पटवारी का नहीं था ?

(8) लेकिन जब रेकार्ड में ही कोई बकाया रकम इन काश्तकारों में नहीं निकलती तो किस कारण उन पर कुड़कियां निकाल कर वसूली की गई ?

(9) क्या यह सही है कि किसी ने उपर्युक्त वसूली हेतु एक अर्जी पेश की थी कि इन कृषकों में रु. 1800 बकाया निकलते हैं और क्या इसी अर्जी पर ही यह वसूली–कार्यवाही की गई ? यदि हां तो क्या राजस्व वसूली किसी की अर्जी से की जाती है या सरकारी रेकार्ड के अनुसार की जाती है ?

(10) सम्बन्धित अर्जी की प्रतिलिपि सदन पटल पर रखी जावे ।

उत्तर

(1 व 2) श्री घूला पुत्र मोती एवं श्री कानसिंह निवासी ग्राम बर तहसील रामपुर ने इस आशय का प्रार्थनापत्र प्रस्तुत किया था कि उनसे 1800 रुपये की पुरानी बकाया झूंठी रिपोर्ट के आधार पर वसूल की जा रही है जिसकी जांच जिलाधीश से करने को लिखा हुआ है जांच का परिणाम प्राप्त होने पर ही पता चल सकेगा ।

(3) राजस्व विभाग की आज्ञा सं० 5 (25) राज/ख/ग/60 दिनांक 31-10-68 को प्रसारित की गई थी । पटवार रेकार्ड में इन तीनों आदमियों में बकाया नहीं निकलती । अतः उनकी प्रतिलिपि संलग्न करने का प्रश्न ही नहीं उठता । सही स्थिति जांच पूर्ण होने पर ही विदित होगी ।

(4) वसुल शुदा राशि 1800 रु० मद 9–भू राजस्व (साधारण भू-राजस्व) में जमा करवाई गई है ।

(5) यह राशि अमानत शीर्षक में जमा नहीं की गई है बल्कि 9 भू-राजस्व (साधारण भू-राजस्व), मद में जमा कराई गई है ।

(6) जांच के परिणाम से ही सही स्थिति का पता चलेगा ।

(7) जांच के परिणाम से ही सही स्थिति का पता चलेगा ।

(8) जांच के परिणामों से ही सही स्थिति का पता चलेगा ।

(उत्तर राजस्व मंत्री)

(9) जांच के परिणाम से ही सही स्थिति का पता चलेगा।

(10) जांच के परिणाम से ही सही स्थिति का पता चलेगा।

कृषि भूमि पर निर्माण कार्य

19. **श्री लादूराम सुलानिया** (फागी): क्या राजस्व मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सत्य है कि तहसील जयपुर का झोटवाड़ा ग्राम नगरपरिषद् सीमा में आ चुका है?

(2) क्या यह भी सत्य है कि सम्बन्धित विभागों की लापरवाही के कारण उक्त ग्राम में अन्धाधुन्ध तामीरात कृषि भूमि में करवाई जाकर उसका दुरुपयोग किया गया है और दुकानों का निर्माण किया जा रहा है? यदि हां, तो ऐसी भूमियों के खातेदार का नाम, पिता का नाम, जाति खसरा नम्बर व की गई तामीरात सहित सूची सदन की मेज पर रखने की कृपा करें।

(3) क्या यह भी सत्य है कि झोटवाड़े में भूमि बिक्रीयों का काफी जोर है? यदि हां, तो गत 2 वर्ष में कुल कितनी ऐसी रजिस्ट्रियां हो चुकी हैं?

उत्तर

1. तहसील जयपुर का भोटवाड़ा ग्राम नगरपालिका सीमा में आ चुका है।

2. यह सत्य है कि उक्त ग्राम में कई खातेदारों द्वारा अपनी खातेदारी कृषि भूमि में मकानात दुकानात बनवाई गई हैं। जिसकी सूची संलग्न है। इन खातेदारों के विरूद्ध भू–राजस्व अधिनियम के अन्तर्गत कार्यवाही की गई है तथा की जा रही है।

3. गत दो वर्षों का विक्रय निम्न प्रकार हैं:–

वर्ष	भूमि जो बेची गई	मिलकियत	दस्तावेज की सं०
1969	184 बी 74 वि० एवं 160 वर्गगज कृषि भूमि	240099	14
1970	29 बी० 10 वि० एवं 1129-37 वर्गगज कृषि भूमि	142000	10

(कृपया परिशिष्ट 1 देखिये)

महुआ–श्यामपुरा सड़क

20. **श्री मनोहर सिंह मेहता** (मांडलगढ़): क्या सार्वजनिक निर्माण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि महुआ से श्यामपुरा जाने वाली सड़क का बनना बहुत जरूरी है।

(2) उक्त सड़क का काम कब प्रारंभ होगा? क्या इसे चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में ले लिया गया है?

उत्तर

1. जी नहीं।

2. यह कार्य योजना में स्वीकृत नहीं है अतः कार्य आरंभ का प्रश्न ही नहीं उठता उक्त रोड़ प्रारूप चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में शामिल नहीं है।

ग्राम निमेड़ा से पारली वाया मैंदवास सड़क निर्माण कार्य

21. **श्री लादुराम सुलानियां** (फागी): क्या सार्वजनिक निर्माण मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या जयपुर–मालपुरा–डिग्गी रोड पर ग्राम निमेड़ा से पारली वाया मैंदवास रोड़ के निर्माण हेतु 1958 से कार्यवाही चालू है ? यदि हां, तो किस किस वर्ष में कितने कितने मील पर मिट्टी डामर आदि का कार्य किया गया ?

(2) क्या यह रोड़ निमेड़ा से पारली तक बन गया है और माइलेज व किलोमीटर के मार्ग दर्शक चिन्ह लग गये हैं और कितनी पुलियों का निर्माण किया गया है ? सूची सदन की मेज पर रखने की कृपा करें।

(स्थगित किया गया)

विधान सभा की सदस्यता से त्याग-पत्र की सूचना

श्री अध्यक्ष : मैं माननीय सदस्यों को सूचित करता हूं कि राजस्थान विधान सभा के निम्नांकित सदस्यों ने दिनांक 18 मार्च, 1971 से अपने स्थान से पदत्याग कर दिया है:—

(1) श्री मूलचन्द डागा,

(2) श्री शिवनाथ सिंह,

(3) श्री हरि प्रसाद, और

(4) श्री छुट्टन लाल।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जोहरी बाजार जयपुर) : प्रोस्पेक्टिव कैसे हो सकता है ?

एक माननीय सदस्य : भ्रष्टाचार के कारण।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : 18 तारीख तो अब आयेगी।

श्री अध्यक्ष : आज से मान लें।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, प्रश्न यह है·······

श्री अध्यक्ष : आज से समाप्त कर देता हूं। आज से त्याग पत्र स्वीकार किया जाय।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल: कब से 18 से मांगा है।

श्री अध्यक्ष : ज्योंही अध्यक्ष के पास उनका त्यागपत्र आ जाता है वह स्वीकृत समझा जाता है।

श्री विजयसिंह : इट इज कन्डीशनल त्यागपत्र।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : यह त्याग पत्र कब मिला ?

श्री अध्यक्ष : 16 तारीख को।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : तो 16 से ही त्याग पत्र स्वीकार हो गया। आपने कहा कि जिस तारीख को त्याग पत्र आ जाता है उससे ही स्वीकृत हो जाता है। 16 तारीख को आगया तो 16 तारीख से स्वीकृत हो गया।

श्री अध्यक्ष : I here by tender my resignation of my seat in the House with effect from. .."

यह इसमें उल्लेख है विद इफेक्ट फाम, और उन्होंने पत्र में टाइम दिया है 18

(श्री अध्यक्ष)

तारीख से । उसके अलावा कुछ नहीं है, और ज्योंही अध्यक्ष के पास उनका त्यागपत्र आया विद इफेक्ट फ्रोम इसको स्वीकृत समझा जाना चाहिये ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं यह जानकारी केवल आपसे जानना चाहता हूं कि 16 तारीख को त्यागपत्र मिल गया । उन्होंने अपने त्याग पत्र में यह लिखा है कि विथ इफेक्ट फ्राम 18 तारीख । लेकिन आपने सूचित किया है कि उनका त्यागपत्र आज से ही स्वीकृत मान लिया जाय । जब त्यागपत्र प्रस्तुत होता है उससे ही मान लिया जाय । मैंने तारीख पूछी तो आपने कहा कि 16 मार्च तो इसका मतलब 16 मार्च से हो गया ।

श्री अध्यक्ष : प्रार्थना पत्र के संदर्भ में इन्टेन्शन स्पष्ट है "A member who desires to resign his seat in the House shall intimate in writing under his hand addressed to the Speaker, his intention to resign his seat in the House in the following form and shall not give any reason for his resignation."

उसके बाद बतलाया गया है "provided that where any member gives any reason............" यह प्रश्न यहां नहीं है ।

"As soon as may be, the Speaker shall, after he has received an intimation in writing from a member under his hand resigning his seat in the House, inform the House that such and such a member has resigned his seat in the House :"

इन्टेन्शन उन्होंने बतलाया है 18 तारीख का प्रार्थनापत्र अध्यक्ष के पास 16 तारीख को आया । फार्म में उनका इन्टेन्शन दर्ज है । यह हाउस उसको इन्टरप्रेट कर ले ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : क्वेश्चन इन्टरप्रिटेशन का नहीं है ।

श्री विजय सिंह (मकराना) : बिसाउ ने त्याग पत्र दिया था तो उसी रोज आपने उसको एक्सेप्ट करके एनाउन्स करवाया है । इन्होंने कल त्यागपत्र दिया तो आज कह रहे हैं ।

श्री अध्यक्ष : उसमें इन्टेन्शन नहीं था । त्यागपत्र देता हूं आज की तारीख से ऐसा था । उसको स्वीकार नहीं करना पड़ा ।

श्री विजय सिंह : उस रोज आपको प्लेन से उदयपुर जाना था ।

श्री अध्यक्ष : यह प्रश्न हाउस का नहीं है ।

श्री गिरधारी लाल व्यास : वह प्रश्न पैदा नहीं होता है ।

श्री विजय सिंह : नहीं प्रश्न तो पैदा होता है ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, यह बात सही है कि वे सदस्य निर्वाचित हो गये हैं । वे चले गये हैं ।

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

त्यागपत्र दे दिया गया है, लेकिन मैं तथ्य की बात आपसे जानना चाहता हूं कि 16 तारीख को त्यागपत्र मिल गया। उस त्यागपत्र में उन्होंने 18 मार्च को जो फार्म दिया हुआ है उससे प्रभावी होने के सम्बन्ध में लिख दिया। मैंने अभी सदन में पूछा तो आपने यह कहा कि आज से ही उसको मान लिया जाय, तो इसका मतलब यह हुआ कि 17 मार्च से उनका त्यागपत्र विधान सभा से मानना चाहिए। यह केवल वस्तुस्थिति जानना चाहता हूं और कुछ नहीं। 17 से मान लें, 16 से मान लें। यह 16 तारीख से इस्तीफा दिया गया है।

श्री अध्यक्ष : मैं और स्पष्टीकरण कर दूं। यह कन्वेन्शन है। उनके इन्टेन्शन का इन्द्राज उस फार्म में उल्लेख था, यह नहीं यह मेरी जानकारी में नहीं था। फार्म देखने से मालूम हुआ कि उनका इन्टेन्शन उनके फार्म में दिया हुआ है और उसमें लिखा भी है। ऐसी सूरत में कैसे 17 से वह मान लिया जाय। तो यह एक कानूनी मसला है। इसको तो उसी कन्टेक्सट में देखकर सदन को तय करना है—सदन को भी तय नहीं करना है। उन्होंने फार्म में इन्टेन्शन बतलाया है 18 तारीख से और 16 तारीख को त्यागपत्र दिया गया है त्यागपत्र में उसका लिखा है। सदस्य ने प्रस्तुत किया है 16 तारीख और इन्टेन्शन लिखा है 18 तारीख जो कि फार्म से कन्वे होता है। जब इन्टेन्शन लिखा है तो उस इन्टेन्शन के मुताबिक उसी परिपेक्ष में वह स्वीकार किया जाना चाहिए। इसलिए स्वीकार किया जाना चाहिए। कौन स्वीकार करे यह भी प्रश्न नहीं है। यह इन्टेन्शन को देखकर स्वीकृत माना जाना चाहिए। 18 तारीख को भी अध्यक्ष की इच्छा का प्रश्न नहीं होता है कि वे स्वीकार करते हैं कि नहीं करते है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आपने सूचित किया है कि आज से मान लिया जाय।

श्री अध्यक्ष : मैं उसको रिवाइज कर देता हूं इस कन्टेक्स्ट में। 18 का इन्टेन्शन है इसलिए 18 से मान लिया जाय।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : 18 से इफेक्ट में आयेगा।

श्री अध्यक्ष : जी हां।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : वह त्यागपत्र पढ़ देवें आप ?

श्री अध्यक्ष : मैं एतद् द्वारा 18 मार्च, 1971 से अपने स्थान का पदत्याग करता हूं।

श्री अध्यक्ष : स्थगन प्रस्तावों पर व्यवस्था।

स्थगन प्रस्तावों पर अध्यक्षीय व्यवस्था

श्री अध्यक्ष : मैं माननीय सदस्यों को सूचित करता हूं कि कुछ स्थगन प्रस्तावों की सूचनाएं प्राप्त हुई है जो इस प्रकार है :—

(1) बूंदी जिले के गुढा गोकुलपुरा बांध का निर्माण कार्य पूरा न होने से उत्पन्न स्थिति के संबंध में श्री केसरीसिंह हाडा, सदस्य विधान सभा ने एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

(2) श्री रघुनाथ विश्नोई, श्री वृद्धिचन्द्र जैन, श्री शंकरलाल व श्रीमती मदनकौर,

(श्री अध्यक्ष)

सदस्य विधान सभा ने जालौर व बाड़मेर जिलों में बाजरे के भाव गिर जाने से किसानों में उत्पन्न असन्तोष के बारे में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

(3) श्री बिठ्ठल प्रसाद शर्मा, श्री राम प्रसाद बोहरा, श्री जुझारसिंह व श्री बृज-वल्लभ बोहरा, सदस्य विधान सभा ने गत 25 फरवरी को मध्यावधि चुनाव के दौरान ग्राम वड़वड़ के निकट एक ब्राह्मण के 12 वर्षीय बालक को ट्रक के नीचे कुचलकर मार डालने व उस विषय में पुलिस द्वारा कोई कार्यवाही न करने से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

(4) अजमेर व जयपुर नगर में मिट्टी के तेल की सप्लाई ठप्प हो जाने से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में श्री भगवानदास शास्त्री, सदस्य विधान सभा ने एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है। इसी आशय के एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना श्री रामचन्द्र आर्य, सदस्य विधान सभा से भी प्राप्त हुई है जिसमें जयपुर शहर की जनता को मिट्टी का तेल न मिलने से उत्पन्न स्थिति का उल्लेख किया गया है।

उपरोक्त सभी स्थगन प्रस्तावों के संबंध में राज्य सरकार से जानकारी प्राप्त की जा रही है। जानकारी मिलने पर इन पर निर्णय लिये जाकर मैं माननीय सदस्यों को यथा-शीघ्र सूचित कर दूंगा।

इनके अतिरिक्त श्री भगवानदास शास्त्री सदस्य विधान सभा से निम्नांकित विषयों पर स्थगन प्रस्तावों की सूचनाएं प्राप्त हुईं—

(1) नसीराबाद (अजमेर) में एयरपोर्ट की सुविधा उपलब्ध कराने।

(2) लघु उद्योग माखूपुरा (अजमेर) को कोटा एवं सवाई माधोपुर के समान पानी बिजली आदि की दरों में सुविधा दिलाई जाना।

(3) नगर परिषद् अजमेर के कर्म-चारियों को राणावत आयोग की सिफारिश के अनुसार एरीयर्स दिलाया जाना।

(4) नगर परिषद अजमेर की पड़ाव स्थित पुरानी धानमण्डी की सुपरबाजार को सुपुर्द की गई आधी जमीन को वापिस दुकानों के रूप में बनवा दिया जाना।

उपरोक्त सभी मामले अविलम्बनीय लोक महत्व के नहीं है। इसके अतिरिक्त पहले मामले का सीधा सम्बन्ध केन्द्रीय सरकार से है। शेष मामले मांगों पर वाद-विवाद के समय कटौती प्रस्तावों के जरिये उठाये जा सकते हैं। अतः मैं इनको प्रस्तुत किये जाने की अनुमति देने में असमर्थ हूं।

प्रतिवेदन का उपस्थापन श्रीमती लक्ष्मी-कुमारी चुण्डावत करेंगी।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जौहरी बाजार, जयपुर): अध्यक्ष महोदय, कोटा नगर में जो गोली काण्ड हुआ है जिसमें 8 मजदूर मारे गये हैं। बड़ी गम्भीर घटना है।

अध्यक्ष: जानकारी की जा रही है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल: इसमें जान-कारी का प्रश्न क्या है। 15 तारीख को यह सदन प्रारम्भ हुआ है। परम्परा यह है कि सदन पटल पर सूचना आनी चाहिए। सदन चल रहा है। सदन के बाहर सरकार ने जुडिशियल इन्क्वायरी बैठाने की घोषणा की है। इस सदन में घोषणा होनी चाहिये। 15

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

मार्च से सदन चल रहा है। घोषणा बाहर की जा रही है। केवल इसलिए कि यह गोलीकाण्ड का मसला है। राज्य सरकार ने जन-भावना को दबाने के लिए यह घोषणा की है। अध्यक्ष महोदय, अभी तक किसी जज की नियुक्ति नहीं हुई है। यह बड़ा गम्भीर मसला है।

श्री अध्यक्ष : मैं यह निवेदन करूं कि जानकारी के लिये यह प्रश्न रखा गया है। यह समाचार पत्रों से मालूम हुआ है कि जुडिशियल इन्क्वायरी के सम्बन्ध में कोई सूचना छपी है। इसकी पुष्टि भी की जानी आवश्यक है। इसलिये इस सन्दर्भ में माननीय सदस्य ने जो (अल्प विराम) इसलिए मैंने यह निवेदन किया चूंकि हाईकोर्ट के जज द्वारा इन्क्वायरी किये जाने की सूचना प्रकाशित हुई है तो पुष्टि आवश्यक है। माननीय सदस्य ने प्रश्न उठाया है मैटर ऑफ प्रिविलेज का, जबकि सदन चल रहा है। इस सन्दर्भ में जानकारी आने पर ही मैं निर्णय ले सकूंगा।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : जानकारी किससे लेनी है ?

अध्यक्ष : सरकार से।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : सरकार तो यहां बैठी है।

श्री अध्यक्ष : जानकारी ऐसे थोड़े ही होती है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, 8 आदमी मर गये हैं। स्थगन प्रस्ताव दिया है। यहां कोई विलम्ब नहीं हुआ है। मुझे निश्चित मालूम है। राज्य सरकार को भेज दिया गया है। क्या गृहमंत्री महोदय को जानकारी नहीं है ?

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, इस प्रश्न के दो भाग होते हैं। अगर जुडिशियल इन्क्वायरी के लिए कर दिया गया है तो निर्णय लेने में कठिनाई होती है। मेरा ख्याल है, अगर कल तक जानकारी नहीं आई तो मैं व्यवस्था दे दूंगा।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आज जनता में इस बात की उत्सुकता होती है। वस्तुस्थिति क्या है। सही माने में हालत क्या है। वह क्यों मारे गये है। गोलीकाण्ड की हालत क्या है ? जो सेठ साहूकार हैं वह अखबारों के माध्यम से लाखों रुपया खर्च करके अपने पक्ष की बात कर रहे हैं। यह हाऊस उस पर निर्णय ले। आप जुडिशियल इन्क्वायरी कराना चाहते हैं जैसा कि आपने बेरी आयोग की रिपोर्ट पर किया है।...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य।

श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर) : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य के साथ एक हद तक मेरी भी सहानुभूति है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आप एक हद तक नहीं पूरी हद तक रखा करें।

श्री लक्ष्मणसिंह : नॉट ऑनली वन परसेण्ट वट हन्ड्रेड एण्ड वन परसेण्ट। यह तो नीति का प्रश्न है। सरकार को स्पष्टीकरण करने में क्या दिक्कत है। या अगर लीपा पोती का प्रश्न हो जैसा कि बेरी कमीशन की रिपोर्ट पर किया गया है तो मेरे ख्याल में इससे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति क्या हो सकती है ? और क्या अधिकार

(श्री लक्ष्मणसिंह)

होगा ? माननीय सदस्य अमुक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं उसमें लेतलाली चले। मेरी समझ में कुछ नहीं आता है।

श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ़): अध्यक्ष महोदय....

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर।

श्री दौलतराम सारण : अध्यक्ष महोदय...

श्री अध्यक्ष : आर्डर। इस पर कोई वादविवाद नहीं होगा।

श्री दामोदरलाल व्यास : अध्यक्ष महोदय ...

श्री दौलतराम सारण : अध्यक्ष महोदय, मैं दो शब्द निवेदन करना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : मैं निवेदन करूंगा कि जब तक कोई निर्णय नहीं लिया जाये तब तक वादविवाद नहीं करना चाहिए।

श्री दौलतराम सारण : अध्यक्ष महोदय, हमारे अधिकारों का सम्बन्ध है।

श्री अध्यक्ष : यह अधिकारों में नहीं है।

श्री दौलतराम सारण : है।

श्री अध्यक्ष : जब कोई...

श्री दौलतराम सारण : राज्य सरकार का कर्तव्य है कि वह महत्वपूर्ण घटना के सम्बन्ध में सदन को अवगत करें। वक्तव्य दे। लेकिन इस सरकार से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

श्री अध्यक्ष : यह माननीय सदस्य ने उठा दिया है।

श्री दौलतराम सारण : अध्यक्ष महोदय, आप इस सरकार को बाध्य करें, यह सदन की लोकतन्त्रीय परम्पराओं, सदन की सोवरेनटी, उसकी मान्यता करते हुये, इसमें प्राथमिकता देते हुये महत्वपूर्ण मसलों पर वक्तव्य दिया करे। एक क्षेत्र में एक उद्योग में किन्हीं कारणों से, जो कारण समय पर यहां पर नहीं बताये गये हैं, एक उद्योगपति के द्वारा ऐसी स्थिति पैदा की जाती है और मजदूर मजदूरों के हित के लिए लड़ते हैं तो उसमें नो आदमियों की जान जाती है और सरकार की तरफ से गोलियां चलाकर लोगों की हत्या की जाती है, फिर भी उस हत्याकाण्ड के मामले में राज्य सरकार उस तमाम स्थिति को स्पष्ट करते हुए वक्तव्य नहीं देती है ...

श्री अध्यक्ष : अभी निर्णय नहीं हुआ।

श्री दौलतराम सारण : कि किन स्थितियों में न्यायिक आयोग को जांच सौंपी गई है और न्यायिक आयोग की सीमा, अधिकार क्षेत्र क्या रखा गया है ! इस संबंध में कोई जानकारी नहीं है इस सदन को, केवल अखबारों में पढ़ कर हम मांग करते हैं वक्तव्य की तो इस सम्बन्ध में आप भी सहानुभूति प्रदर्शित नहीं करते हैं और आप भी जानकारी लेना चाहते हैं। उसके बाद राज्य सरकार जानकारी भी दस दिन तक नहीं देती है...

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज! पुनरावृत्ति है, माननीय सदस्य ने यही कहा था।

श्री दौलतराम सारण : इस सदन के अधिकारों की रक्षा करने का आपका जिम्मा

(श्री दौलतराम सारण)

है इसलिए आपसे मेरी मांग है कि आप राज्य सरकार को बाध्य करें, आयन्दा के लिए आप राज्य सरकार को बाध्य करें कि इस प्रकार से वह कोताही न करे और गैर-जिम्मेदारी नहीं बरते।

श्री लक्ष्मण सिंह : सरकार इसका उत्तर नहीं देती है तो कह दे कि पुलिस स्टेट है, डेमोक्रेसी नहीं है।

श्री दामोदरलाल व्यास (गृहमन्त्री) : अध्यक्ष महोदय, जहां तक इस मामले की जुडिशियल इन्क्वायरी का प्रश्न है, इस सरकार ने विधान सभा का सत्र शुरू होने से पहले निर्णय ले लिया था कि जुडिशियल इन्क्वायरी कराई जायगी··

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : कौनसी तारीख को लिया था ?

श्री देवीदत्त गाड़िया (बारां) : कौनसी तारीख को लिया था ?

श्री प्रेमसिंह सिंघवी (छबड़ा) : कौनसी तारीख को लिया था ?

श्री दामोदरलाल व्यास : इस सत्र के शुरू होने से पहले ले लिया था।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : कौनसी तारीख को ?

श्री देवीदत्त गाड़िया : तारीख बताओ।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : कौनसी तारीख को लिया था।

श्री दामोदर लाल व्यास : दूसरी बात यह है कि इस सम्बन्ध में जो कम्युनिक स्टेट गवर्नमेंट ने निकाला है, उसमें यह लिखा है कि न्यायाधीश की नियुक्ति मुख्य न्यायाधीश करेंगे। अब मुख्य न्यायाधीश किसी न्यायाधीश की नियुक्ति कर दें तो उसके बाद में सरकार की तरफ से नोटिफिकेशन निकल जायगा। यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि विधान सभा का सत्र शुरू होने से पहले सरकार ने निर्णय ले लिया था और वह निर्णय समाचार पत्रों और ऑल इण्डिया रेडियो से प्रसारित कर दिया गया था।

श्री देवीदत्त गाड़िया : कौनसी तारीख को ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : कौनसी तारीख को ?

श्री दामोदर लाल व्यास : विधान सभा का सत्र शुरू होने से पहले।

श्री देवीदत्त गाड़िया : कौनसी तारीख को ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : विधान सभा का सत्र तो 15 तारीख से शुरू हुआ है।

श्री दामोदरलाल व्यास : उससे पहले।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : 15 को प्रारम्भ माना जाय या 13 मार्च से पहले माना जाय ?

श्री दामोदरलाल व्यास : 13 को नहीं माना जायगा, 15 को माना जायगा।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : विधान सभा का सत्र जब शुरू होने वाला था तो कम्युनिक बाहर क्यों दिया?

श्री दामोदरलाल व्यास : कर सकते हैं। कर सकते हैं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आप सब कुछ कर सकते हैं, गोली भी चला सकते हैं। हम यहां बैठे हुए हैं किसलिए ? आप इस तरह से गोलीकाण्ड न करें। मैं निवेदन करना चाहता हूं····

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य ! यह प्रश्न आने वाला है जब मैं निर्णय लूंगा तब।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : इसमें लिखा हुआ है—

"The loss of life and property on the 24th February 1971 which was caused by the workers and by the Police firing is deeply regretted. However it is extremely necessary that a true statement of facts leading to the deplorable incident is brought to the notice of the public."

यानि जे. के. सिन्थेटिक्स आज लाखों रुपया खर्च करके, पैसे के बूते के ऊपर जनता मे फेक्ट सरक्यूलेट करती है और उसके आधार पर जनता को बताने की कोशिश करती है।

Seeing that the situation was getting clearly out of control, the police was compelled to open fire resulting in the loss of human lives which uptill now is 18.

यानि Police was compelled to open fire. क्या इससे जुडिशियल कमीशन प्रिजुडिस नहीं होगा ? क्या चेयरमेन, रेवेन्यू बोर्ड का जो जांच के लिए कमीशन बनाया था, वह प्रिजुडिस नहीं हुआ ? राजस्थान की गवर्नमेंट इन सारे फेक्ट्स को राजस्थान विधान सभा के सामने बताने में गुरेज करना चाहती है, विधान सभा के सामने सारी बातें बताना नहीं चाहती है···

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य ! यह परिस्थितियां··

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : यह सारे फेक्ट्स इस सदन के सामने आने चाहिए।

श्री अध्यक्ष : आपको अवसर होगा जब मैं निर्णय दूं। उस समय आप सारी परिस्थितियां संक्षेप में रख सकेंगे। उससे पहले नहीं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय ···

श्री अध्यक्ष : मैं समझ गया।

श्री देवीदत्त गाड़िया : इस मामले की जांच की जाय। इसको आप गम्भीरता से नहीं ले रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : गम्भीरता से ले रहा हूं।

श्री देवीदत्त गाड़िया : गम्भीरता से ले रहे हैं तो फिर आदेश क्यों नहीं देते हैं कि कल वक्तव्य दिया जाय।

श्री अध्यक्ष : मैं देख लूंगा।

श्री देवीदत्त गाड़िया : आप जानकारी प्राप्त कर रहे हैं जब कि यह आठ तारीख को स्थगन प्रस्ताव रखा गया।

श्री अध्यक्ष : : निर्णय देना अवशेष है।

श्री देवीदत्त गाड़िया : राज्य सरकार को बाध्य नहीं कर सकते जब कि आठ आदमियों की जान चली गई है। आप इस प्रश्न को गम्भीरता से नहीं लेते हैं, तो अध्यक्ष महोदय, हम यह मान कर चलते हैं···

अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री देवीदत्त गाड़िया : सदन में हम आये हैं तो जनता का प्रतिनिधित्व करते हुए···

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य। अंकित नहीं हो।

श्री देवीदत्त गाड़िया : ×××

श्री अध्यक्ष : अंकित नहीं हो।

श्री देवीदत्त गाड़िया : ×××

श्री अध्यक्ष : अंकित नहीं हो।

श्री देवीदत्त गाड़िया : ×××

श्री अध्यक्ष : हो गया, माननीय सदस्य, पर्याप्त हो गया।

श्री देवीदत्त गाड़िया : ×××

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, सतीशचन्द्र जी ने सारे प्रश्नों को रख दिया है।

श्री देवीदत्त गाड़िया : ××

श्री गिरधारी लाल व्यास : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह रूल्स और कानून को अवहेलना की जा रही है। पूंजीपतियों के जो पक्षपाती है वह पूंजीपति के खिलाफ बोल रहे हैं। इससे साफ विदित होता है···

(शोरगुल—व्यवधान)

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, आज इन्दिराजी का समाजवाद कसौटी पर है। राजस्थान की जनता और हिन्दुस्तान की जनता देखना चाहती है कि राजस्थान की सरकार पूंजीपतियों का साथ देती है या मजदूरों का साथ देती है। आपका समाजवाद आज कसौटी पर है।

श्री गिरधारी लाल व्यास (आसीन्द): हमारे मिनिस्टर साहब ने कहा कि हाई कोर्ट के जज की नियुक्ति की जायगी।

(शोरगुल—व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : अब पर्याप्त हो गया दोनों ओर से।

श्री कृष्णकुमार गोयल (कोटा) : यह बार बार कह रहे हैं, पूंजीपतियों के इशारे पर चुनाव लड़ने वाले हैं। मैं चैलेंज के साथ कहना चाहता हूं····

श्री गिरधारी लाल व्यास : चुनाव होने के बाद यह साफ हो गया है कि पूंजीपतियों की गोद में बैठे हो।

श्री कृष्णकुमार गोयल : जिनका आपने नमक खाया है, जिनके चन्दे से आप चुनाव लड़े हो····

श्री गिरधारी लाल व्यास : चुनाव ने साफ कर दिया है, चुनाव से साफ विदित हो गया है कि आप पूंजीपतियों के साथ हो।

×× अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अंकित नहीं किया गया।

श्री अध्यक्ष । माननीय सदस्य । आर्डर प्लीज, आर्डर प्लीज ।

श्री देवीदत्त गाड़िया : सैंकड़ों बीघा जमीन पर गलत कार्यवाही करके कब्जा कर लिया••

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य ।

श्री देवीदत्त गाड़िया : चीफ व्हिप ने अपने लड़कों के नाम पर, औरत के नाम पर सैंकड़ों बीघा जमीन ली है ।

श्री गिरधारी लाल व्यास : राजा-महाराजा की गोद में बैठे हो ।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज । (शोरगुल व्यवधान) अंकित नहीं हों

आर्डर प्लीज । माननीय सदस्य, पर्याप्त हो गया ।

(शोरगुल—व्यवधान)

अंकित नहीं हो

श्री देवीदत्त गाड़िया व श्री गिरधारी लाल व्यास : × × ×

श्री अध्यक्ष : अंकित नहीं हो ।

श्री देवीदत्त गाड़िया व श्रीगिरधारी लाल व्यास : × × × ×

श्री अध्यक्ष : कुछ भी अंकित नहीं हो।

(शोरगुल—व्यवधान)

श्री कृष्णकुमार गोयल : अध्यक्ष महोदय, मैं इस सम्बन्ध में निवेदन करना चाहूंगा, आपने अपना निर्देश दिया कि इस पर निर्णय लेना बाकी है । जिस प्रकार सारे केस में गम्भीरता है अगर उसका स्वयं आप ही मनन करेंगे तो आपको पता लगेगा कि राज्य सरकार ने आरम्भ से इतनी गम्भीर घटना को कितनी सरलता और आसानी से टालना चाहा है····

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, यह प्रश्न बार बार सभी तरफ से उठा दिया गया है । जब शोरगुल हो रहा था उस वक्त मैंने पर्याप्त रूप से मनन कर लिया है ।

श्री कृष्ण कुमार गोयल : मैं निवेदन कर रहा हूं, प्रारम्भ में सरकार ने हूजा कमीशन की नियुक्ति की वह सेठ के इशारे पर की और दबाव के कारण की है । अब दबाव पड़ने के बाद सरकार विधान सभा के समक्ष मामले को टालने के लिए यह कह कर चलना चाहती है कि जुडिशियल इन्क्वायरी करायेगी ।

श्री अध्यक्ष : यह प्रश्न वापिस आने को है, मैं निर्णय दे रहा हूं । इस पृष्ठ भूमि में यह इतना विस्तृत हो गया है प्रश्न कि असली प्रश्न से दूर जा रहा है ।

श्री कृष्ण कुमार गोयल : व्यक्ति विशेष विधायक का यह प्रश्न नहीं ••

श्री अध्यक्ष : आपको अवसर मिलेगा।

श्री कृष्ण कुमार गोयल : यह मजदूरों से सम्बन्धित प्रश्न है ।

श्री अध्यक्ष : जिस समय प्रश्न आवेगा उस समय आपको पर्याप्त समय मिलेगा ।

× × × अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार भाषण अंकित नहीं किया गया ।

श्री कृष्ण कुमार गोयल : यह आठ व्यक्तियों को ही हत्या नहीं हुई है, बल्कि बीस-पच्चीस व्यक्तियों की हत्या की गई है। आठ व्यक्ति तो केवल सड़क पर पाये गये।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य। श्री गोयल।

श्री अध्यक्ष : माननीय श्री गोयल।

(शोरगुल)

श्री गिरधारीलाल व्यास : राजा महाराजाओं के ......

(अध्यक्ष, शोरगुल)

श्री देवीदत्त गाड़िया : सेठ साहूकारों की चमचागिरी करते हो।

श्री कृष्णकुमार गोयल : गृह मंत्री यह कह कर चलना चाहते हैं कि हमने इस बारे में हाई कोर्ट जज की नियुक्ति की है। लेकिन सदन जानना चाहता है कि उसके टर्म्स ऑफ रेफरेन्स क्या है। जो हुआ कमीशन के टर्म्स आफ रेफरेन्स थे .....

श्री अध्यक्ष : मेरी थोड़ी आवाज सुनिये माननीय सदस्य कृपया स्थान ग्रहण करें। माननीय श्री गोयल।

(शोरगुल)

श्री कृष्णकुमार गोयल : मैं निवेदन करूंगा कि ....

श्री अध्यक्ष : सारे प्रश्न आ रहे हैं। आज ही उठाकर इसको सम्पन्न कराना चाहते हैं ...

(दोनों पक्षों के माननीय सदस्यों द्वारा बोलने पर)

आर्डर प्लीज आपको पूरा अवसर है। इस प्रश्न पर मैं पूरा अवसर देने वाला हूं। निर्णय देने के पश्चात् ....

(शोरगुल)

आर्डर प्लीज।

श्री देवीदत्त गाड़िया : कब होगा इस पर वक्तव्य ?

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य।

श्री देवीदत्त गाड़िया : इस पर निर्णय कब होगा, वक्तव्य कब होगा।

श्री अध्यक्ष : स्थान ग्रहण करें।

(शोरगुल)

अंकित न हो। इतना आक्रोश ......

श्री लक्ष्मण सिंह : अध्यक्ष महोदय, हमें आशंका है टर्म्स आफ रेफरेन्स क्या हैं। इसकी तो आशंका है कि हाई कोर्ट जज के फाईडिंग्स को भी सरकार अवहेलना करके बलाए ताक रखेगी। इसलिए हमारी व्यग्रता है, वह स्वभाविक है। विपक्षी दलों को शान्त करना है तो कुछ न कुछ स्पष्टीकरण के रूप में आना चाहिए वरना मौनवृत्त धारण करके विराजमान रहें ...

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल: मेरा दल ..

श्री कृष्णकुमार गोयल : आज भी वहां टेन्शन है।

श्री अध्यक्ष : यहां ही ऐसा टेन्शन है तो वहां तो होना चाहिए।

श्री देवीदत्त गाड़िया : आप सीरियसली नहीं ले रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : बहुत सीरियसली लेता हूं ।

श्री कृष्णकुमार गोयल : वहां धारा 144 लगी हुई है, टेंशन है, मालिक मजदूरों के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, सरकार मालिक के साथ मिली हुई है। फायरिंग 24 तारीख को ही नहीं हुआ, कहीं ऐसा नहीं हो कि फिर फायरिंग हो जाय । इसलिए सरकार अपना वक्तव्य विधान सभा में दें ।

(शोरगुल)

श्री गिरधारीलाल व्यास : सरकार मालिक के साथ नहीं है ।

जनसंघ के कई माननीय सदस्य : हैं ।

श्री देवीदत्त गाड़िया (मुख्य सचेतक से): सैंकड़ों बीघा जमीन लेकर बैठे हैं, आप मजदूरों का खून करने वाले हो, किसानों की जमीन पर अपना कब्जा कर रखा है ।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : अंकित न हो

श्री देवीदत्त गाड़िया : × × ×

श्री गिरधारीलाल व्यास : × × ×

श्री अध्यक्ष : कुछ भी अंकित न हो ।

(शोरगुल)

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं एक छोटा सा निवेदन कर दूं । मेरी समझ में नहीं आता कि कांग्रेस के मुख्य सचेतक और बाकी कांग्रेस के माननीय सदस्य इस मामले में इतनी उत्तेजना क्यों फैलाना चाहते हैं । आखिर क्या आप उचित समझते हैं कि एक तरफ पूंजीपति हैं, एक तरफ धन्ना सेठ है, एक तरफ थैलीशाह हैं जिन्होंने 20 लाख कांग्रेस पार्टी को चुनाव के लिए दिया है ।

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : अंकित न हो ।

श्री प्रद्युम्नसिंह (उपमंत्री) : × × ×

श्री गिरधारीलाल व्यास : × × ×

श्री देवीदत्त गाड़िया : × × ×

श्री कृष्णकुमार गोयल : × × ×

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : मैं सदन की कार्यवाही स्थगित नहीं करूंगा ।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : ओनरेबुल स्पीकर सर,

श्री अध्यक्ष : नो सर ।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : पाइंट ऑफ आर्डर ।

श्री अध्यक्ष : I do not accept point of order when there is disorder. Let order be restored. You kindly resume your seat.

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : मेरा व्यवस्था का प्रश्न इस मामले में है कि····

× × × अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार भाषण अंकित नहीं किया गया ।

श्री अध्यक्ष : मैं खड़ा हो गया हूं। इसलिये स्थान ग्रहण करें। मैं माननीय सदस्यों से पुन: निवेदन करूं कि दायित्व सभी पर गम्भीर है, मुझ पर तो है या नहीं, आप स्वयं समझ सकते हैं ...

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : सर्वाधिक है।

श्री दौलतराम सारण : लेकिन मुख्य सचेतक पर नहीं है।

श्री अध्यक्ष : बहुत कुछ हो चुका है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : और गोलियां चलेंगी।

एक माननीय सदस्य : एक अभी बाकी है।

श्री अध्यक्ष : आपके दिमाग में यदि बाकी है तो वह भी हो जाएगा।

श्री विजयसिंह : उप-मंत्री खड़े हैं।

श्री अध्यक्ष : इस सम्बन्ध में निर्णय मैं कल ही दे दूंगा।

(कई माननीय सदस्य एक साथ बोलने पर)

श्री देवीदत्त गाड़िया : कल वक्तव्य चाहिये।

श्री अध्यक्ष : आप गुस्सा हो रहे हैं।

श्री देवीदत्त गाड़िया : 13 मजदूर मारे गए और आप....

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज। मेरे कहने के लिए भी गुंजाइश रखें। मैं कुछ कहना चाहता हूं। विवाद पर निर्णय का अर्थ कल का बिजनेस देख कर मैं कह दूंगा। यदि सुविधाजनक हुआ तो कल ही इस पर...

जनसंघ के कई माननीय सदस्य : स्टेटमेंट हो जाए।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आप तो वही बोलते हैं जो हम चाहते हैं।

श्री अध्यक्ष : वही मुश्किल है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : चीफ व्हिप महोदय गड़-बड़ करते हैं।

श्री अध्यक्ष : गड़-बड़ में गड़-बड़ क्यों कर रहे हैं भाई ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आप बैठकर देखलें, उनको खड़ा कर दें, फिर देखें कि गड़-बड़ होती है या नहीं।

श्री विजयसिंह (मकराना) : आप मेरी सहायता लें तो मैं कान पकड़ कर सबको निकाल दूंगा।

श्री अध्यक्ष : अच्छा आपकी सहायता लेता हूं। कर गुजरो।

(शोरगुल)

ऑर्डर प्लीज। स्थान ग्रहण करें। इस हालत में किसी के कान रहे भी हैं ?

(शोरगुल)

(कई माननीय सदस्य एक साथ बोलने लगे) मैं फिर आधे घण्टे का समय दे दूं अगर ऐसी स्थिति है लेकिन सदन की कार्यवाही स्थगित नहीं करूंगा। लेटीट्यूड दे देता हूं आधे घण्टे का। अब मैं चाहता हूं कि बहुत कुछ आपने...

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : इतना-सा आश्वासन केवल दे दें इस सम्बन्ध में कि आज स्टेटमेंट देने की स्थिति में नहीं है, यदि प्रेस्टिज पाइंट बन गया हो तो कल दे दें।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य हर समय आप इस बात को कहते हैं। मेरा प्रेस्टिज पाइंट कौनसा होता है ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : दामोदर लाल जी का ही सही।

श्री अध्यक्ष : मैं तो विभाजित हूं, मेरा विकेन्द्रीकरण किया हुआ है। ऐसी हालत में......

श्री दौलतराम सारण : केन्द्रीकरण का सोचते हैं तब गड़-बड़ होती है।

(शोरगुल)

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : हमारा अधिकार आप पर ज्यादा है।

श्री अध्यक्ष : मेरा दिल जानता है कि किसका अधिकार ज्यादा है।

श्री अध्यक्ष : मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि मेरी भावना को भी समझ लीजिये, मैं आपकी भावना को समझ गया हूं। इस पर मौन रहना ही उचित है। कहें तो आगे की कार्यवाही प्रारम्भ करें और न करें तो थोड़ा समय और दे दूं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आज करें या.........

श्री अध्यक्ष : इस आसन पर कोई बैठे कर देखे। पहले बहुत सरस रही है विधान सभायें। यह वक्त बड़ा महत्वपूर्ण है।

श्री देवीदत्त गाड़िया : वक्तव्य गृहमंत्रीजी कब दे रहे हैं इस पर आप निर्णय दे दीजिये।

श्री अध्यक्ष : मैं दे दूंगा

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : एक छोटा सा निवेदन है। मैं पूछता हूं यह गृह मंत्री जी बैठे हैं, सरकार यहां बैठी है। पब्लिक एजीटेट है और हाउस में टेम्पर है। यह हार और जीत का प्रश्न नहीं है। हम विरोधी दल में बैठे हैं। हमारा फर्ज है वह हम अदा करेंगे और 2½ करोड़ जनता के प्रश्नों को हम यहां पर उठायेंगे। आपको भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। आपके समाजवाद के खोखलेपन को हम यहां उजागर करेंगे।

श्री अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य...

(शोरगुल) (अश्रव्य)

(कई माननीय सदस्य साथ साथ बोलते रहे)

श्री अध्यक्ष : प्रतिवेदन का उपस्थापन।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : होम मिनिस्टर साहब को यह कहने में क्या आपत्ति है। उनको क्या दिक्कत है। कमिटमेन्ट न करें लेकिन होम मिनिस्टर यहां बैठे हुए हैं

श्री अध्यक्ष : कृपया स्थान ग्रहण करें।

श्रीमती लक्ष्मी कुमारी।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं लक्ष्मीकुमारी नहीं हूं।

श्री अध्यक्ष : आपके लिये लक्ष्मीकुमारी नहीं कहा।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मुझे मालूम नहीं था कि आपको हर तरफ वे दिखायी देती हैं।

श्री देवीदत्त गाड़िया : इस गम्भीर मसले पर बहस हो रही है।

प्रतिवेदन का उपस्थापन

श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत (सभापति, प्राक्कलन समिति) : अध्यक्ष महोदय, मैं निष्पादन बजट विषयक प्राक्कलन समिति 1970-71 के 118 वें प्रतिवेदन का उप-स्थापन करती हूं।

(यह प्रतिवेदन नियम 205 के अन्तर्गत अध्यक्ष महोदय को प्रस्तुत किया गया था तथा उक्त नियम के अधीन अध्यक्ष महोदय द्वारा इसके मुद्रण, प्रकाशन तथा परिचालन के आदेश दिये गये थे।)

श्री देवीदत्त गाड़िया : (अश्रव्य)
(साथ साथ बोलते रहे कई माननीय सदस्य)

श्री अध्यक्ष : उपस्थापित किया।

विधायीकार्य पुर: स्थापित किये जाने वाले विधेयक।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, यह सार्वजनिक महत्व का मसला है।

पुर:स्थापित किये जाने वाले विधेयक

उपमंत्री विधि विभाग (श्रीमती प्रभा मिश्रा) : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान विधान सभा (अधिकारियों और सदस्यों के परिलाभ) (संशोधन) विधेयक, 1971 को पुर: स्थापित करती हूं।

श्री अध्यक्ष : पुर: स्थापित किया गया।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : 7 फरवरी को जयपुर में गोलीकांड करवाया, भादरा में गोली कांड करवाया, कोटा में गोलीकांड करवाया। हम भी यह कहना चाहते हैं कि राजस्थान गवर्नमेन्ट के अत्याचार और जुल्मों के खिलाफ हम बोलेंगे, कल बोलेंगे परसों बोलेंगे और तबतक बोलेंगे जबतक कि हम दामोदर लालजी को मजबूर नहीं कर लेंगे, वैधानिक तरीके से कि वे वक्तव्य दें, तब तक बोलेंगे। आपने जो व्यवस्था दी है। सरकार द्वारा आध घंटे तक हाउस में टेन्शन होने के बावजूद भी, चार दिन हुए एडजार्नमेन्ट मोशन देने के बावजूद भी स्टेटमेन्ट देने के लिये तैयार नहीं हैं। जे. के. सिन्थेटिक्स वालों ने 20 लाख रुपया बांट दिया। सुखाड़ियाजी ने ले लिया।

(शोरगुल) (अश्रव्य)

श्री देवीदत गाड़िया : 20 लाख रुपया सुखाड़ियाजी खा गये।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : घन्ना सेठों को घोषित कर रहे हैं......

श्री अध्यक्ष : कुछ भी अंकित न हो।

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज। आर्डर प्लीज। आर्डर।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मेरे दल के नेता हार गये मुझे इसका अफसोस नहीं है लेकिन 12 लाख रुपया रूस से लिया...

(शोरगुल) (अश्रव्य)
(कई माननीय सदस्य एक साथ बोलते रहे)

श्री अध्यक्ष : क्या सदन की कार्यवाही स्थगित की जाय।

कई माननीय सदस्य : नहीं की जाय।

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : कुछ भी अंकित न हो।

(विराम)

माननीय श्री भैरोंसिंहजी आ गये हैं। स्थान ग्रहण करें। माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण करें।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार (हवामहल जयपुर) : मैं बड़ी विनम्रता से निवेदन करना चाहता हूं...

श्री अध्यक्ष : मैं भी विनम्रता से निवेदन करता हूं।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : मैं आसन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। मेरा व्यवस्था का प्रश्न है।

श्री अध्यक्ष : कृपया पहले स्थान ग्रहण करें।

माननीय विरोधी दल के नेता महोदय। आप भी सहयोग करें, शान्ति स्थापित हो जाय।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : उधर से बोलेंगे तो इधर से भी बोलेंगे।

श्री अध्यक्ष : कुछ भी अंकित न हो।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : आज मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सम्भवतः क्वेश्चन आवर में थोड़ा समय और मिल गया इसको इतना अधिक समझा जा रहा है, मैं नम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहता हूं कि हमारा बहुमूल्य समय है....

श्री अध्यक्ष : आपका क्या पोइन्ट ऑफ आर्डर है ?

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : आने वाला है ?

श्री अध्यक्ष : कब आने वाला है ?

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : मैं भी चिल्लाना शुरू कर दूं तो...

श्री अध्यक्ष : बाकी सब माननीय सदस्य चिल्ला रहे थे क्या ?

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : जोर से बोलने को चिल्लाना कह रहा हूं।

श्री विजयसिंह (मकराना) : गले फाड़ फाड़ कर भौंक रहे थे।

श्री अध्यक्ष : आप पोइन्ट ऑफ आर्डर बता दें। प्राक्कथन तो हो गया, भूमिका भी हो गई।

श्री विजयसिंह : स्वतन्त्र पार्टी को आप भी नहीं सुनना चाहते क्या ? अखबार नहीं सुनते तो न सही, आप तो सुनें।

श्री अध्यक्ष : अखबार वालों को कह दूं क्या ? मैं भी तो नहीं सुन पा रहा हूं, कौनसा आपका पोइन्ट ऑफ आर्डर है।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : गृहमन्त्री महोदय ने यह कहा ...

श्री अध्यक्ष : मैं समझ गया आपकी बात को कि आप क्या कहने जा रहे हैं।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : आपने कल्पना कैसे कर ली ?

श्री अध्यक्ष : आप भी तो कल्पना के व्यक्ति हैं।

श्री दुर्गालाल बाद्दार : एक मिनिट में व्यवस्था होती है । गृहमन्त्री सिर्फ इतना कह दें कि वे स्टेटमेंन्ट आज देंगे या कल ।

श्री अध्यक्ष : मेरी व्यवस्था अवशेष है ।

श्री दुर्गालाल बाद्दार : सारे राजस्थान को ला एण्ड आर्डर की जिम्मेदारी जिस व्यक्ति के कन्धों पर हम मानकर चलते हैं ।

श्री अध्यक्ष : आप भी मानने वाले नहीं हैं ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : ये सुखाड़िया जी को बिना पूछे एक शब्द नहीं कहेंगे क्योंकि जे. के. से 20 लाख रुपया उन्होंने लिया है ।

श्री रोशनलाल शर्मा (सलूम्बर) : तापड़िया से आपने कितना लिया ?

(शोरगुल : अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : अंकित न हो ।

(अनेक मा. सदस्यों के एक साथ बोलने पर अंकित नहीं किया गया) XXX

श्री दौलतराम सारण : बेगुनाह मजदूरों की निर्मम हत्या को राजनैतिक मुद्दा न बनाया जावे । सरकार अपने दायित्व को अनुभव करे । जो प्रश्न उपस्थित हुआ है उसकी अहमियत की ओर देखे । इससे जनता में भावना पैदा होती है उसको महसूस करें और अपने दायित्व को समझ कर जिद्द न करें । वक्तव्य देने के लिये समय की घोषणा करें । आज या कल जो समय भी चाहें । पर इस तरह डिसआर्डर मुख्यमन्त्री के सदस्यों की ओर से सत्ता पार्टी की ओर से यहां जो किया जा रहा है, सेठ राजा और हार जीत के प्रश्नों को इसमें मिलाया जा रहा है यह सर्वथा अनुचित है और सर्वथा निन्दनीय है । मैं यह कहना चाहता हूं कि इस अवलम्बनीय लोक महत्व के प्रश्न को जन जीवन और जन संपत्ति की रक्षा के प्रश्न को इस प्रकार से उपेक्षित न किया जावे । अवहेलना न की जावे ।

श्री गिरधारीलाल व्यास : (अश्रव्य : शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : अंकित न हो ।

(अत्यन्त शोरगुल : अश्रव्य : पीठासन आदेशानुसार अंकित नहीं किया गया)

श्री हरिदेव जोशी : अध्यक्ष महोदय, जो कुछ भी कहा गया, मुझे उस पर ऐतराज नहीं है । अगर आप यह कहें कि मैं नहीं बोलू तो बैठ जाऊं ?

अध्यक्ष महोदय, जहां तक स्टेटमेंट का सवाल है, मैटर आपके पास सीज्ड है । जो आप आदेश देते हैं सरकार पालन करती है । अब इस बारे में अभी तक गवर्नमेंट को कोई आदेश प्राप्त नहीं है कि गवर्नमेंट कोई स्टेटमेंट दे । आज दे कल दें परसों दें इसका निर्णय आप को देना है । यह निर्णय सरकार को नहीं देना है ।

जहां तक माननीय सदस्यों का सवाल है मैं उनके इस कथन पर बहुत ऐतराज करता हूं जिस भाषा में सुखाड़ियाजी के

XXX अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार भाषण अंकित नहीं किया गया ।

(श्री हरिदेव जोशी)

लिये जो कुछ कहा जा रहा है और उसका मैं प्रोटेस्ट करता हूं और यह कहना चाहता हूं कि यह चीज जो विरोधी-पक्ष को आल इण्डिया लेवल पर अपनी हार से हुई है यहां प्रकट कर रहें है इस तरह ....

(शोरगुल : अश्रव्य)

इस विषय में पोलिटिक्स जनसंघ से आई है, कांग्रेस की ओर से नहीं आई है। जहां तक कांग्रेस की पोलिटिक्स का सवाल है हिन्दुस्तान की जनता ने उसे साफ कर दिया है, कांग्रेस की पोलिटिक्स साफ हो चुकी है।

जहां तक गोली चलने का सवाल है लॉ एण्ड आर्डर का सवाल है होम मिनिस्टर का यह उत्तरदायित्व है। सरकार का इस सदन के समक्ष उत्तरदायित्व है। आप अपना निर्णय दे दीजिये।

श्री मनोहरसिंह मेहता (मांडलगढ़) : यह स्टेटमेंट कल दिया जावे तो मामला समाप्त हो जावेगा।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : इसका मतलब अध्यक्ष महोदय, यह है अध्यक्ष महोदय ने तो आदेश दे दिया, अब वे क्या चाहते हैं। बाकी जो यहां उन्होंने पोलिटिक्स की बात कही मैं इसके लिये ऐतराज करता हूं।

श्री हरिदेव जोशी : आपको अधिकार है। पर मैं एक ही बात करना चाहता हूं। इसमें पोलिटिक्स जनसंघ की तरफ से आई है।

श्री अध्यक्ष : कुछ भी अंकित न हो।

(काफी समय तक शोरगुल : आरोप प्रत्यारोप होते रहे : पीठासन के आदेशानुसार अंकित नहीं किये गये)

श्री लक्ष्मण सिंह : इन आरोप प्रत्यारोपों से तो अध्यक्ष महोदय, मामला और बिगड़ेगा। गृह मन्त्रीजी से यह निवेदन है कि इसमें प्रेस्टीज का कोई प्रश्न नहीं है। आखिरकार गरीब मजदूर लोग मारे गये हैं। आजकल गोली लाठी का वातावरण सारे देश में है। राजस्थान में उतना नहीं है। लेकिन अगर कहीं पर गोलीकाण्ड हो और इस सदन के सदस्य उग्रता व्यक्त करें तो सरकार को उस उग्रता को शांत करने के लिए केवल मात्र यह उपाय है कि कोई न कोई स्टेटमेंट दें। अगर इस परिस्थिति को सुलझाना हो तो अध्यक्ष महोदय आपके द्वारा मैं बड़ी विनम्रता के साथ गृह मंत्रीजी को निवेदन करूंगा कि वे दो शब्द कहें। इसमें कोई प्रेस्टिज का प्रश्न नहीं है, यह तो सीधा साधा सा प्रश्न है।

श्री दामोदरलाल व्यास : अध्यक्ष महोदय, जहां तक इस गोलीकांड पर स्टेटमेंट देने का प्रश्न है, एक बात मैंने पहले भी अर्ज कर दी है कि यह मामला जुडिशियल इन्क्वायरी के लिये दे दिया गया है। दूसरा सवाल यह है कि इस पर एक एडजोर्नमेन्ट मोशन है—उसका जबाब भी सरकार ने विधान सभा के अन्दर भेज दिया है। अब आपको व्यवस्था देना है स्टेटमेंट के लिये और मैं उस आज्ञा का पालन करूंगा।

अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार भाषण अंकित नहीं किया गया।

श्री अध्यक्ष : मैं अब आधा घन्टा भी नहीं लेता हूं। अब आगे प्रश्न बढ़ाना नहीं है।

श्री नत्थी सिंह (भरतपुर) : अध्यक्ष महोदय मैं निवेदन करना चाहता हूं। यह सारा मामला जिस तरह से आपके ऊपर लाद रहे हैं उसका मतलब यह है कि....

श्री अध्यक्ष : कोई लादने का प्रश्न नहीं है।

श्री नत्थीसिंह : झगड़ा इनके इन्स्टीगेशन पर हुआ है। सारे हिंदुस्तान की राजनीति इनकी वजह से खराब हो गई है। पहले इन्होंने संजीव रेड्डी को वोट दिया...

(शोरगुल)

अब आपकी राजनीति भी साफ होने वाली है। गोली चलवा कर आपने मरवा दिया क्या समझते हैं आप ?

(शोरगुल जारी)

श्री अध्यक्ष : अंकित न हो।

श्री हरिदेव जोशी : × × ×

श्री गिरधारीलाल व्यास : × × ×

श्री अध्यक्ष : अब हो गया। स्थान ग्रहण करें।

श्री नत्थीसिंह : किस मुंह से कहते हो, बांसवाड़ा में तुम भी डूबे हो।

श्री अध्यक्ष : एक अक्षर भी अंकित न हो।

अब अंकित हो।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं यह जानकारी करना चाहता हूं कि जैसा अभी कहा है जवाब सरकार से आपके पास आ गया है। यदि अध्यक्ष महोदय के पास चला गया है तो आप यह जानकारी दे सकते हैं कि आपने अध्यक्ष महोदय को जो जवाब सरकार की ओर से दिया गया है उसमें यह रिक्वेस्ट की गई है कि उसको पोस्टपोन किया जाये। एक बात की यह जानकारी करना चाहूंगा कि आप अध्यक्ष महोदय को कुछ भी कहें उनका जो निर्णय है वह आपको मानना पड़ेगा लेकिन सरकार की इस सम्बन्ध में क्या प्रतिक्रिया है क्या सरकार इस सम्बन्ध में सदन को उत्तर देना चाहती है। क्या सरकार इस सम्बन्ध में अपना स्टेटमेंट देना चाहती है या नहीं ? पहले सरकार अपना स्पष्टीकरण करे और उसके बाद में अध्यक्ष महोदय की व्यवस्था होगी वह आपको मन्जूर करनी पड़ेगी।

श्री हरिदेव जोशी : यह प्रश्न नहीं उठता है। चेअर का जो आदेश होगा उसका पालन होगा।

श्री भैरोंसिंह : वह मजबूरी की बात होगी। आप अपनी इच्छा से इस सम्बन्ध में कहिये।

श्री हरिदेव जोशी : इच्छा का कोई प्रश्न ही नहीं है। हम चाहें या नहीं चाहें तब भी वही चीज होती है।

श्री अध्यक्ष : स्पष्टीकरण कर देता हूं। माननीय सदस्यों की भावनाओं को खूब

× × × अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार भाषण अंकित नहीं किया गया।

(श्री अध्यक्ष)

समझा हूं आज ! पहले भी कौन-सी (एक माननीय सदस्य के कहने पर)...जैसा माननीय गृह मंत्री महोदय ने कहा उन्होंने जानकारी जो मांगी गई थी वह भेज दी है। इसमें कोई शक नहीं है, प्रश्न महत्व का है और माननीय सदस्यों ने जैसा कहा कुछ इधर से और कुछ उधर से...फिर भी मेरे कोर्ट में कोई गेंद नहीं है। इसलिये मैं इस प्रश्न पर आपकी जानकारी-जिस रूप में है-उस जानकारी को देख करके पौने एक बजे हैं ढ़ाई बजे उसका निर्णय दे दूंगा और जो सारी स्थिति माननीय सदस्यों के मानस से उभरी इस प्रांगण पर या गिरी-बिखरी-उस संबंध में स्टेटमेंट के सम्बन्ध में तीन बजे के करीब सारा स्पष्टीकरण इस सम्बन्ध में कर दूंगा और मेरा ख्याल है कि मानस माननीय सदस्यों का शान्त हुआ है। मुख्यतः...

श्री भैरोंसिंह : तरीका अच्छा निकाला है।

श्री अध्यक्ष : मुख्यतः इस सदन में माननीय विरोधी दल के नेता हैं उनको मुख्य शांत करने में और सद्भाग्य से माननीय नेता जनसंघ के अकस्मात ही आ गए हैं उस पर भी शान्त वातावरण, उग्रता का वातावरण शान्त कराने में उनका भी श्रेय है। इसका मतलब है हरेक माननीय सदस्य है, कर्त्तव्यनिष्ठ है। इन शब्दों के साथ मैं अगर इजाजत दें तो...दो प्रश्न निकल गये हैं..

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं एक जानकारी करना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : क्या ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आपने कहा था सदन के प्रारम्भ में, स्थगन प्रस्तावों पर व्यवस्था देने के वक्त कि इस सम्बन्ध में सरकार से जानकारी चाही गई है।

श्री अध्यक्ष : जानकारी आ गई है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : जानकारी पहले ही भेज दी है यह गृहमंत्री ने यहां पर कहा है।

श्री अध्यक्ष : इन बातों पर न जाइये। मैं आफिस जाकर के देख लूंगा।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, यह गंभीर मामला है। इसका मतलब यह है कि एडजोर्नमेंट मोशन पर जो व्यवस्था दी गई है...

श्री अध्यक्ष : मुझे जानकारी कब मिली, आगई या नहीं मैं आफिस की बात यहां कहने की स्थिति में नहीं हूं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : सरकार से जानकारी मांगी जा रही है इसका मतलब यह है कि व्यवस्था देते समय तक आपके पास में जानकारी नहीं थी सरकार ने जानकारी नहीं दी थी।

श्री अध्यक्ष : इसका मतलब कुछ नहीं है। इसका स्पष्टीकरण हो गया है। कहां तक गलत है और कहां तक सही है।

श्री जयकृष्ण शर्मा।

सदन की मेज पर रखे जाने वाले पत्र।

श्री जयकृष्ण शर्मा (राज्य मन्त्री आयुर्वेद) : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान होमियोपैथिक चिकित्सा (संशोधन) विधेयक, 1971 को पुरःस्थापित करता हूं।

(श्री जयकृष्ण शर्मा)

अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान होमियो-पैथिक चिकित्सा (संशोधन) अध्यादेश, 1971 (अध्यादेश संख्या 3 सन् 1971) जारी करने के कारणों के विवरण को भी सदन की मेज पर रखता हूं।

श्री अध्यक्ष : श्री रामकिशोर व्यास।

श्री रामकिशोर व्यास (राजस्व मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान टेनेन्सी (संशोधन विधेयक 1971 को पुरः स्थापित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान टेनेन्सी (संशोधन) अध्यादेश, 1971 (अध्यादेश संख्या 2 सन् 1971) को जारी करने के कारणों के विवरण को भी सदन की मेज पर रखता हूं।

श्री अध्यक्ष : श्री परसराम मदेरणा।

श्रीमती प्रभा मिश्रा :(उप मन्त्री पंचायत) अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान पंचायत विधियां (संशोधन) विधेयक 1971 को पुरः स्थापित करती हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान पंचायत विधियां (संशोधन) अध्यादेश, 1971 (अध्यादेश सं० 1 सन् 1971) के जारी करने के कारणों के विवरण को भी सदन की मेज पर रखती हूं।

श्री अध्यक्ष : श्री वृद्धि चन्द जैन।

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर अग्रेत्तर वादविवाद

श्री वृद्धिचन्द जैन (बाड़मेर) : अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण को मैंने पढ़ा और इस अभिभाषण से यह स्पष्ट हो गया है कि अभिभाषण कोई मन्त्री मण्डल ने तैयार नहीं किया है बल्कि किसी भी अधिकारी ने जो कि आई. ए. एस. अधिकारी है उसने इसको तैयार किया है। जिस प्रकार सरकारी रिपोर्ट को सरकार यहां पर प्रस्तुत करती है उसी प्रकार को एक रिपोर्ट यह हमारे सामने आई है।

अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में चुनावों के बारे में जिक्र किया गया है इसलिये मैं भी इन चुनावों के बारे में जिक्र करना चाहता हूं। यह जो चुनाव पार्लियामेंट के हुए हैं हिन्दुस्तान में और राजस्थान में और इन चुनावों में जनता ने नई कांग्रेस के प्रति, श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रति जो विश्वास व्यक्त किया है उसके लिये मैं हिन्दुस्तान की जनता को और राजस्थान की जनता को धन्यवाद देना चाहता हूं। इन चुनावों से यह साबित हो गया है कि जनता ने···

श्री रामचन्द्र आर्य : लाखों वोट कटवा कर···

श्री अध्यक्ष : आप प्रारम्भ रखिये। इसका कोई मतलब नहीं है। आर्डर प्लीज।

श्री रामचन्द्र आर्य : बेईमानीपूर्ण तरीके से ये चुनाव कराये गये हैं, गलत है।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज

श्री वृद्धिचन्द जैन : जनता का प्रजातन्त्र पर अटूट विश्वास है और इन चुनावों ने यह भी साबित कर दिया है कि साम्प्रदायिक संस्थाओं जैसे अकाली दल, शिव सेना, भारतीय क्रांति दल, जनसंघ (शोरगुल)

Page No 47

(श्री वृद्धिचन्द जैन)

हां जनसंघ भी साम्प्रदायिक है, इस पर भी मैं विचार रखूंगा, वे संस्थाएं जो साम्प्रदायिक हैं··· ······

श्री रामचन्द्र आर्य : इस प्रकार की छींटाकसी ······

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज ।

(दोनों माननीय सदस्य के साथ बोलने पर अश्रव्य)

श्री वृद्धिचन्द जैन : ····भारतवर्ष की राजनीति में कोई अस्तित्व नहीं है । क्या भारतीय क्रान्ति दल, क्या शिव सेना और क्या जनसंघ ···

श्री जय नारायण सालोदिया : मुस्लिम लीग भी ।

श्री वृद्धिचन्द जैन : मुस्लिम लोग भी कहिये, ये सब असफल हुये हैं और यह भी साबित हो गया है कि जनसंघ स्पष्ट तौर से राजाओं की गोद में चली गई है । उनके जो बड़े नेता अटल बिहारी जी है वे भी ग्वालियर की राजमाता, विजय राजे सिन्धिया की मदद से जीते हैं । वे अपने क्षेत्र को छोड़कर दूसरे क्षेत्र में गये हैं और वहां पर राजाओं की मदद से जीते हैं ।

श्री विजयसिंह : राजाओं का तो आप अस्तित्व मानते हैं न ।

श्री वृद्धिचन्द जैन : यहां पर जो जन संघ के जीते हैं वे जीते है पूंजीपतियों के बल पर जीते है । जनसंघी कार्यकर्ताओं की कोई जीत नहीं हुई है और मैं विशेष तौर से यह भी कहना चाहता हूं राजस्थान में जो आर० एस० एस० की प्रवृत्ति है वह बड़ी घातक है । वे घुस गये हैं । गवर्नमेंट सर्वेन्ट आर० एस० एस० माइन्डेड हैं और गवर्नमेंट विशेष ध्यान नहीं दे रही है । गवर्नमेंट को अपने सी० आई० डी० को सजग करना चाहिये और जो गवर्नमेंट सर्वेन्ट आर० एस० एस० माइन्डेड है, आर० एस० एस० ओरियन्टेड है उनके खिलाफ सख्त कदम लिया जाना चाहिये । उन्होंने छोटे छोटे बच्चों के दिमाग को कलुषित किया है, छोटे छोटे बच्चों के दिमाग में जहर डाला है । इस प्रकार के विद्यार्थी और आर० एस० एस० के टीचर्स है, जो वर्कस है, जो लेक्चरार्स है और जो इस प्रकार की इन्स्टीट्यूशन्स है उन लोगों के लिये गवर्नमेंट को सजग होना है और उन पर सख्त से सख्त कदम उठाना है । अब हमारे हाथ मजबूत हो गये हैं, इन्दिरा जी के हाथ मजबूत हो गये हैं तो सबसे पहले यह कदम उठाना है····

श्री रामचन्द्र आर्य : (बीच में बोलते रहने पर, अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर ।

(व्यवधान)

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : गवर्नमेंट सर्वेन्ट्स आर० एस० एस० माइन्डेड है और समाजवाद के कट्टर शत्रु है । इन पर सख्त कदम उठाना चाहिये । अगर सख्त कदम नहीं उठाते हैं तो समाजवाद को बाधा आती है ।

श्री रामचन्द्र आर्य : कहां है आपका समाजवाद ?

(व्यवधान, अश्रव्य)

Page No 48

श्री अध्यक्ष : श्री रामचन्द्र आर्य ।

(श्री रामचन्द्र आर्य बराबर बोलते रहे, अश्रव्य)

श्री रामचन्द्र आर्य

श्री रामचन्द्र आर्य : (अश्रव्य) बाजार में गाड़ियाँ रोकी है....

श्री अध्यक्ष : अंकित न हों ।

(श्री रामचन्द्र आर्य का भाषण अंकित नहीं किया गया) आरम्भ रखिये (श्री वृद्धि चन्द्र जैन से)

श्री वृद्धि चन्द्र जैन : गवर्नमेंट मशीनरी जो है वह असामाजिक माइन्डेड है....

(पुनः व्यवधान)

यह मशीनरी आइ० ए० एस० और आर० ए० एस० आफिसर सोशलिस्ट ओरियन्टेड नहीं है । जो अधिकांश आर० एस० एस० आफिसर्स है उनमें रैड टेपिज्म भरा हुआ है । इस मशीनरी को हम ठीक नहीं करेंगे तो जो हमारी नीतियां हैं, उनका पालन नहीं होगा । इस गवर्नमेंट मशीनरी को ठीक नहीं करेंगे और हम सजग नहीं होंगे तो यह समाजवाद के लिए बहुत बाधक होगी । मैं सबसे पहले यह कहना चाहता हूं, गवर्नमेंट को यह निवेदन करना चाहता हूं, यह रिक्वेस्ट करना चाहता हूं कि अगर समाजवाद को लाना चाहते हैं तो जो गवर्नमेंट मशीनरी है और जो रेड टेपिज्म पर विश्वास करते हैं, जो आर० एस० एस० ओरियन्टेड हैं उस मशीनरी को सबसे पहले ...

श्री रामचन्द्र आर्य : गवर्नमेंट मशीनरी पर तो आप छाये हुये हो और उनकी बुराई करते हो जिनके बल बूते पर आप जमे हुये हो .....

(दोनों माननीय सदस्यों के साथ साथ बोलने पर अश्रव्य)

श्री वृद्धि चन्द्र जैन : ....अगर मंत्री मण्डल के सदस्यों पर 40 लाख का खर्चा किया जाता है यह भी हम बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं । इन्दिरा गान्धी समाजवाद को लाना चाहती है, इन्दिरा जी का कदम आगे बढ़ा है और जनता ने त्याग किया है तो मंत्री मण्डल को भी त्याग करना पड़ेगा और आपको भी ईमानदारी बरतनी पड़ेगी आपको भी ईमानदारी के साथ चलना पड़ेगा अगर आप ईमानदारी नहीं बरतेंगे, खर्चों में कटौती नहीं करेंगे, जो बिजली पानी के खर्चे हैं उनमें कमी नहीं करेंगे अपने टूर्स पर पाबन्दी नहीं करेंगे, आपके अधिकांश टूर होते हैं । अपनी मौज के लिये टूर करते हैं उनमें कमी नही करेंगे तो अब जनता बर्दाश्त करने वाली नहीं है । हमें उनको सजग करना होगा और अगर कोई मंत्री सजग नहीं होंगे तो जनता कभी उनको बर्दाश्त नहीं करेगी, अब कांग्रेस भी उनको बर्दाश्त नहीं करेगी । उन मंत्रियों की अब कोई ठेकेदारी नहीं है । जब हमारी इन्दिरा जी इतनी कोशिश कर रही है और अगर हमारा मंत्रीमण्डल ईमानदारी पर नहीं चलेगा तो हम कभी भी बर्दाश्त नहीं करेंगे जो धनराशि एकत्रित करते हैं, जो पूंजी इकट्ठी करते हैं वह अनुचित तरीके से करते है । वह हमारे समाजवाद को नुकसान पहुंचाने वाली है, कांग्रेस को नुकसान पहुंचाने वाली है । मैं यह चाहता हूं हमारा मंत्रीमण्डल चेत जाय, परिवर्तन कर ले

××× अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार भाषण अंकित नहीं किया गया ।

(श्री वृद्धिचन्द जैन)

और अगर परिवर्तन नहीं करेगा तो उसकी भी स्थिति अच्छी नहीं होगी, उसकी भी यही दुर्गति होगी। हम एम. एल. एज और सदस्यों को भी अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये। हमारे व्यवहार के अन्दर ईमानदारी होनी चाहिये, हम अपने जीवन में ईमानदारी बरतें। अगर ईमानदारी और सच्चाई नहीं बरती गई तो जनता बर्दाश्त नहीं करने वाली है। हम भाषण तो देंगे समाजवाद का और जीवन में उस समाजवाद को बरतेंगे नहीं तो जनता कभी भी मानने वाली नहीं है इसलिये हमारा, सदस्यों का जीवन और मंत्रीमण्डल के सदस्यों का जीवन समाजवाद के अनुरूप ढालना होगा और अगर हमने अपने जीवन को इस प्रकार का नहीं ढाला तो जनतन्त्र को बहुत बड़ा खतरा पहुंचने वाला है और इसके लिये कोई जनता जिम्मेदार नहीं होगी क्योंकि जनता ने तो अपना विश्वास प्रकट कर दिया है।

अब दूसरी चीज अकाल के बारे में निवेदन करना चाहता हूं। गवर्नमेंट ने सं. 25 और 26 में अकाल में बहुत मदद दी है ......

(हां पक्ष की ओर आपसी बातचीत करने पर)

श्री अध्यक्ष : बातचीत बाहर हो तो अच्छा है। बातचीत करनी है तो बाहर चले जायें।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : पिछले साल 175 गांवों में अकाल का काम था और बाड़मेर अकेले जिले में 125 गांव अकाल में थे। अभी सरकार ने कोई भी अकाल राहत कार्य बाड़मेर में नहीं खोले हैं। अभी भी कई गांवों में दो दो, तीन तीन और चार चार साल से अकाल है और इस साल भी अकाल की छाया में है उन गांवों में अकाल राहत के कार्य जल्दी खोले जाने चाहिये। 125 गांवों में तीन तीन, चार चार और पांच पांच साल से अकाल है, गवर्नमेंट को जल्दी ही वहां पर अकाल राहत कार्य खोलने चाहिये और इस पर जल्दी कदम उठाना चाहिये। उनकी बहुत बड़ी दुर्गति हो रही है। पीने के लिये पानी नहीं मिल रहा है। शिव, रावतसर, चूली, भादेडा आदि बाड़मेर जिले के गांवों में पहले टैंकर द्वारा पानी पहुंचाया जाता था। अबकी बार पानी पहुंचाने की कोई व्यवस्था नहीं की। यह कार्य किया जाना चाहिये। पहलें अकाल के समय पेयजल की स्कीम चालू की थी, जिन जिन गांवों में अकाल है उन गांवों में अकाल राहत कार्यों के अन्तर्गत पाइप लाइन की स्कीम शुरु की जानी चाहिये। पीने के पानी के बारे में जो ट्यूब वैल्स की स्कीम है और जिन गांवों में पानी का संकट है वहां पर पानी पहुंचाने की व्यवस्था की जानी चाहिये— पानी की फ्री सप्लाई की व्यवस्था करनी चाहिये अकाल के स्थाई हल के लिए जो राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के अन्दर जिक्र किया है कि अकाल के स्थाई हल के लिए दस जिलों के अन्दर प्रत्येक में चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत 2 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है वह बहुत ही अपर्याप्त व्यवस्था है। अकाल का इस प्रकार से स्थाई हल नहीं हो सकता। अकाल का स्थाई हल करना चाहते हैं तो उसके लिए करोड़ों रुपया खर्च करने की आवश्यकता है और वह योजना पूरी

(श्री वृद्धिचन्द्र जैन)

प्लाण्ड वे से तैयार करके बनाई जा सकती है और उसके लिए राजस्थान नहर जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण नहर है, राष्ट्रीय महत्व की नहर है उसके लिए मेरा निवेदन है कि राज्य सरकार को और इस सदन को यह अनुरोध करना चाहिए कि केन्द्रीय सरकार इस नहर को अपने हाथ में लें। राज्य सरकार इस नहर को किसी प्रकार से सम्पूर्ण नहीं करा सकती है और इस नहर पर जिस रफ्तार से कार्य चल रहा है उस हिसाब से यह आगे बीस सालों में पूर्ण नहीं हो सकती क्योंकि यह 175 करोड रुपये की योजना है और ज्यों ज्यों साल बीतते जायेंगे खर्चा बढ़ता जायेगा और यह करीब 200–250 करोड़ की योजना होगी और हो सकता है कि इससे भी ज्यादा रुपया खर्च करना पड़े जिसमें बीस साल लग जायेंगे। इसलिए मैं यह चाहता हूं कि राज्य सरकार भी यह कोशिश करे और सदन का भी निवेदन है कि केन्द्रीय सरकार इस योजना को अपने हाथ में ले और इस चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्दर ही इस योजना को सम्पूर्ण कर लें। इस योजना के सम्पूर्ण होने पर जो जैसलमेर का रेगिस्तानी क्षेत्र है उसकी आबादी बढ़ जायेगी और पैदावार भी बढ़ जायेगी और रक्षा के दृष्टिकोण से भी यह महत्वपूर्ण नहर होगी जैसे इच्छोगिल कैनाल है उसी तरह से यह एक महत्वपूर्ण कैनाल होगी।

दूसरे जो मैं विशेष उल्लेख करना चाहता हूं वह डेजर्ट डवलपमेन्ट बोर्ड के बारे में है। इस डेजर्ट डेवलपमेंट बोर्ड का क्या हुआ ? आपने इसका पहले जोधपुर में आफिस स्थापित किया और फिर जयपुर में किया लेकिन इसमें कोई प्रगति नहीं हुई। तो इस प्रकार से आप बोर्ड की स्थापना करें और फिर उसमें कोई कदम नहीं उठायें, कोई स्कीम का इम्पलीमेन्टेशन नहीं करें तो यह उचित नहीं है। पानी के बारे में बार–बार जोर दिया गया और इसके लिए एक गैर सरकारी रेज्योल्यूशन माननीय सदस्य श्री रघुनाथ जी बिश्नोई ने रखा था उसके लिए गवर्नमेंट ने पूरी तरह से विश्वास दिलाया था और यह स्वीकृति दी थी कि हम पेयजल निवारण की व्यवस्था करेंगे लेकिन उसके लिए कोई व्यवस्था नहीं हुई।

श्री लक्ष्मणसिंह : आप पूछिये क्या किया सरकार ने ?

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : पेयजल के बारे में सरकार ने अभी तक कोई कदम नहीं उठाया। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जो भी स्कीम्स पानी के बारे में मन्जूर हुई उनके लिए भी 5 प्रतिशत आपने पब्लिक कन्ट्रीब्यूशन का रखा है और इन पाइपलाइन्स स्कीम पर कहीं तो 20 लाख रुपया लगता है, कहीं 30 लाख रुपया लगता है और कहीं 40 लाख रुपया लगता है और 5 परसेन्ट के शेयर से मतलब है कि कहीं 4 लाख पड़ता है, कहीं 2 लाख पड़ता है और जनता किसी भी सूरत में यह 5 प्रतिशत कन्ट्रीब्यूट नहीं कर सकती और जब जनता कन्ट्रीब्यूट नहीं कर सकती तो किसी तरह से यह योजना आपकी सेक्शण्ड हो तो भी इनकी कोई यूटीलिटी नहीं है। तो राज्य सरकार को चाहिए कि केन्द्रीय सरकार से प्रार्थना करे कि 5 परसेन्ट का कन्ट्रीब्यूशन इस बैकवर्ड एरिया के अन्दर जहां पानी का संकट है, जहां अकाल छाया रहता है, जहां लोगों की आर्थिक स्थिति कमजोर है वहां किसी भी सूरत में 5 परसेन्ट कन्ट्रीब्यूशन नहीं दिया जा सकता और जब 5 परसेन्ट कन्ट्रीब्यूशन

(श्री वृद्धिचन्द जैन)

नहीं दिया जा सकता तो पाइपलाइन की योजना शुरू नहीं करती है सरकार। तो जो यह 5 परसेन्ट कन्ट्रीब्यूशन की शर्त है इसको हटा देना चाहिए जबकि नगरों के अन्दर सरकार कोई भी कन्ट्रीब्यूशन नहीं लेती और गांवों की जनता जो कि दस, दस और बारह, बारह मील से पानी लाती है उसके लिए आप शर्त लगाते हैं तो यह किसी तरह से भी उचित नहीं है और मैं निवेदन करना चाहता हूं कि राज्य सरकार को केन्द्रीय सरकार को जल्दी से जल्दी मूव करना चाहिए कि इसके बारे में व्यवस्था करें और 5 परसेन्ट कन्ट्रीब्यूशन को हटाया जाये। यही मेरा विशेष निवेदन है और पानी के बारे में बोरिंग का प्रश्न आता है तो बोरिंग बाड़मेर और जैसलमेर जिले में किया गया हैं लेकिन यह उन स्थानों पर किया गया है जहां कि रोड्स हैं, जहां डामर की सड़कें हैं वहां इनकी मशीनें जा सकती हैं लेकिन ऐसे भी इलाके हैं जहां अभी तक ट्यूबवेल्स नहीं खोदे गये हैं तो जल्दी से जल्दी उन स्थानों पर भी ट्यूबवेल्स खुदवाइये क्योंकि वहां भी पानी का भारी संकट हैं, इसलिए ट्यूबवेल्स के बारे में भी कदम उठाने चाहिएं। पहले एक साल में हमने देखा कि इसके अन्दर रफ्तार तेज थी लेकिन राजस्थान गवर्नमेंट इसके अन्दर दिलचस्पी नहीं ले रही है। राजस्थान गवर्नमेंट को चाहिए कि और ऐसे ट्यूबवेल्स खोदे, जहां रोड्स नहीं हैं वहां भी खोदे और वहां की पानी की समस्या को हल करे। पहले भी राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में था कि फोडर बैंक्स की स्थापना की जाये लेकिन बाड़मेर और जैसलमेर जिले में कहीं भी फोडर बैंक्स की स्थापना नहीं हुई। इस साल बहुत ही ज्यादा घास पैदा हुई है और फोडर बैंक्स की स्थापना की जा सकती थी लेकिन स्थापना नहीं हुई और इस संबंध में कोई व्यवस्था नहीं की गयी। इस प्रकार राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में इस प्रकार का जिक्र कर दिया है लेकिन पालन नहीं करते हैं यह उचित नहीं है।

अब मैं चिकित्सा के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। मेरा यह कहना है कि बाड़मेर और जैसलमेर जिलों को विशेष तौर से बिल्कुल इग्नोर किया गया है। बाड़मेर टाउन के अन्दर जो कि डिस्ट्रिक्ट हैडक्वार्टर है वहां कोई भी एम० एस० डाक्टर नहीं है। वहां कोई भी सर्जन नहीं है और हरएक इलाज के लिए जोधपुर आना पड़ता है। मैं बार बार स्वास्थ्य मंत्री जी से निवेदन कर चुका हूं कि वहां पर सर्जन की बहुत आवश्यकता है। एम० एस० की आवश्यकता है जो कि इलाज कर सके और गरीब जनता को जोधपुर आना पड़ता है। कोई वहां पर एम० डी० नहीं है, कोई एक्सपर्ट नहीं है, कोई फिजिशियन नहीं है और इन सबके अभाव में इन लोगों को चिकित्सा में सुविधा नहीं मिल पाती है। वहां पर कोई प्रसूतिगृह नहीं है। वहां पर स्त्रियों के इलाज के लिए कोई व्यवस्था नहीं है, यह बिलकुल ही उनके साथ में जुल्म है। वहां पर 50 प्रतिशत तो मेल की आबादी है और 50 प्रतिशत फीमेल की आबादी है लेकिन उन 50 प्रतिशत फीमेल के लिए प्रसूतिगृह की कोई व्यवस्था नहीं है। इसी तरह से बैकवर्ड एरियाज के अंदर बैड्स बढ़ाना चाहते हैं तो उसके लिए 50% कन्ट्रीब्यूशन होना चाहिए। वहां की जनता आप ही बतायें कि किस प्रकार से कन्ट्रीब्यूट करे, बहुत डिफिकल्ट है।

(समय समाप्ति सूचक घंटी)

(श्री वृद्धिचन्द जैन)

कुछ एरियाज के अन्दर जहां आर्थिक स्थिति कमजोर है उन क्षेत्रों के अन्दर 50% शेयर नहीं लिया जाना चाहिए और उनके लिए रिलेक्सेशन करना चाहिए।

बिजली के बारे में भी कहना चाहता हूं। बिजली के बारे में बाड़मेर और जैसलमेर जिले अभी तक पिछड़े हुए हैं। वहां पर कोई भी बिजली के बारे में व्यवस्था नहीं है। इस क्षेत्र को न तो चम्बल योजना से कनेक्ट करने की योजना है और न भाखरा से कनेक्ट करने की कोई योजना है। अब आप ही बतायें कि किस प्रकार से इस क्षेत्र का विकास करेंगे। बिजली के बिना उद्योग धंधे नहीं पनप सकते। डीजल सेट्स के जरिये ही पानी आदि की व्यवस्था होती है और वह बहुत ही महंगा पड़ता है इसलिए यह आवश्यक है कि वहां पर भी उद्योग धंधे बढ़ाये जायें और इसलिए आवश्यक है कि बिजली को चम्बल योजना से कनेक्ट किया जायें। पचभद्रा तक तो आ गयी है तो वहां से बाड़मेर टाउन तक यह बढ़ाई जा सकती है और जो गाइडेंस स्कीम्स हैं उसको भी सम्पूर्ण किया जा सकता है बाड़मेर जिले में तो इस प्रकार से पंचायत समिति के हैड क्वार्टर्स और तहसील के हैड क्वार्टर्स को भी सम्बन्धित नहीं किया गया है विजली से, तो उनको सम्बद्ध किया जाना चाहिए। इस प्रकार जैसलमेर में भी तहसील हैड्क्वार्टर्स को और पंचायत समिति हैडक्वार्टर्स को सम्बद्ध नहीं किया गया है। बाड़मेर जैसलमेर के बारे में इस प्रकार से सौतेला व्यवहार किया जा रहा है। इलाका बहुत दूर है तो आपको यह मालूम होना चाहिए कि वह सीमावर्ती इलाका है और सुरक्षा की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इस इलाके की प्रगति नहीं की गई तो पहले जो स्थिति थी हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के युद्ध में हुई थी और हमारे क्षेत्र की दुर्गति हुई थी और पाकिस्तान की फोर्सेज ने हमारे क्षेत्र में प्रवेश कर लिया था उसी प्रकार की स्थिति फिर हो सकती है। हम नहीं चाहते हैं कि इस प्रकार से फिर पाकिस्तानी फोर्सेज हमारे क्षेत्र में घुसें। राजस्थान को कितना ही खर्च करना पड़े या सेन्ट्रल गवर्नमेंट को मदद करना पड़े लेकिन सीमावर्ती क्षेत्रों की रक्षा करना है और उसका विकास करना है। उस क्षेत्र का यदि विकास करना है तो बिजली के क्षेत्र में विकास करना है और हर तरह से इस क्षेत्र का विकास करना है। यह आवश्यक है कि बिजली के बारे में गवर्नमेंट को सोचना चाहिए कि तहसील हैड क्वार्टर्स और पंचायत समिति हैड क्वार्टर्स और बाड़मेर टाउन के अन्दर बिजली की व्यवस्था नहीं है वह व्यवस्था हो। बाड़मेर में अभी एक मामूली सा पावर हाउस है। उसके अन्दर भी निकम्मे से निकम्मे सेट लगे हुए हैं। कोई नया सेट नहीं है। इसलिए नया पावर हाउस बनाया जाना चाहिए और उसके बारे में पूरी व्यवस्था बिजली के बारे में करना चाहिए। इसलिए मेरा यही अनुरोध है कि बिजली के बारे में गवर्नमेंट जो है वह पूरी तरह से ध्यान दें।

अब मैं इस बात पर आना चाहता हूं बेरोजगारी के प्रश्न पर। यह एक विकट प्रश्न है। इस विकट प्रश्न को सुलझाने का नई कांग्रेस ने संकल्प किया हैं, वायदा किया है कि वह बेरोजगारी हटायेगी। अभिभाषण

(श्री वृद्धिचन्द जैन)

में जो दिया गया है उसके अन्दर हर डिस्ट्रिक्ट के अन्दर 1000 व्यक्तियों को उन परिवारों में से एक एक सदस्य के हिसाब से जिनको कोई धन्धा नहीं मिला हुआ हो, उनको काम में लगायेंगे। यह भी अगर आप इम्प्लीमेंट करें तो इस साल 26000 लोगों को रोजगार मिल सकता है। इसका इम्प्लीमेंटेशन करना है। यह एक छोटा सा कदम भी आप उठाते हैं तो आपके बारे में विश्वास बनता है, आपके प्रति सहानुभूति जनता की होती है। तो यह कदम भी आपको उठाना चाहिए।

बैंकों के बारे में मैं यह कहना चाहता हूं कि बाड़मेर डिस्ट्रिक्ट में किसी भी छोटे काश्तकारों को बैंकों का लाभ नहीं मिला है। स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर है, वह कतई लोन नहीं देता है। वह केवल गवर्नमेंट का ही वर्क फन्क्शन करता है। राष्ट्रीयकृत बैंकों में से किसी की भी वहां पर ब्रांच नहीं खोली गई है। वह खोली जाय और छोटे काश्तकारों को भी ऋण मिले, मूर्तियों का जो धन्धा करते हैं उनको भी ऋण मिले, लुहार को भी ऋण मिले, और छोटे छोटे धन्धे करने वालों को भी ऋण मिले। इसकी व्यवस्था करनी चाहिए और गवर्नमेंट के द्वारा इसके बारे में गारन्टी दी जानी चाहिए। हमने बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया और बैंकों के राष्ट्रीयकरण करने से छोटे (समय समाप्ति-सूचक घन्टी) काश्तकारों को, छोटे मजदूरों को, छोटे धन्धे करने वालों को मदद नहीं पहुंचती हैं तो हम अपना कर्तव्य नहीं करते हैं।

श्री अध्यक्ष : अब शीघ्र समाप्त करें।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : मैं जल्दी से जल्दी समाप्त कर रहा हूं।

अब मैं शिक्षा के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। प्राथमिक शालाओं के बारे में विशेष तौर से कहना चाहता हूं। अभी तक हमारे यहां गांवों में 6 मील, कोई 8 मील, और कोई 10 मील की दूरी से पढ़ने के लिए बच्चों को आना पड़ता है। प्राथमिक शिक्षा के लिए बहुत से गांवों में स्कूल नहीं खोले गये हैं। वहां पर स्कूल खोलने चाहिएं। लोगों की इच्छा हैं पढ़ने की लेकिन स्कूलों के अभाव में वे नहीं पढ़ सकते हैं। इसलिए प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था रेगिस्तानी क्षेत्र में करनी चाहिए।

यह भी मेरा एक विशेष अनुरोध है कि जब तक हम शिक्षा की पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन नहीं करेंगे क्योंकि इस शिक्षा ने लोगों को बेरोजगार बनाया है। जो लड़के पढ़ेंगे वे आठवीं दसवीं तक पढ़ेंगे तो उनको कोई नौकरी नहीं मिलने वाली हैं, और जब नौकरी नहीं मिलेगी तो काफी समस्याएं पैदा होने वाली है। यह समस्या बहुत से क्षेत्रों में भयंकर रूप धारण कर चुकी है। हमारे क्षेत्र में भी भयंकर रूप धारण कर लिया है। इस पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन करना है और इस प्रकार की पद्धति करना है जिससे शिक्षा प्राप्त करके लड़के अपने आप अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इस प्रकार की प्रैक्टिकल शिक्षा देना है, और इसके लिए हमें सोचना है। तो शिक्षा के बारे में हमें कदम उठाना चाहिए और उसके लिए भी हमको कोशिश करनी चाहिए।

मैं रोड्स के बारे में भी कुछ कहना चाहता हूं। हमारे सीमावर्ती क्षेत्र में रोड्स बनी हैं लेकिन रोड्स के मेन्टीनेन्स की कोई

(श्री वृद्धिचन्द जैन)

व्यवस्था नहीं है। सीमावर्ती क्षेत्र में बड़ी बड़ी डामर रोड्स बनी हुई हैं और उनसे बड़ा लाभ पहुंचा है हमको लेकिन, रोड्स के मैंटीनेन्स की व्यवस्था नहीं होने से यह स्थिति आ सकती है। दो तीन सालों में ये प्रोजेक्ट रोड्स, डिफेन्स रोड्स भी खत्म हो जायगी और करोड़ों रुपया जो खर्च किया हुआ है और सेन्ट्रल गवर्नमेंट ने किया है वह बिल्कुल उब जायेगा। मैंटीनेन्स की व्यवस्था राजस्थान सरकार करे और अगर राजस्थान सरकार नहीं कर सकती है तो सेन्ट्रल गवर्नमेंट को रिक्वेस्ट करे और सेन्ट्रल गवर्नमेंट को सदन रिक्वेस्ट करे, मैं रिक्वेस्ट करता हूं कि सेन्ट्रल गवर्नमेंट इन रोड्स का मैंटीनेन्स करे। अगर इन रोड्स के मैंटीनेन्स की व्यवस्था नहीं की गई तो रोड्स 2-3 सालों में ही समाप्त हो जायेगीं। इनका कोई महत्व नहीं रह जायेगा। यह एक बहुत बड़ी डिफिकल्टी पैदा हो जायगी। सुरक्षा की दृष्टि से यह आवश्यक है कि इन रोड्स के मैंटीनेन्स के लिए राजस्थान मंत्रि-मण्डल पूरा ध्यान दे और केन्द्रीय मंत्री-मंडल का ध्यान आकर्षित करे और इन रोड्स के मैंटीनेन्स के बारे में पूरी व्यवस्था की जाय।

अब नशाबन्दी के बारे में कुछ शब्द कहना चाहता हूं। बाड़मेर और जालौर जिलों में नशाबन्दी की गई। नशाबन्दी के कानून का मैं तो यह कह सकता हूं कि एक्साइज डिपार्टमेंट कुछ भी पालन नहीं करता है। एक्साइज डिपार्टमेंट खुद जो है वह शराब की बोतलों का धन्धा करता है। मुझे यह कहते हुए शर्म आती है। वहां के आफिसर्स शराब का धन्धा करते हैं और मार्केट में जो आती है शराब वह उनके जरिये ही आती है। यह एक खतरनाक प्रवृति है। पुलिस कोई एक्शन नहीं लेती हैं। पुलिस का थानेदार वहां का शराब पीता है, हैड कान्स्टेबल्स शराब पीते हैं। आपने तो शराबबन्दी की और इसका इम्प्लीमेंटेशन इस प्रकार से हो रहा है।

श्री विजय सिंह : × × ×

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज एक्सपन्ज।

श्री विजय सिंह : इसमें एक्सपन्ज की क्या बात हो गई है। यह बात सही है।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज, एक्सपन्ज, एक्सपन्ज।

श्री रघुनाथ विश्नोई : क्या बेवकूफी की बात करते हो।

श्री माधोसिंह : माननीय सदस्य तो रोजाना भांग पीकर आते हैं।

श्री विजय सिंह : मैं 24 घन्टे शराब में दुत्त रहता हूं।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री वृद्धिचन्द जैन : यह मैं कह रहा हूं शराब बन्दी के बारे में। मैं एक्साइज डिपार्टमेण्ट में और पुलिस के खिलाफ बड़ी जिम्मेवारी के साथ में कह रहा हूं। यह जो मैं सदन में कह रहा हूं वह मैं इसलिए कह रहा हूं कि मैं बराबर देख रहा हूं और देख कर बड़ी जिम्मेवारी के साथ कह रहा हूं।

× × × अध्यक्षीय आदेश से शब्द कार्यवाही से निकाले गये।

(श्री वृद्धिचन्द जैन)

गवर्नमेंट को चाहिए कि इस प्रकार की शराबबन्दी के बारे में जो इम्प्लीमेन्टेशन की आफिसर्स की जिम्मेदारी है और इस प्रकार से करते हैं उनको सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए। आप जांच करवाये तो मैं मदद कर सकता हूं और पूरी तरह से मदद कर सकता हूं। खुद कोतवाली चोरी का धन्धा करे एक्साईज डिपार्टमेंट चोरी का धंधा करें तो बड़ी खतरनाक बात है। हमने यह संकल्प किया है कि अप्रेल 72 से शराब बन्द करेंगे लेकिन इसके बारे में राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में कुछ भी नहीं कहा गया है। अगर शराब बन्द करना चाहते हैं और खुशी के साथ करना चाहते हैं, कुछ सिद्धान्तों पर करना चाहते हैं और उसको पूरी तरह क्रियान्वित करें कोरी घोषणा करने से कोई फायदा नहीं है। घोषणा करके उसको क्रियान्वित नहीं करते हैं तो जनता को धोखा देना है। राजस्थान की 95 पर्सेन्ट जनता शराब के खिलाफ है। वह शराब का प्रयोग नहीं चाहती है, लेकिन गवर्नमेंट सर्वेन्ट्स अभी तक शराब का प्रयोग कर रहे हैं। इसी प्रकार से कुछ एम० एल० ए० इस सदन में शराब पीकर आते हैं यह अपने लिए बड़े शर्म की बात है।

श्री मनोहरसिंह मेहता : बहुत अच्छा।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : अब मैं सीलिंग के बारे में कहना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : अब समाप्त करें।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : दो मिनिट।

श्री दौलत राम सारण : मन्त्रि-मण्डल के सदस्य पीते हैं उनका क्यों नहीं कहते हैं?

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : मन्त्रि-मण्डल के सदस्य भी पीते हैं तो वह अच्छा नहीं करते हैं।

श्री विजय सिंह : मन्त्रि-मण्डल के भूतपूर्व सदस्य का भी नाम लो।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : सीलिंग के कानून के बारे में जो कानून बना है उसको सन्तोषजनक नहीं मानता हूं।

परन्तु जैसा भी आप ने बनाया है, उसी कानून को आप इम्पलीमेण्टेशन कराइये। और जो राजाओं के पास बड़ी बड़ी जमीनें है जिनके पास एक लाख, किन्हीं के पास दो लाख बीघा जमीन। अब जब जनता ने नया फैसला दे दिया है तो इन राजाओं के खिलाफ, पूंजीपतियों के खिलाफ, सामन्तशाही के खिलाफ कड़े कदम उठाइये। भूमिहीनों को जमीन दीजिये।

श्री विजयसिंह : वह आपके पास बैठे हैं।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : यह सरकार के लिए आवश्यक हो गया है।

(समय समाप्ति सूचक घण्टी)

आपको जल्दी से जल्दी प्रगतिशील कदम उठाने चाहिए। ऐसे कदम राज्य सरकार उठाये कि लोगों की स्थिति में अन्तर आये। मैं यह भी निवेदन करूंगा कि राजस्थान सरकार प्रगतिशील कदम उठाकर समाजवाद के लिए कदम उठाये और इस देश की गरीब जनता का विकास करे।

श्री अध्यक्ष: आप स्थान ग्रहण करें।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : बस मैं इतना ही कहना चाहता हूं। जयहिन्द।

श्री अध्यक्ष : एक व्यवस्था है। मोतीराम कमेटी की रिपोर्ट के सम्बन्ध में राज्य सरकार से जानकारी प्राप्त की गई तो कहा गया कि इस रिपोर्ट पर कोई निर्णय नहीं लिया गया है। ऐसी सूरत में बिना निर्णय लिये रिपोर्ट को प्रस्तुत करना उचित नहीं है। मेरी व्यवस्था यह है कि रिपोर्ट पर शीघ्र ही निर्णय लिया जाकर शीघ्र ही इसी सत्र में प्रस्तुत की जाये।

श्री दौलतराम सारण : और जो उत्तर माननीय मन्त्री ने दिया था, वह असत्य माना जाये। उसका क्या होगा ?

श्री अध्यक्ष : श्री फूलचन्द बाफना।

श्री दौलतराम सारण : इस सम्बन्ध में मैंने आपत्ति की थी। इस समय भी मेरी आपत्ति है।

श्री अध्यक्ष : मैंने निवेदन कर दिया है कि निर्णय हो जाने पर ...

श्री दौलतराम सारण : माननीय मन्त्री का उत्तर था। सदन को गुमराह किया था।

श्री अध्यक्ष : क्या उत्तर दिया था ?

श्री दौलतराम सारण : अध्यक्ष महोदय, मोतीराम कमेटी के बारे में था। उन्होंने ....

श्री अध्यक्ष : मैंने व्यवस्था दे दी है। फूलचन्द बाफना।

श्री फूलचन्द बाफना (सुमेरपुर) : अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय का भाषण पढ़ा। उसमें ऐसा लगा कि यह केवल रिपिटीशन है। यह तो सांख्यिकी विभाग भी कर सकता था। उन्होंने कोई नई बात या नई क्रांति की बात नहीं कही है। चुनाव के बाद वह योजना बताते कि भारत-वर्ष में वह क्या करेंगे। हो सकता है कि बजट में उसकी झलक मिले। परन्तु राज्य-पाल के भाषण में उसका जिक्र आना चाहिए था वह नहीं आया। बेरोजगारी के बारे में जरूर कहा है लेकिन केवल चिन्ता व्यक्त की है। बढ़ती हुई बेरोजगारी कैसे हटायेंगे इसके बारे में कुछ नहीं कहा गया है। 23 साल के बाद भी सरकार बेरोजगारी नहीं हटा सकी है तो सरकार क्या करेगी ? जिसको रोज-गार नहीं दे सकते हैं उसको बेकारी का भत्ता दिया जाये अगर ऐसा होता तो मैं मानता कि सरकार का पक्का इरादा है। इस बात की गारन्टी राज्यपाल महोदय के भाषण में आनी चाहिये थी। मगर वह नहीं है। इसका मतलब है कि अनिश्चित बात है। पंचायत समितियों के अधूरे काम पड़े हुए हैं। अकाल के समय के अधूरे काम पड़े हुए हैं। इसके लिए करोड़ों रुपये चाहिये। इसका जिक्र नहीं है। राज्य की नीति का जिक्र होना चाहिये था। मैं ऐसा मानता हूं कि यह जो हिन्दु-स्तान में हम क्रान्ति की बात करते हैं वह क्रान्ति वास्तव में है क्या ? मैं ऐसा मानता हूं कि क्रान्ति समाज के मूल्य को बदलने की बात है। एक गरीब आदमी है, पैसे वाला हो जाता है तो उसके लड़के की सगाई हो जाती है। लेकिन अगर वह गरीब हो जाता है–

(1. 15. म. प.)

(श्री पूनमचंद विश्नोई, उपाध्यक्ष, पदा-सीन) तो उसका कोई मूल्य नहीं रहता है। हमें मूल्य को बदलना है। राहत के काम का महत्व है। वह तो राहत देना है। लेकिन क्रान्ति आदमी को कीमत बढ़ाती है। इस प्रकार का

(श्री फूलचन्द बाफना)

कोई जिक्र नहीं है। कोई झलक नहीं है। मैं ऐसा मानता हूं कि यह कोई क्रान्ति नहीं है। यह तो युद्ध हुआ। एक आदमी दूसरे आदमी को पटक दे। राज्य के बदले राज्य आ जाये। आदमी के बदले आदमी आ जाये यह तो युद्ध हुआ है। क्रान्ति में तो मूल्य बदलते हैं। किसी प्रकार का कोई काम नहीं हुआ है। अभी तो क्रान्ति की ओर बढ़ने का काम नहीं हुआ है। यह सारा ऐसा मालूम होता है कि एक खेल है। यह जो अक्ल वाले कहे गये हैं, चाहे इधर हो या उधर हों, उनका करिश्मा है। मैंने पहले भी कहा है कि बुद्धिजीवी है जो अक्ल वाला है वह दूसरे के दुख से ही पैसा कमा सकता है। डाक्टर बुद्धिजीवी हैं। अगर आदमी बीमार नहीं हो तो उसे काम व दाम कहां से मिलेगा पहले गुरुकुल होते थे। वह भिक्षा मांग-कर आश्रम चलाते थे। अब अगर है तो उन गुरुओं को भी नौकर बना दिया है। अब ये एक हिसाब से गुलाम तैयार करने के कारखाने हैं। जैसा सरकार सोचती है वैसा ही ज्ञान उनको दिया जाता है। जैसा सरकार चाहती है वैसा ही उनको तैयार करके निकाला जाता। यह तो फैक्टरियां हैं। यह क्रान्ति की बात नहीं है। अभी जिक्र कर रहा था कि जैसे वकील है, जब किन्हीं आदमियों में झगड़ा होगा तभी वह पैसा कमायेगा। नेता है वह समाज में झगड़ा पैदा होगा तभी उसकी आय होगी। श्रमजीवी ऐसा कर नहीं सकता है। दिन भर का थका हुआ आता है, वह किसी प्रकार से ऐसा नहीं कर सकता है। सामाजिक क्रान्ति किस प्रकार से हो इसके लिए महात्मा गांधी व विनोबा जी जैसे बुद्धिमान लोग मिलेंगे तभी कुछ हो सकता है। मेरा ख्याल है, भारत में कोई क्रांति नहीं हो पायी है। परन्तु समाज के मूल्य को हम नहीं बदल पाते। हम एम. एल. ए. व एम. पी. केवल युद्ध करते हैं, इससे क्रांति नहीं होती है। इसलिए क्रांति की जो बात है, यह हम लोगों से बिल्कुल असम्भव है। आज अशिक्षा और गरीबी है। मैं यह बताना चाहता हूं...

श्री उपाध्यक्ष : आयन्दा चुनाव लड़ने का विचार नहीं है क्या ?

श्री फूलचन्द बाफणा : ऐसा है कि चुनाव में लड़ता नहीं हूं, मुझे तो कोई लड़ाता है। इसलिए लड़ने का विचार है ही नहीं। अगर कोई लड़ाता है और लोग सारा इन्तजाम कर देते हैं और कहते हैं, आप आइये, हम सारे खर्च की जिम्मेदारी लेते हैं तो चुनाव लड़ सकता हूं। लेकिन चुनाव में अटेचमेंट नहीं होना चाहिए। हम चुनाव में खड़े हों, यह कोई धन्धा नहीं है, यह पेशा नहीं है चुनाव में खड़े होने का।

मैं निवेदन कर रहा था, मैं महंगाई की बात कर रहा था। इस सम्बन्ध में मैं महंगाई का एक उदाहरण देना चाहता हूं, आज महंगाई दिनों दिन बढ़ रही है वह क्यों बढ़ रही है। महंगाई इसलिए बढ़ रही है क्यों कि मुद्रा प्रसार निरन्तर बढ़ रहा है, सरकार नोट छापती जा रही है, नोट छापती जा रही है। इस कारण से आज पैसे की कीमत गिरती जा रही है और चीजों की कीमत बढ़ रही है। जर्मनी में, जिस समय द्वितीय विश्व युद्ध हो रहा था, उस समय वहां ऐसी स्थिति पैदा हुई थी, वहां एक बाप ने अपने दो बेटों को एक एक लाख मार्क देकर अपनी सम्पत्ति का विभाजन कर दिया। एक बेटे को जो एक लाख मार्क

(श्री फूलचन्द बाफना)

मिले, उनको उसने एक बैंक में जमा करा दिया और दूसरे बेटे को जो एक लाख मार्क मिले उसने वह शराब पीने में बरबाद कर दिया। उसके बाद क्या हुआ, मार्क की साख गिर गई, उसका मूल्य गिर गया और सरकार ने ऐसा आदेश निकाल दिया कि जर्मनी में जो मार्क को स्वीकार नहीं करेगा उसको फांसी दे दी जायगी। आखिर में क्या हुआ कि जिस बेटे ने एक लाख मार्क बैंक में जमा कराये थे, उसको ब्याज सहित जो रकम प्राप्त हुई, उससे वह केवल एक प्याली चाय पी सकता था। लेकिन जिसने वह सारा पैसा शराब पीने में उड़ा दिया था उसके पास सैकड़ों खाली बोतलें थीं, वह रोज एक बोतल बेच देता था और उससे खाना खा लेता था। शराब का लाभ मैं यह नहीं बता रहा हूं। इसी तरह हिन्दुस्तान में भी नोट छपते रहे और नोट छाप कर काम काज चलता रहा तो जनता की खैरियत नहीं है क्योंकि जनता का गुजारा नहीं हो सकता है। क्रांति कोई करे या नहीं करे, कोई राजनैतिक दल क्रांति करे या नहीं, लेकिन यह महंगाई स्वयं एक तूफान ला देगी। इस महंगाई के कारण लोग खड़े हो जायेंगे तो क्रांति आ जायेगी अपने आप। उसको कोई नहीं रोक सकेगा चाहे सरकार हो या लॉ एण्ड आर्डर। कोई नहीं रोक सकेगा और वह सबको भस्मीभूत कर देगी। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सरकार नोट छाप छाप कर मुद्रा प्रसार कर रही है, बाद में अपने बचाव के लिए अवमूल्यन करते हैं रुपये का। पिछली बार रुपये का अवमूल्यन किया, इन्कार करते करते भी अवमूल्यन करना पड़ा, और 157 रुपयों की जगह केवल सौ रुपये का माल मिल सकता था। क्योंकि पैसे की कीमत इस प्रकार से गिर गई थी। उससे एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट में भी लाखों रुपयों का नुक्सान हुआ। आज भी पैसे की स्थिति ऐसी ही है, पैसे की साख और पैसे की कीमत गिर चुकी है, केवल सरकार के द्वारा घोषणा करना बाकी है। सरकार यह घोषणा किसी भी क्षण कर सकती है। जब पैसे की साख और कीमत गिर गई है तो इससे और भी महंगाई बढ़ेगी। इस प्रकार मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस कारण से लोगों का सरकार के प्रति अविश्वास हो गया है। सरकार की साख गिर गई है इसलिए लोग बैंकों में पैसा जमा नहीं करेंगे, भले ही आप कितनी ही ब्याज की दर बढ़ायेंगे लेकिन लोगों में बैंक के प्रति विश्वास नहीं होगा। लोग पैसे से अधिक सामग्री और अधिक से अधिक सामग्री और अधिक से अधिक सामान इकट्ठा करेंगे। इस कारण से और अधिक नकली महंगाई भी खड़ी होगी और देश के सामने एक कठिनाई पैदा होगी। यह स्थितियां हैं, इनमें मैं समझता हूं, कि सरकार के कब्जे में कुछ नहीं है, पैसे की साख उसके कब्जे में नहीं है, महंगाई उसके कब्जे में नहीं है, परिस्थितियां उसके कब्जें में नहीं है। उसके कब्जे में कुछ नहीं है। यह स्थिति चल रही है, इससे कठिनाईयां बढ़ने की स्थिति पैदा हो रही है। आज सरकार योजनायें निकालती है और फिर कहती है कि हमने इतने शिक्षित बढ़ा दिये हैं, इतने बेकारों को काम दे दिया है, इतने बेघरबार लोगों को घर दे दिये हैं। लेकिन इन आंकड़ों का बारीकी से अध्ययन करें तो जितने अशिक्षित पहले थे, पिछली साल थे, उससे ज्यादा इस साल हैं। जितने बेघरबार पिछले साल थे, उससे ज्यादा आज है। बिमारों की जितनी संख्या पहले थी, उससे ज्यादा आज

(श्री फूलचन्द बाफणा)

हैं। पिछली साल के जो आंकड़े हैं, उससे ज्यादा संख्या आज है। पिछली साल के जो आंकड़े हैं, उससे अधिक आकड़े बढ़े हैं। गरीबी के आंकड़े बढ़े हैं, अशिक्षितों के आंकड़े अधिक बढ़े हैं। कितने बढ़े हैं, इसका कोई हिसाब नहीं है। सरकार कहती है लेकिन जितने शिक्षितों की संख्या बढ़ा दी है, लेकिन जितने शिक्षितों की संख्या बढ़ती है उससे ज्यादा अशिक्षितों की संख्या भी बढ़ती है। आज सरकार परिवार नियोजन की बात करती है। लोगों को खिला नहीं सकते, पिला नहीं सकते तो कहती है आने वालों को रोकेंगे। आने वालों की संख्या नहीं बढ़ेगी तो यह सब समस्यायें हल हो जायेंगी। आज जो परिवार नियोजन की बात चल रही है, इससे राष्ट्र के साथ में धोखा होगा। वह धोखा इसलिए होगा कि परिवार नियोजन का वह आसरा लेते हैं जिनके दो तीन बच्चे हैं, लड़के हैं। लड़कियां जिसके हैं वह परिवार नियोजन का आसरा नहीं लेता है। उसको तो लड़के की प्रतीक्षा है, उसको परिवार नियोजन से लाभ नहीं होता है। होता क्या है, जिसके लड़के होते हैं वह बर्थ कन्ट्रोल कर लेते हैं, लेकिन जिसके लड़कियां होती हैं वह लड़के की आशा रखता है और उसके लड़कियां लड़कियां बढ़ती जाती हैं। मेरे एक मित्र हैं उनके छः सात लड़कियां हो गई हैं। इस प्रकार बीस साल के बाद में ऐसा समय आयेगा जब लड़कियां और लड़कों की संख्या में 2:1 का अनुपात हो जायगा, बीस साल के बाद में औरतों की संख्या ज्यादा होगी। इससे यह होगा। इसलिए जब तक कम्पलशन नहीं होगा कि जिसके दो तीन बच्चे या बच्चियां हैं, उनको बर्थ कन्ट्रोल करवाना होगा, तब तक समस्या सुलझ नहीं सकती है। लेकिन जब तक यह लोगों की इच्छा पर रखा जायगा, तो इससे असन्तुलन बढ़ने वाला है, इससे असमानता बढ़ने वाली है। ऐसी स्थिति में यदि कोई लड़ाई हो गई तो क्या होगा? एक आदमी ने जवाब दिया कि औरतें लड़ेंगी। लेकिन औरतें ज्यादा हों और मर्द कम हों तो इससे असमानता बढ़ेगी तो इससे क्या होगा? दूसरी बात यह है कि इस परिवार नियोजन का लाभ बुद्धिमान लोग उठाते हैं, अक्ल वाले उठाते हैं। इससे क्या होगा कि बुद्धिमानों की संख्या कम होगी और मूर्खों की संख्या ज्यादा होगी''

श्री उपाध्यक्ष : बुद्धिजीवियों की कमी होगी।

श्री फूलचन्द बाफणा : वह बुद्ध बनेंगे वह मूर्ख बनेंगे। इसके साथ ही आज से बीस साल के बाद में यह होगा कि नौजवान आदमी जो आज हैं वह बूढ़े हो जायेंगे और नौजवान उस समय कम होंगे। इस तरह से बीस साल के बाद में बूढ़ों की संख्या ज्यादा होगी और नौजवानों की संख्या कम होगी। इसलिए यह जो परिवार नियोजन चलाया जा रहा है इसका नतीजा हमको भुगतना पड़ेगा। आज से बीस पच्चीस साल के बाद में हिन्दुस्तान में औरतों की संख्या ज्यादा होगी, बूढ़ों की संख्या ज्यादा होगी और नौजवानों की संख्या कम होगी। इससे क्या होगा? इससे क्या देश का उद्धार हो जायगा? इसलिए परिवार नियोजन में अनिवार्यता करनी चाहिए, इसको ऐच्छिक नहीं रखना चाहिए, नहीं तो करोड़ों रुपये जो आज खर्च कर रहे हैं उसकी यह सजा मिलेगी, इससे इनाम नहीं मिलेगा। इसलिये

(श्री फूलचन्द बाफणा)

योजनाओं में यह सब होना चाहिए। मैं मानता हूं कि देश की दौलत बढ़नी चाहिए। इसकी जरूरत है। लेकिन दौलत किससे बढ़ती है ? दौलत खेती से बढ़ती है, दौलत उद्योगों से बढ़ती है, दौलत खनिज पदार्थों से बढ़ती है, खानों से बढ़ती है। इसलिए इन तीनों जगहों पर शक्ति लगाने की जरूरत है। सिंचाई और पशु पालन पर ध्यान देना चाहिए। जहां पर सिंचाई के साधन बढ़े हैं और वहां पर दौलत बढ़ी है, खेती से मैं मानता हूं कि खेतों में उत्पादन बढ़ना शुरू हुआ है, लेकिन खेती के मामले में भी अच्छे बीज और अच्छी खाद बांटने की योजना का सबको लाभ नहीं मिला है, यह लाभ केवल धनी वर्ग को मिलता है, गरीबों को नहीं मिलता है। आप सारी योजनाओं के हिसाब, साथ साथ ऋण आदि के लाभ का हिसाब लगाकर देख लीजिये, केवल धनिक वर्ग को लाभ मिलता है, गरीबों को मामूली मिलता है और भूमिहीन किसानों का पता ही नहीं है। आज किसानों में भी तीन वर्ग पैदा हो गये हैं, एक धनिक किसान, एक गरीब किसान और एक भूमिहीन किसान। यह जो धनिक किसान हैं, यह देश में ग्रामीण पूंजीवाद को पैदा कर रहे हैं। जो पूंजीवाद हिन्दुस्तान का है, उसके साथ साथ गांवों में भी पूंजीवाद पैदा हो गया है। यह छुटभइये हैं, और छुटभइये और बड़भय्ये मिल कर पूंजी का फायदा उठा रहे हैं, इससे देश की तरक्की नहीं हो रही है। आज की अर्थ-व्यवस्था ने पूंजीवाद को पनपाया है। आज गरीब किसान को कुछ लाभ नहीं मिल पाता है, उसके पास जमीन कम है अथवा नहीं हैं, उसको ऋण नहीं मिल सकता है, उसकी कोई जमानत देने वाला नहीं है, अतः उसको ऋण मिलने वाला नहीं है। जो बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ है उससे उनको कोई खास लाभ नहीं मिला है और इस कारण इससे केवल जिस प्रकार सांभर में पड़ता है वह सब नमक होता है उस तरह की बात हो गई है। इस कारण से सारा लाभ है, वह गरीबों को नहीं मिल पा रहा है। जब गरीबों को लाभ नहीं मिलता है तो योजना का क्या होगा। आज गरीब की सुनवाई नहीं होती है, आफिसर कहता है, इधर जाओ, दूसरा कहता है उधर जाओ। आज इस कारण से सारे ढांचे में शिथिलता आ गई है : किसी ने कहा है-

आफिसर करे न अफसरी।
दफ्तर करे न वर्क।।
दास मलूका कह गये।
सबका काका क्लर्क।।

यह कोई राज्य नहीं है, शिथिलता सारे ढांचे में ऐसी व्याप्त होगई है कि ऊपर से कोई मिनिस्टर कहे कि अच्छा टेलीफोन करता हूं तो ठीक है, टेलीफोन से काम तो हो जाते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि हर आदमी मिनिस्टर के पास जा सकता हो, हर आदमी कहीं से टेलीफोन करवा सकता हो। इसलिए ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे सुचारु रूप से व्यवस्था चले यह कहे कि यह करो, वह करो तो इससे व्यवस्था चलती नहीं हैं। यह कोई व्यवस्था नहीं है जिसके अन्दर हजारों प्रश्न विधान सभा लोक सभा आदि में करने पड़ते हों। यह कोई व्यवस्था नहीं है। इस विधान सभा, में इधर उधर के सबही माननीय सदस्य असंतुष्ट हैं। मैं समझता हूं कि राज्य पक्ष व विपक्ष के हर आदमी की तकलीफ को

(श्री फूलचन्द बाफणा)

सुनना चाहिए। लेकिन राज्यपक्ष के भी लोग इतने सारे प्रश्न पूछते हैं, इससे साफ है कि उनमें भी बहुत असंतोष हैं। इधर भी असंतोष, उधर भी असंतोष, इस प्रकार तो असंतोष के ज्वालामुखी पर हम सभी खड़े हैं। यह ज्वालामुखी फूटेगा तो उधर वाले इधर और इधर वाले उधर आ सकते है और दलबदलुओं का तो पता ही नहीं लगेगा परन्तु जब ज्वालामुखी फूटेगा उस वक्त क्या होगा? उसी समय की हम तैयारी कर रहे है। हिन्दुस्तान में खून खच्चर कौन करा रहा है? हम लोग करा रहे हैं। जनता नहीं कर रही है। जनता को जब क्रोध आवेगा तो उसके हम ही दोषी होंगे, हम ही उसके भागीदार होंगे। जनता कभी भी हिंसक नहीं रही, जनता को जब उभारा गया है और जब ऐसी परिस्थितियां खड़ी होती हैं तो जनता जो कि हाथी की तरह करवट बदलती है कभी अचानक उठ खड़ी होगी। हम लोग विचार रखते हैं कि हम समाजवाद में विश्वास रखते हैं। लेकिन हमारे लड़के व लड़कियां की शादियों को देखते हैं तो प्रश्न खड़ा होता है कि क्या समाजवाद ऐसा होता है। क्या समाजवाद में ऐसे रीतिरिवाज, ऐसी उठ बैठ होती है? क्या समाजवाद का यही तरीका है? यह सारी स्थिति समाजवाद के रुख के नहीं है। आज हमारी कथनी और करनी में काफी अन्तर है। मैं तो मानता हूं कि जिस तरह सिनेमा के अभिनेता होते हैं और सिनेमा में कोई राजा बनता है और फिर बाद में साधारण आदमी बन जाता है उसी तरह जब हमारे नेता भाषण देते है तो भाषण देने के वक्त में उनको अभिनेता मानता हूं। स्टेज पर तो वह अभिनेता होते हैं और जब स्टेज से नीचे आते हैं तो अभिनेता से चालू आदमी बन जाते हैं। वास्तव में मैं मानता हूं कि ये सारा खेल बुद्धिजीवियों का है चाहे वे इधर बैठे हैं या चाहे वे उधर बैठे हैं। दोनों ही एक मंच खेल रहे है और जनता फुटबॉल बन गयी हैं। एक किक इधर से लगती है और एक किक उधर से लगती हैं और यह प्रथम पंचवर्षीय योजना, द्वितीय पंचवर्षीय योजना, तृतीय पंचवर्षीय योजना और चतुर्थ पंचवर्षीय योजना क्या होती है? योजना योजना क्या होती है? किसी ने कहा हैं।—"योजना के तीन काम नक्शा, मीटिंग और सलाम।

श्री मनोहरसिंह मेहता : क्या क्या ?

श्री फूलचन्द बाफणा : योजना के तीन काम हैं नक्शा दिखाया, मीटिंग करी और सलाम किया और फिर चले गये। तो यह योजना इस तरह से चलती है योजना से जनता को क्या लाभ हुआ है? क्या गरीब जो पहले जितनी सब्जी खाता था उससे क्या अब वह ज्यादा खाता है? पहले उसके बच्चों को जितना दूध मिलता था क्या उसे अब पहले से ज्यादा दूध मिलता हैं? जितने लोग पहले बेघरबार थे जैसे बम्बई में लोग फुटपाथ पर सोते हैं क्या उनके लिये कोई रैन बसेरे बनाये गये हैं जिससे रात को तो लोग यहां बाहर पड़े रहे है क्या उनको कोई मकान दिये हैं? आज ऐसी बात हुई है कि मकान उनको मिल भी जाता है जो शहरों में रहते है। गांवों में मकान नहीं मिलते है। गांवों के लोग बिना मकान के पड़े रहे चाहे, पहले शहर का नम्बर आवेगा। आज यह शहर और गांव

(श्री फूलचन्द बाफना)

का भेद बन गया है क्योंकि शहरों में अख-बार निकलते हैं इसलिये उनकी सुनवाई होती है। आज अगर स्कूल खुलते हैं तो शहरों में खुलते हैं। गांवों की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता है। गांवों के लिये कोई स्कूल की मांग करता है तो कहते हैं कि इतने रुपये लावो तो स्कूल खुलेगा। ठीक इसी प्रकार अस्पताल की बात करते हैं तो कहते है कि इतने रुपये लाओ तो अस्पताल गांव में खुलेगा। रुपये की समाजवाद में क्या शर्त ? स्कूलों के खोलने के लिये क्या शर्त ? समाजवाद में पैसा शर्त हो गया है। पैसा लावो तब स्कूल और अस्पताल खुलेगा। अगर आज कोई पैसों वाला आदमी बीमार होता है तो उसे कोटेज वार्ड मिलता है और गरीब आदमी है तो उसको कॉटेज वार्ड नहीं मिलता है। उसे तो जनरल वार्ड ही मिलता है। समाजवाद में यह होना चाहिये कि सख्त बीमारों को कोटेज वार्ड में भरती किया जाये किन्तु केवल पैसे वाले को नहीं। आज मानलो रेलगाड़ी में किसी अमीर को 10 मील जाना है तो वह पैसा देकर एअरकन्डीशन्ड में जावेगा और गरीब को हजार 1000 या दो 2000 मील भी जाना है तो वह भीड़ में थर्ड क्लास में जावेगा। समाजवाद में बहुत दूर जाने वालों को एअरकन्डीशन्ड मिलनी चाहिये। समाजवाद में एअरकन्डीशन्ड का लाभ सिर्फ पैसे वाले को ही मिलता है सरकार की जो हर काम में शर्त पैसे की रहती है। जहां पैसे की शर्त है वहां कैसा समाजवाद ? समाज-वादी समाजवाद मे पैसे की शर्त नहीं होती। समाजवाद में आदमी की आवश्यकताओं को पूरी करने की आवश्यकता होती है। आज ऐसा इन्तजाम नहीं। आज तो पैसा लावो और काम करावो। यह तो कानूनी रिश्वत खोरी हो गई है कि पैसे वाले से पैसा लो और काम करावो। जिसमें गरीब आदमी को बढ़ावा नहीं मिलता। अमीर आदमी ही मजे में रहेंगे। आप हर आदमी को भी खुशहाल बनायें। यदि आपको समाजवाद लाना है। इस सदन के अन्दर प्राय: अमीर आदमी ही चुनकर आते हैं। शिड्यूल्ड कास्ट्स और शिड्यूल्ड ट्राइब्स के जो लोग आते हैं वह इसलिये आते हैं क्योंकि रिजर्वेशन होता है। अगर रिजर्वेशन नहीं हो तो कितने आ पाते हैं यह आप देख लीजिये। 100 में से 90 फिर भी नहीं आ सकेंगे। आज अशिक्षा और गरीबी है यह सरकार को वरदान हो गया है। गरीबों को हर बार उल्लू बनाया जाता है। कभी कोई नारा कभी कोई नारा लेकिन उनके हाथ में कुछ नहीं आता है। इस तरह से पहले पांच साल निकल गये दूसरे पांच साल बीत गये, तीसरे पांच साल भी बीत गये चौथे पांच साल भी बीत गये, है लेकिन गरीब को उठाने की ऐसी कोई व्यवस्था नहीं। उससे देश में यदि अराजकता फैलेगी तो उससे कोई खराब चीज नहीं निकलेगी। क्योंकि जब हाथी करवट बदलता है तो कभी क्रान्ति भी फैलती है।

श्री रघुनाथ बिश्नोई : फैलने दो, फैलने दो।

श्री फूलचन्द बाफना : फैलने क्या दो हम खुद फैला रहे हैं।

श्री रघुनाथ बिश्नोई : जो कुछ होगा वह अच्छा होगा।

श्री फूलचन्द बाफना : जो कुछ होगा वह अच्छा होगा यह भाग्यवादी मानते हैं,

(श्री फूलचन्द बाफणा)

यह भाग्य की बात है। तकदीर को मानते हैं वह ऐसा कहते हैं। तकदीर अच्छी होगी तो अच्छा होगा लेकिन कितना अच्छा होगा? आप गरीब व अमीर की बात करते है उससे क्या होगा आप तकदीर के भरोसे बैठे हैं। मैं बतला रहा था कि अंग्रेजों का राज्य जाने के बाद भी हमें लोगों पर गोली चलाने की जरूरत पड़ती है। मैं समझता हूं कि गोली चला कर आप दमन से राज्य करते हैं। लोगों को समझा बुझाकर उसको सन्तुष्ट करके काम नहीं करते। अंग्रेजों के जमाने में जितनी गोलियां चलीं उससे ज्यादा अपने स्वराज्य में चली स्वराज्य का मतलब यह नहीं है। गान्धीजी ने कहा था कि स्वराज्य में गोली चलाकर राज्य करेंगे तो एक दिन ऐसा आवेगा कि लोक चुन चुन कर मारेंगे। गोली चला कर राज्य करते हैं अंग्रेज भी ऐसा ही करते थे। वह गोली के बल पर राज्य करते थे। यह राज्य नहीं। राज्य ऐसा होना चाहिये कि लोगों को समझावें यह आज की शिक्षा-प्रणाली का दोष है। शिक्षा-प्रणाली में आज भी मैकॉले वाला तरीका है उससे गुलाम बनते जायेंगे, क्लर्क बनते जायेंगे। आज इन्जीनियर, डाक्टर बेकार हैं। गांवों की बुद्धि व शरीर शक्ति आज शहरों को जा रही है। गांवों में काम नहीं देने के कारण शहरों में जाती है और देश में काम नहीं मिले तो विदेश में जाती है। आज भी 7000 वैज्ञानिक प्रतिवर्ष अमेरिका जाते हैं क्योंकि हिन्दुस्तान में उनके लिये यहां कोई काम नहीं है। खुराना को हिन्दुस्तान में नौकरी नहीं मिली लेकिन अमेरिका में उसे नोबिल प्राइज पुरस्कार मिला। यहां उसे नौकरी नहीं मिली। इस तरह से स्थिति चलती है तो यहां की योग्यता बाहर जावेगी। आज पंचायत समिति और जिला परिषद् बेकार हो गये हैं। काम के उपभोगी लोग गांवों से शहरों में जायेंगे और शहरों से लोग विदेश जायेंगे तो गांवों में जो लोग रहेंगे वह प्रायः बुद्धू और मूर्ख ही रहेंगे और वही काम चलायेंगे। इसलिए विलेज लेविल पर विकास का काम होना चाहिए। गांव के स्तर पर रोजगार का इन्तजाम होना चाहिये। गांव के स्तर पर सब इन्तजाम होना चाहिये। सड़कों का काम हो या उद्योग इनका फैसला सब पंचायत समिति लेवल पर होना चाहिये। इस प्रकार से बुद्धिजीवी लोग हैं वह गांवों में जाकर बसेंगे। शहरों के बुद्धिजीवी गांवों में जावें और विदेशों में हों वह यहां आजावें तब बुद्धिजीवी का विकेन्द्रीकरण होगा। आज शहरों में बुद्धि इकट्ठी हो रही है, विदेशों में इकट्ठी हो रही है उसका लाभ बड़े शहरों को मिलता है। इस कारण से छोटी मोटी बातों पर हम लड़ते हैं झगड़ते है। लेकिन देश की जो सर्वांगीण विकास की योजना है उस की तरफ किसी का ध्यान नहीं है। क्योंकि हमारी शक्ति लड़ाई में बर्बाद हो जाती है और पार्टीबाजी में बर्बाद हो जाती है। इस प्रकार कई दल हो गये हैं और देश में दल दल हो गया है। हिन्दुस्तान में कितने दल हैं उनका फैसला किसी दिन जनता कर देगी। अभी चुनाव हुए है इन्द्राजी की जीत हुई है। जनता ने अभी चुनाव में बता दिया कि जनता नेता से आगे निकल गई है। जनता सन्तुष्ट नहीं होती है तो एक दिन ऐसा आवेगा कि किसी न किसी दिन इन नेताओं की खैरियत नहीं हैं और जनता इन नेताओं को उठाकर फेंक देगी। एक दिन एक नेता किसी गांव में गया उसने कहा कि हम लोगों को वोट दो हम पृथ्वी पर स्वर्ग उतार देंगे। तो गांव के

(श्री फूलचन्द बाफना)

लोगों ने कहा पिछले 23 सालों में तो आपने स्वर्ग उतारा नहीं अतः इस बार तो आप स्वयं ही स्वर्ग पधार जावो। किस तरह का जबाब दिया? हमें जनता को शिक्षित करना चाहिए और इसके लिये हमें शिक्षा के ढांचे को बदलना चाहिये। हमारे गांव में विद्याबाड़ी में एक बालिका विद्यापीठ है वहां श्री शिवचरणजी माथुर शिक्षा मन्त्री पधारे थे। वहां उन्होंने घोषणा की थी कि इस स्कूल की अनुदान की राशि को 70 प्रतिशत से बढ़ा कर इसकी एड को 80 प्रतिशत कर दिया गया है। मैं समझता हूं कि वह शत प्रतिशत क्यों नहीं की गई। जो पिछड़े हुए हैं, वह पीछे रह गये हैं और जो आगे थे वह आगे रह गये। इसलिये इस तरह की योजना होनी चाहिए इस तरह की शिक्षा प्रणाली होनी चाहिये, कि जो अशिक्षित हैं उन्हें शिक्षित किया जाय और औरतें जो कि 50 प्रतिशत है जो काफी मात्रा में अशिक्षित है और अशिक्षित होने की वजह से पिछड़ी हुई हैं उन्हें शिक्षित किया जाय। नहीं तो जो अशिक्षित हैं वह शिक्षित को पीछें खीचेंगी। राज्यपाल महोदय ने जो भाषण दिया था उनमें इन दो बातों का जिक्र होना चाहिये। इन समस्याओं के दो सोल्यूशन है। समाजवाद में धन का वितरण बराबर होना चाहिये। ऐसा नहीं कि जो मालदार है वह मालदार ही रहे, और गरीब भूखा हैं वह भूखा ही रहें। गरीबों के बच्चों को दूध के दर्शन नहीं होते हैं, जो गरीब स्वयं दूध बेचते है और घी को बेचते हैं। घी बेचते हैं, दूध बेचते हैं, बच्चे तरसते रह जाते हैं वह कहते है कि बाजार में बेचना हैं। बाजार के मूल्य क्या हैं? बाजार में कीमत तो कारखाने के माल की है। खेतों में जो माल पैदा होता है साल में कितने आदमियों को कितनी कमाई की? मैं समझता हूं कि पड़ता 50 रु० मन का गेहूं 30) रु० मन में बेच दिया तो उत्पादन वालों को धाटा होता है। तो निश्चित कीमत नहीं हैं। किसान जो पैदा करता हैं उसकी कीमत बाजार में तय करना चाहते हैं जो मेहनती नहीं हैं जो मजे करते है उनकी कीमत उनके खुद के कब्जे में हैं। यह किस तरह का समाजवाद है? लिफाफे बाजी हैं, भाषण हैं, वादविवाद है, इस प्रांगण में, या लोक सभा में। प्रश्न यह है कि हम वास्तव में क्या करना चाहते हैं? क्रांति हम ला नही सकते, मूल्य बदल नहीं सकते। अगर इस प्रकार की प्रक्रिया चल गई तो मैं समझता हूं कि इससे संतोष नहीं होगा, इससे कुछ नहीं होने वाला है। केवल अभिनेताओं के हाथ के हाथ में नेतागिरी रह गई तो अभिनेताओं से भला कभी नहीं होगा, उनसे तो सिनेमा की फिल्में उतारी जा सकती हैं, लोगों को नेतृत्व नहीं मिल सकता। गांधीजी उनको नेता कहते थे जो जैसा बोलते थे वैसा करते थे। कथनी और करनी में भेद नहीं होना चाहिए।

शराबबंदी के बारे में क्या आप जवाब दे सकते है कि मंत्रिमंडल के आदमी इतने शराब नहीं पीने वाले हैं? कह सकते हैं कि कोई शराब नहीं पीता? जब मंत्रिमंडल के सदस्य स्वयं शराब पीते हैं तो शराबबंदी कैसे हो सकती है?

एक माननीय सदस्य : बहुत से नहीं पीते हैं।

श्री फूलचंद बाफणा : क्या आप कह सकते हैं कि कोई नहीं पीता है। ऐसा कोई नहीं।

श्री मनोहरसिंह मेहता : कुछ मंत्री नहीं पीते हैं।

श्री फूलचन्द बाफणा : कुछ मंत्रीगण शराब पीते हों तो वह क्या कल्याण कर सकते हैं? शराब पीकर आदमी पड़ा रहता है, अपनी शक्ति खोता है नहीं तो वह इतनी शक्ति उत्पादन में लगा सकता है, कुछ न कुछ पैदा कर सकता है। राजस्थान के मंत्री तो क्या दिल्ली में बैठे हुए मंत्री भी पीते हैं और आज तो शराब पीना अच्छी सोसाइटी की पहचान है। जो शराब पीता है उसको प्रगतिशील मानते हैं। प्रगति की अलग प्रक्रिया है। ऊपर प्रक्रिया अलग, नीचे प्रक्रिया अलग।

श्री मोहनलाल मोदी (नीम का थाना): आप जब मंत्री थे तो पीते थे?

श्री फूलचंद बाफणा : मैंने तो अभी तक चखी भी नहीं है, सुगंध मालूम है क्योंकि आप लोग पीते हैं।

श्री मोहनलाल मोदी : आप मानकर चलते हैं कि जो मंत्रिमंडल में हैं, सब पीते हैं?

श्री फूलचंद बाफणा: आपने सुना नहीं। कम सुनते होंगे, पास वालों से बातचीत में लगे होंगे। मैंने जो कहा, आप सुन नहीं पाये। मैं बता रहा था कि क्या आप ऐसा कह सकते हैं कि कोई मंत्री शराब नहीं पीता? यह विवादास्पद बात नहीं हैं। सब लोग अपने दिल में जानते हैं कौन पीते है कौन नहीं। विवाद की बात नहीं है।

श्री सुरेन्द्र व्यास : पीना जुर्म है क्या?

श्री लाभचन्द वेद : पीना अच्छा है क्या?

एक माननीय सदस्य : न पीना अच्छा है न पिलाना अच्छा है।

श्री फूलचन्द बाफणा : यह सही है। तो मैं कह रहा था कि यह फर्क क्यों हुआ? हमारे संविधान में मूल में कुछ गलती हुई। संविधान में लिखा है लिबर्टी, ईक्वीटी एण्ड फ्रैटरनिटी। याने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व अर्थात कन्डीशनल रखा। पहले स्वतंत्रता हुई तो समानता हुई, समानता हुई तो भाईचारा हुआ। यह गलत रखा। होना चाहिए था पहले फ्रैटर्निटी बंधुत्व। बंधुत्व रहता तो समानता रहती ही समानता होती तो स्वतन्त्रता होती ही तो हमने उल्टा पकड़ा। हमने भारतीय संस्कृति की नकल नहीं की। भारतीय संस्कृति पर विधान बनता तो पहले फ्रेटर्निटी आती, फिर इक्वीटी फिर स्वतंत्रता आती। हमने तो केवल नकल कर दी। अगर हम आज भी विधान को इस तरह से रख देगें मूल बात को पहले कर दें तो दृष्टिकोण बदल जायगा। भारतीय संस्कृति में पहले भाईचारा आएगा भाइयों की भागीदारी बराबर है। जब समानता होगी तो स्वतंत्रता कहां जाएगी? स्वतन्त्रता उसके पीछे पीछे आ ही जाएगी। आधार को वर्तमान से बिल्कुल उल्टा करना चाहिए, अर्थात उल्टे को सुल्टा करना चाहिए। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री हंसराज आर्य (भादरा) : उपाध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर जो धन्यवाद का प्रस्ताव आया है, उसका समर्थन करने के लिए मैं

(श्री हंसराज आर्य)

खड़ा हुआ हूं। लोक सभा के जो मध्यावधि चुनाव हुए उनमें भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने समाजवाद का नारा देकर आह्वान किया। तो उस नारे से जो उनको समर्थन चाहिए था, उससे कहीं अधिक समर्थन मिला है। अब समाजवाद कितना आएगा यह तो भविष्य ही बतायेगा लेकिन इस चुनाव में प्रायः सभी विरोधी राजनैतिक पार्टियों का सफाया कर दिया और खासतौर से······

श्री उपाध्यक्ष : सभी पार्टियों का सफाया कर दिया ?

श्री हंसराज आर्य: प्रायः।

श्री दौलतराम सारण : कांग्रेस का पहले।

श्री हंसराज आर्य : कांग्रेस का तो मैं हामी हूं। जिन पार्टियों का सफाया किया उनमें खास तौर से भारतीय क्रांति दल है। उनका पूरे देश में 518 सीटों में से केवल एक सूरमा जीत कर आया वह भी जनसंघ की कृपा से। अलीगढ़ में जो झगड़ा हुआ उसको लेकर जनसंघ वालों ने अपना उम्मीदवार खड़ा न करके भारतीय क्रांति दल के श्री शिवकुमार शास्त्री का समर्थन किया और जनसंघ के समर्थन से एक व्यक्ति जीतकर आया है।

श्री उपाध्यक्ष : झगड़ा नोमीनेशन के बाद हुआ था।

श्री दौलतराम सारण : वह उनको पता नहीं।

श्री हंसराज आर्य : झगड़ा पहले भी हो गया था, नोमीनेशन के बाद में हुआ है। इस चुनाव ने समाजवाद के लिए एक दरवाजा खोल दिया। अब दिल्ली की सरकार कितना समाजवाद लाती है और हमारी प्रांतीय सरकार कितना समाजवाद लाती है········

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : अब तक समाजवाद का दरवाजा कैसे बंद कर रखा था ? अब लाएंगे। किसने बन्द कर रखा था ?

श्री विजयसिंह : कांग्रेस के मोरारजी देसाई ने समाजवाद का दरवाजा बंद कर रखा था और इन्दिराजी ने खोल दिया।

श्री हंसराज आर्य : यह उसी समय बंद था जब (श्री बद्रीप्रसादजी गुप्ता) आप मंत्री बनकर बैठे थे। खासतौर से मैं राज्य सरकार से निवेदन करूंगा कि इस नारे के साथ जो हमें समर्थन मिला है यदि राज्य सरकार ने······

श्री दौलतराम सारण : नारे के साथ नहीं, गाय के साथ।

श्री हंसराज आर्य : यदि समस्या का समाधान नहीं हुआ········

श्री देवीदत्त गाड़िया : यह तो गाय की पूंछ पकड़ कर वैतरणी पार हो गये।

श्री हंसराज आर्य : यदि राजस्थान सरकार ने समय रहते हुए प्रदेश की समस्याओं का समाधान नहीं किया तो वह दिन दूर नहीं कि जिस प्रकार अन्य राजनैतिक पार्टियों का सफाया हुआ है उसी प्रकार हमारा भी सफाया हो सकता है। इसलिए खास-तौर से मेरा सरकार से निवेदन है कि 23 साल की आजादी के बाद भी हमारी सरकार राजस्थान के 12 हजार गांवों में रहने वाली 70

(श्री हंसराज आर्य)

लाख जनता को, मनुष्यों और मवेशियों को। भर-पेट पानी नहीं दे सकी। यह समस्या क्यों रही। यह अब बख्शा नहीं जावेगा। पानी की व्यवस्था तो दूर लेकिन आज सरकार यह कहने की स्थिति में भी नहीं है कि 23 वर्ष में क्या वहां की सर्वे करवाली है कि कितने गांव ऐसे हैं कि जहां पर पीने के पानी की समस्या है भरपेट तो दूर रहा। यह सर्वे भी आज तक सरकार ने नहीं कराया और प्रदेशों में समाजवाद आये या न आये लेकिन हम राजस्थान में समाजवाद आया तब ही मान लेंगे। जबकि 12 हजार गांवों में मवेशियों और मनुष्यों को भरपेट पानी दे देंगे। यही हमारे लिये सबसे बड़ा समाजवाद होगा। मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि हमारे प्रदेश की जो समस्यायें हैं उनकी ओर विशेष-रूप से ध्यान देना चाहिये।

राजस्थान' में पांच में से तीन साल अकाल में बीतते हैं और वो अकाल ऐसे पड़ते हैं कि संसार में और कहीं अकाल इस प्रकार के नहीं पड़ते हैं। अकाल के क्षेत्र को भी सीमित करना चाहिये। सिंचाई के साधन और अन्य साधन उपलब्ध करना चाहिये। मैं थोड़े में ही निवेदन करूंगा कि राजस्थान में कितने ही ऐसे लोग हैं जिनके पास बैठने के लिये मकान नहीं है। यदि सरकार समाजवाद लाना चाहती है तो मेरा यह सुझाव है कि मन्त्रियों की फौज को कम करें। जो जो समाजवाद चाहते हैं वह सब मंत्रिमण्डल छोड़ कर बाहर आ जायें जो समाजवाद चाहते हैं वे बंगले छोड़ कर गवर्नमेंट होस्टल में आ जायें, जो मंत्री समाजवाद चाहते हैं वे अपनी कारें छोड़ कर रिक्शा और तांगों पर दफ्तरों में जाय।

श्री देवीदत्त गाड़िया : शोभाराम जी से पूछिये।

श्री हंसराज आर्य : लेकिन मुझे आशा नहीं है।

श्री उपाध्यक्ष : जो इच्छा रखते हैं वे भी इसे छोड़ दें।

श्री हंसराज आर्य : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा सरकार से निवेदन है कि सरकार में बैठे मंत्रियों को और नहीं तो कारों में तो परिवर्तन कर देना चाहिये। उनके पास छोटी कारें हैं लेकिन जब दौरों में जाते हैं तो एक एक लाख की कारों में चलते हैं यह अधिक अब चलने वाला नहीं है। उनको अपने रहन-सहन के अन्दर सादगी लानी चाहिये।

श्री उपाध्यक्ष : वैसे भी इनके स्पेयर पार्ट्स कम मिलते हैं। बन्द हो जावेगी।

श्री हीराभाई : संजीव गांधी की कारें कहां बिकेंगी ?

श्री उपाध्यक्ष : वे छोटी कारें हैं।

श्री हंसराज आर्य : शिव चरणसिंहजी कह रहे हैं कि पार्टी में प्रस्ताव लावेंगे तो हम विचार करेंगे। जो मंत्री घोषणा करें और मंत्री परिषद से स्तीफा दें तो मैं उनका स्वागत करूंगा।

श्री दौलतराम सारण : "दुहागण के लागे सुहागण पांव मेरी जैसी हो मेरी मांय।"

श्री हंसराज आर्य : सरकार 23 वर्ष की आजादी के बाद भी राजस्थान से छूआ-छूत नहीं मिटा सकी। गांवों में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है कि जिसके घर पर हरिजन जाय जिसको कोई

(श्री हंसराज आर्य)

यह कहता हो कि नीचे न बैठ कर चारपाई पर बैठिये। कितनी ही चारपाई पड़ी हों लेकिन वह यह कहने की स्थिति में नहीं है कि नीचे बैठने के बजाय चारपाई पर बैठिये। छूआ-छूत राजस्थान में अभी पूरी तरह से है। इधर या उधर बैठने वाले माननीय सदस्यों से मैं निवेदन करूंगा कि इस युग में इन्सान को इन्सान हम समझें तो हम समझ सकते हैं कि हम छुआछूत को हटा रहे हैं। राजस्थान में हरिजन तो हैं ही और भी कई ऐसे गरीब लोग हैं जिनको दोनों टाइम भरपेट खाना नहीं मिलता। नंगे हैं। सरकार ने जो समाजवाद का नारा दिया है वह कभी आवेगा। या नहीं किन्तु हमारे यहां पहले आवेगा। राजस्थान की समस्याओं का समाधान करने के लिये सरकार को कटिबद्ध हो जाना चाहिये। मुझे संदेह है सरकार इस सदन में जो घोषणायें करती है उन पर अमल होता हो। पिछले बजट सत्र में मुख्य मंत्रीजी ने इसी सदन में यह एलान किया था कि तीन महीने के अन्दर अन्दर समस्याओं का समाधान कर देंगे। मुझे दुःख है कि वे आज यहां सदन में नहीं है लेकिन कृषि मंत्री जी बिराजमान हैं। क्या एक साल के बाद भी मुख्य मंत्रीजी द्वारा की गई घोषणा पर अमल हुआ है? नहीं हुआ। एक छोटी-सी बात है कि सिचाई की समस्या को लेकर मोतीराम कमीशन बिठाया। उसकी रिपोर्ट को आज तक सरकार सदन के पटल पर नहीं रख सकी। तो फिर हम किस प्रकार मान कर चलें कि यह सरकार जो घोषणा करती है उन पर अमल भी करती है। मुख्यमंत्रीजी ने यह भी घोषणा की थी कि राजस्थान के 32 हजार गांवों में भूमि के लगान की असमानता है उसको एक स्तर पर लागू कर देंगे। क्या सरकार आज यह कहने की स्थिति में है?

8-10 वर्ष पहले भूमि का सैटलमेंट हो चुका था। 8 दस साल पहले भी हुआ। क्या सरकार आज भी यह कहने की स्थिति में है कि इतने समय के बाद भी भूमि का लगान कायम होकर राजस्व विभाग को कागजात मिल गये हैं? नहीं मिले। सेटलमेंट विभाग भ्रष्टाचार का अड्डा बन चुका है। रोज तहसीलों में कर्मचारी जाते हैं और लोगों से मांग करते हैं कि दरख्वास्तें दो। शिकायतें करो उन दरख्वास्तों की जांच को लेकर कर्मचारी और अफसर टी०ए० और डी०ए० कमा रहे हैं। इस प्रकार तो कागजात सामने नहीं आने वाले हैं। मैं खासतौर से सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि सुस्ती की सीमा पार हो चुकी है। पैमाइश बहुत समय पहले हो चुकी है। कागजात ठिकाने पर चले जाने चाहिये। यानि राजस्व तहसीलों में पैमायश के बहाने से कागज सैटलमेंट विभाग में आज भी पड़े हुए हैं। एक एक तहसील में सैकड़ों केस बकाया पड़े हैं। बड़ी इन्तजार के बाद, सालों के बाद भी, बाप मर गया, उसके बाद बेटा मर गया, पोता और पड़-पोता आ गया पर इन्तकालात दर्ज नहीं हुए। मेरा निवेदन है कि इन सारे मामलों को वहां से जल्दी से जल्दी निपट कर तहसीलों में कागजात चले जाने चाहिये भूमि को जिन्होंने खरीद फरोख्त की है तो उनकी दरख्वास्तों का समाधान होना चाहिये ताकि लोगों की समस्याओं का समाधान हो। समाजवाद, जिसका हम नारा लगाते हैं, वह तो अभी कोसों दूर है, पर ये कई छोटे मोटे काम तो निपटने चाहिये।

श्री दौलतराम सारण : सैटिलमेन्ट विभाग में नाजायज तौर से पैसा गांव वालों

(श्री दौलतराम सारण)

से उगाया गया, कैसे उनसे वसूल किया गया, यह भी तो कह दें थोड़ा ?

श्री हंसराज आर्य : मैंने भ्रष्टाचार का यह अड्डा है, कह तो दिया ।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : हम तो हमेशा यह कहते थे, आपको आज मालूम हुआ जब आपके घर में यह सवाल आया, आप खुद पर बीतने लगी तब। ऐसी इस भ्रष्टाचार को पनपाने वाली सरकार को तो खतम कर देना चाहिये ।

श्री विजयसिंह : फिर भी आप इस भ्रष्टाचारी सरकार में बैठे हैं ।

श्री उपाध्यक्ष : किसी की समझ में बात पहले आती है, किसी के बाद में आती है ?

श्री हंसराज आर्य : इस सरकार के प्रशासन में सुस्ती है, अनियमितताएं हैं, भ्रष्टाचार है, इसे दूर नहीं किया गया तो समाजवाद से पहले और कोई वाद आ सकता है ।

आज ऐसे कितने दफ्तर हैं जिनमें सालों से फाइलें चक्कर नहीं काट रही हैं, पर उन पर निर्णय नहीं होते । वह गरीब किसान जिसके पास शाम और सुबह तक का खाने का प्रबन्ध नहीं है अपने घर के बरतन तक रहन रखकर सफा करके आपके इन दफ्तरों के चक्कर खाते हैं । तीन तीन चार चार साल हो जाते हैं पर उनको न्याय नहीं मिलता, यह बहुत बड़ा अन्याय है । चाहिये तो यह था कि जनता को न्याय सीधा और सस्ता मिले, पर वह तो दूर रहा सालों तक चक्कर खाने के बाद भी नहीं मिल पाता । इसलिये मैं सरकार से निवेदन करता हूं, कि समय रहते सरकार चेते । अपने वादों को ध्यान में रखकर उनकी पालना करे । सरकार घोषणा करती है, बहुत से कानून पास करती है पर इसके बाद उनका क्या होता है, कुछ पता नहीं चलता । दो साल पहले राजस्व मन्त्रीजी ने सदन में कहा था कि गंगानगर जिले में खिदमतगार, नाई, कोतवाल आदि के लिए जब मैंने कहा था कि उनको जमीनों पर अभी तक खुदकाश्त के खातेदारी अधिकार नहीं मिले हैं तो उनको यह अधिकार जल्दी दिलाये जावेंगे । मन्त्रीजी ने हुक्म भी जारी कर दिया, कलेक्टर के नाम । कलेक्टर ने तहसीलदारों के पास भेज दिया । पर वह हुक्म आज दिन तक तहसीलदारों की फाइलों में दबा पड़ा है । किसी एक को भी उनमें से खातेदारी हक नहीं मिल सके हैं । इससे बढकर सुस्ती, अनियमितता और मनमानी क्या हो सकती है । मैं निवेदन करूंगा मन्त्रीजी से कि वे इस ओर ध्यान दें ।

समय बड़ी तेजी से बदलता जा रहा है । आज हमारे प्रदेश में पढ़े लिखे ऐसे हजारों नौजवान हैं जो सडकों पर हाय हाय करके सिर पीटते हैं । घर में उनके खाने पहनने के लिये रोटी कपड़ा नहीं है । अगर जल्दी ही उनकी बेकारी को दूर नहीं किया गया, रोजगार उनको नहीं उपलब्ध कराया गया तो ये नौजवान अब आपको भी अधिक दिनों तक बख्शेंगे नहीं ।

आज हम ढिंढोरा पीट रहे हैं कि हम समाजवाद लाना चाहते हैं । मैं मुख्य-मंत्रीजी से पूछना चाहता हूं राजस्थान कैनाल में

(श्री हंसराज आर्य)

काफी सरकारी जमीन खाली पड़ी है। इस सदन में तीन साल से नहीं, चार साल से बराबर सदस्य कहते आये हैं, मैं भी कहता आया हूं पर आज दिन तक सरकार भूमि को बांटना नहीं चाह रही हैं। इतना बड़ा आन्दोलन इसके लिये जिले में चला, हजारों आदमी जेलों में गये। लाठियां, गोलियां चलीं। लाखों दर्खास्तें लगीं। क्या इन सबके बाद भी सरकार यह कहने की स्थिति में है; कि हम इतने समय में यह सारी खाली पड़ी जमीन भूमिहीनों में बांट देंगे। नहीं है। मेरी मान्यता है कि आने वाले एक साल तक तो सरकार इस स्थिति में नहीं होने वाली है।

सरकार से मैं निवेदन करना चाहता हूं, खासतौर से राजस्व मन्त्रीजी से कालोनाइजेशन मन्त्रीजी से कि राजस्थान कैनाल की खाली पड़ी जमीन शीघ्र से शीघ्र उन किसानों भूमिहीनों को बांट दो अलॉट कर दो जिनकी दर्खास्तें आज से तीन साल पहले लग चुकी थीं और जिनको प्रमाणिक मान लिया गया हैं कि ये भूमिहीन हैं। अब नहीं बांट रहे हैं इसमें क्या रहस्य है। उल्टे हर साल गलत आदमी काबिज हो रहे हैं। कालोनाइजेशन मन्त्रीजी को पता है, यह अनूपगढ़ गये थे, वहां लाखों बीघा जमीन पर लोगों के नाजायज कब्जे मिले हैं। लाखों का खर्चा हुआ। नतीजा क्या निकला ? एक पैसा सरकार के घर में नहीं आया। अब भी मेरा निवेदन है कि समय रहते सरकार उस भूमि को भूमिहीनों में उसके हकदारों को दे दें, नहीं तो एक वक्त आवेगा, जब लोग जबरन इस पर कब्जा कर लेंगे। आपको फिर लाठियां और गोलियां चलानी पड़ेंगी।

मैं सरकार से यह भी पूछना चाहता हूं कि भूमिहीनों को भूमि जो आपने थोड़ी बहुत आज अलाट की है क्या वे काश्तकार इस स्थिति में हैं कि उन जमीनों पर खुद-काश्त कर सकेंगे। नहीं हैं। वे तो किसी के खेत में मजदूर बनकर मजदूरी कर रहे हैं।

मैं कहता हूं ऐसे लोगों को सरकार साधन दे। ट्रैक्टर दे, बीज दे और ऋण की जरूरत हो तो ऋण दे या पैसा मुफ्त में दे उधार दे तो फसल पर वसूल कर लिया जावे। पर साधन उनको दे ताकि वे इस स्थिति में आ जावें कि अलाट की हुई जमीन का वे लाभ ले सकें। नहीं, सरकार अलाट भी करेंगे तो साधनों के अभाव में वह जमीन दूसरों के हाथ में चली जावेगी और वे मजदूरी की मजदूरी ही करते रहेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान में परिवार नियोजन का अभियान चलाया जा रहा है। पर फिर भी आबादी तेजी से बढ़ती जा रही है। उनके निवास की समस्या बनती जा रही है। लोग गांवों में कच्चे टूटे फूटे घरों में गन्दे गड्ढों में पड़े हैं। इस समस्या को हल करने के लिये सरकार शहरों और गांवों में जमीनें एक्वायर करे, उसे आबादी में बदले और लोगों को मकान बनाने के लिये अलाट करे सब से पहले आदिवासी हरिजन लोगों को दिये जावें। इनको फ्री दिया जावे। इसके बाद भी परिवार नियोजन योजना पर सरकार ने कठोरता से अमल नहीं किया तो आपकी सारी योजनाएं फैल होती चली जावेंगी।

उपाध्यक्षजी, बिजली के बारे में सरकार सोचती नहीं है। बिजली विभाग में इतना

(श्री हंसराज आर्य)

भयंकर भ्रष्टाचार व्याप्त है, इतनी अनियमितताएं हैं कि जिसकी हिन्दुस्तान में कहीं कोई मिशाल नहीं मिलेगी। दुःख तो इस बात का है कि इस भ्रष्टाचार का पता सरकार को है, चेयरमैन को है, सदस्यों को है, मन्त्रियों को भी है, लेकिन किसी के कान पर जूं नहीं रेंगती। इन भ्रष्टाचारियों की जो इच्छा होती है वह करते हैं। मेरा सरकार से निवेदन है कि समय रहते अगर बिजली विभाग के इस खुले आम चल रहे भ्रष्टाचार को नहीं रोका, इस विभाग के कर्मचारियों को तो लोग बाजारों में नंगा करके इनको मारेंगे। इतने में ही सब कुछ सरकार को समझ लेना चाहिये। इस विभाग को समझ लेना चाहिए खासतौर से गंगानगर जिले की कुछ तहसीलें बिजली से उपेक्षित हैं। कुछ तहसीलों के गांवों को काफी बिजली दे दी गई है, कुछ को बिलकुल ही नहीं दी गई। नोहर भादरा तहसीलों में तीन गांवों में बिजली दी गई, जबकि पास की तहसीलों के कई कई गांवों में बिजली पहुंचा दी गई है। बिजली पर कन्ट्रोल करने वाले रहते चूरू में हैं, गांव जिला गंगानगर में हैं। चूरू वाले मिटिंगों में नहीं जाते और बिना उनकी रिपोर्ट के बिजली मिलती नहीं। इसके लिये भी सरकार सोचे, कोई रास्ता निकालें।

आज तक इन दो तहसीलों में केवल तीन गांवों को बिजली मिली है। जब कि पास की तहसीलों में दस दस बीस बीस गांवों को बिजली मिल चुकी है।

उपाध्यक्ष जी, क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का सिचाई रकबा बहुत कम है। पीने के पानी की भी समस्या है। इसके लिये तथा हरसाल कहीं न कहीं पड़ने वाले अकाल का सामना करने के लिये भी सिंचाई के साधन बढ़ाने चाहिये। इससे पीने के पानी का प्रबन्ध होगा और अकाल का क्षेत्र भी कम होगा।

पिछली बार सदन में चर्चा आई थी तो कहा गया था कि बीकानेर क्षेत्र में जो लिफ्ट इरिगेशन स्कीम से जो नहर का पानी लाया जा रहा है उसका मुख्य उद्देश्य क्या है। सिंचाई मन्त्री ने उत्तर दिया था कि इसका मुख्य उद्देश्य पीने का पानी देना है। आज भी मेरे तारांकित या अतारांकित प्रश्न के उत्तर में बताया गया है कि यह पानी पचास गांवों को दिया जावेगा। पानी उन गांवों को दिया जावेगा जिनके पास से नहर जाती है। सरकार का इसमें क्या ख्याल है। मेरा निवेदन है कि लूणकरणसर बीकानेर का इलाका है जहां तीस चालीस मील तक पीने के लिये पानी नहीं है। सरकार को चाहिये कि नहर का पानी नलों के द्वारा पूगल और बीकानेर के इलाके में देना चाहिये। ताकि वहां के लोगों की समस्या का समाधान हो सके।

इसके साथ ही मेरा निवेदन है कि हमारी भाखरा नहर के पानी के वितरण में कई प्रकार की अनियमितताएं हैं, पक्षपात है। उस भाखरा नहर में सूरतगढ़, हनुमानगढ़, पीलीबंगा, सरदारगढ़ में जहां 72 से लेकर 92 प्रतिशत तक पानी चलता है वहां मिट्टी निकालने के नाम पर काफी रुपया खर्च किया गया इसके मुकाबले में जिन नहरों में मुश्किल से 35 और 28 परसेन्ट तक पानी आता है वहां की नहरों से मिट्टी निकालने के लिये सबसे कम पैसा खर्च किया गया। जैसे नोहर, भादरा की जसानो अमरसिंह ब्रांचों को अभी 31 लाख रुपये नहर के लिये

(श्री हंसराज आर्य)

दिये गये हैं। मिट्टी निकलवाई जाये और ज्यादा रेगिस्तानी क्षेत्र हो तो उसको पक्का करवाया जाये। जहां पानी कम लगता है और वह पानी भी नहीं के बराबर है। मेरा सरकार से निवेदन है कि सरकार की जो यह पक्षपातपूर्ण नीति है वह नीति बन्द होनी चाहिये और इसका समाधान करना चाहिये।

उपाध्यक्ष जी व्यास नदी पर पोंग डेम बन रहा है और वह पूर्णरूप से सन् 62-63 में बन कर तैयार हो जावेगी। उस पानी में हमारा 58 प्रतिशत पानी है। उस पानी को लेने के लिये सरकार को अभी से तैयार होना चाहिये। सरकार को अभी से तैयारी करनी चाहिये। सिधमुख नहर का काम जल्दी शुरू करना चाहिये नहीं तो हमारा पानी हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और पंजाब ले जायेगा और हम पिछड़ जायेंगे। मेरा निवेदन करना है कि यह 58 प्रतिशत पानी हमको लेना होगा और इन दोनों नहरों का निर्माण का काम अभी से शुरू कर देना चाहिये ताकि समय पर हम पानी का उपयोग कर सकें।

उपाध्यक्षजी, शराब के सम्बन्ध में मैं निवेदन करना चाहता हूं। एक गंगानगर जिले में दो करोड़ रुपये की शराब की बिक्री होती है और लाखों रुपयों के करीब शराब नाजायजरूप से भट्टियों से निकाली जाती है। खेद इस बात का है कि आज तक सरकार ने और उसके कर्मचारियों ने शराब की नाजायज भट्टियों को रोका नहीं है। इसलिये मेरा खासतौर से सरकार से निवेदन है कि सरकार अगर यह चाहती है कि सन 72-73 तक शराब बन्दी कर देगी तो उसे शराब के ठेकों की संख्या को कम करना चाहिये, नाजायज शराब को रोकना चाहिये। बाजारों, गांवों में बिना ठेके की शराब गाड़ियों में, जीपों में लाई जाती है और लोग जीपों में शराब को लेकर इस तरह से घूमते हैं जैसे रेडियों लेकर सब्जी बेची जाती है, लोकी लो, तोरी लो, उसी तरह से कहते हैं शराब लो, बढ़िया लो अच्छी लो, सस्ती लो। इस तरह फेरी लगाकर शराब को बेचते हैं। उपाध्यक्ष महोदय, इस से बड़ी शर्म की क्या बात हो सकती है। मेरा सरकार से निवेदन है कि इस शराब खोरी को रोका जाये और उसके ठेके को कम किया जाये। इस सम्बन्ध में देरी नहीं होनी चाहिये और अगर देरी करेगी तो आपस में शराब पीकर लोग खून की होली खेलेंगे। सरकार की जिम्मेदारी है कि वह इस ओर ध्यान दे।

उपाध्यक्ष महोदय, समाजवाद लाने के लिये हमारी सरकार कहती है लेकिन महंगाई आसमान को छू रही है। भावों का क्या हाल है। जो मजदूरी कर के पेट भरते हैं, उनका और छोटे कर्मचारियों का क्या हाल है जिनका कि वेतन 60, 70, 100 रुपया माहवार है और जिनके घर में 10, 12 लोग हैं। कुछ ऐसे भी परिवार हैं जिन की कि संख्या 20 तक पहुंच गई है एक चपरासी से पूछिये उसकी क्या हालत है। मैंने एक चपरासी से पूछा, उससे बातचीत की। क्या हाल है। उसने कहा—सब ठीक है। गाड़ी चल रही है। दिन गुजर रहे हैं। किसी तरह दिन कट जाता है। मेरे पास में दो भैंस हैं उनका दूध बेचता हूं। कुछ गोबर बेचता हूं और दो बच्चे गोबर चुन कर लाते हैं। इस तरह की स्थिति है सरकार नहीं सोचेगी

(श्री हंसराज आर्य)

तो किस तरह गरीब व्यक्ति अपना गुजारा कर सकेगा। उनकी तनख्वाह बहुत ही कम है। सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिये और महंगाई को कम करना चाहिये या उनकी तनख्वाह बढ़ाई जानी चाहिये।

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात का सबसे बड़ा अफसोस है कि आज से तीन साल पहले राजस्व मन्त्री महोदय ने इस सदन में कहा था कि सरकार किसानों को पास बुक देने की व्यवस्था कर रही है। इससे उनके जो झगड़े हैं उस समस्या का समाधान हो जायेगा। यह भी कहा गया था कि एक साल के अन्दर काफी किसानों के पास पास बुक पहुंचा देगी। उस बात को आज तीन साल हो गये हैं और आज तक राजस्थान के 32 हजार गांवों में से 10 हजार गांवों के अन्दर भी सरकार ने किसानों के पास पास-बुक नहीं पहुंचाई हैं इसलिए मेरा खासतौर से सरकार से निवेदन है कि सरकार ने जो ऐलान किया है उसको पूरा करे और वह पासबुक जल्दी से जल्दी दो, तीन महीने के अन्दर किसानों के पास पासबुकें पहुंचा देवें ताकि किसान पटवारियों के शोषण से मुक्त हो सके। जिस किसान को कर्जा लेना होता हैं तो उसे खाते की नकल निकलवानी पड़ती है और वह नकल उसे पटवारी से लेनी होती है। ऐसा एक भी पटवारी राजस्थान में नहीं हैं जो दस से लेकर 50 या 150 रु० तक सरेआम किसानों से रिश्वत न लेता हो। इसलिये मेरा निवेदन है कि अब इस काम में देरी नहीं होनी चाहिये क्योंकि बहुत समय बीत गया हैं।

श्री उपाध्यक्ष : समय बहुत हो चुका है।

श्री हंसराज आर्य : उपाध्यक्ष महोदय, मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि सन 50 से से पहले जिन किसानों के पास भूमि काबिल काश्त थी काश्तकारी कानून में यह साफ हैं, कि धारा 15 में साफ हैं कि सन 55 में जिस किसान की जमीन काबिले काश्त थी वह किसान स्वतः ही उसका खातेदार होगा लेकिन हजारों की संख्या में ऐसे किसान हैं जिनको कि खातेदारी हकूक नहीं मिल पाये हैं। मेरा निवेदन हैं कि ऐसे भूमि पर स्वतः ही खातेदारी हक दे देना चाहिये और 55 के बाद में जो किसान काश्त कर रहे हैं और आरजी काश्तकार हैं, बारानी क्षेत्र में भूमि हैं और 15 साल से काश्त कर रहें हैं, उस किसान की भूमि शीघ्र से शीघ्र दरख्वास्त लेकर खातेदार उसको घोषित कर देना चाहिये।

मेरा निवेदन है कि मैंने जो जो मुख्य समस्यायें हमारे प्रान्त की और हमारी जिले की तथा मेरी तहसील को समस्यायें हैं वह सरकार के सामने रखी हैं और आशा है कि सरकार इसी ओर ध्यान देगी। इन्हीं शब्दों के साथ राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर जो धन्यावाद का प्रस्ताव आया है उसका मैं तहेदिल से समर्थन करता हूं।

श्री उपाध्यक्ष : श्री मनोहर सिंह मेहता।

श्री मनोहर सिंह मेहता (माण्डलगढ़) : उपाध्यक्षजी, अभिभाषण के प्रारम्भ में ही राज्यपाल महोदय ने फर्माया है कि सन् 1970-71 का वर्ष एक ऐतिहासिक वर्ष रहा है। समाजवाद के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में जो महत्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं वे सब आपके सामने हैं।

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

उपाध्यक्षजी, मेरे समझ में नहीं आया। मैंने इसको पढ़ा जब मालूम हुआ मैंने सोचा कि यह निर्णय लिया गया होगा कि अब राज्यपाल महोदय अपने खर्चे में कटौती करेंगे और मन्त्रिमण्डल को ऐसा आदेश देंगे कि वह सादगी से रहे। लेकिन उनके अभिभाषण में उपलब्धि थी कि 14 हजार लूप लगवा दिये गये हैं, 20 हजार का बन्ध्यीकरण का ऑपरेशन कर दिया गया है। 6 जिलों में शराबबंदी हुई। इतना होते हुए भी शराब खूब बिकी जैसे अन्न का उत्पादन बढ़ा वैसे ही शराब का उत्पादन बढ़ा। क्या यही समाजवाद है? और इस वर्ष तो उपाध्यक्ष जी, अपने अभिभाषण में जिस बात के लिए सरकार वचनबद्ध है कि सन् 72 तक सम्पूर्ण नशाबंदी सरकार करेगी, इस बार उसका जिक्र तक नहीं किया गया है। इससे बढ़ कर वचन भंग और क्या हो सकता है? इस सरकार ने राज्यपाल महोदय से वचन भंग का अपराध कराया है उससे बढ़कर शर्म की बात और कोई नहीं हो सकती है। इसमें कोई शक नहीं है कि इन्दिराजी की बहुत प्रबल जीत हुई है लेकिन वैसा ही लग रहा है जैसे मन्दिर के ऊपर कलश चढ़ाया जाता है तो यह ताम्बे के कलश पर सोने का मुलम्मा चढ़ाया जाता है और सारे ग्रामवासी मिलकर उसे गाजे बाजे के साथ ले जाकर उस कलश को प्रतिष्ठित करते हैं। लेकिन साल दो साल बाद क्योंकि उसमें रंग दो हैं नीचे ताम्बा है और ऊपर में सोना– इसलिये उसका रंग प्रकट होने लगता है —

"बाहर तो कई और है, भीतर है कई और।
आखिर उघटें एक दिन,
ताम्बे चढ़ियो झोल।

तो यह समाजवाद का जो नारा है उसकी असलियत थोड़े दिन में मालूम होने वाली है कि समाजवाद नहीं सर्वनाशवाद तेजी से आ रहा है गांधीजी के शब्दों में जो राष्ट्र शराब का शिकार है उसका सर्वनाश निश्चित है और फिर विकास के स्वप्न देखे जाते हैं। वहां तो सर्वनाश निश्चित है। यह सरकार सर्वनाश की ओर तेजी से बढ़ रही है– इन्दिरा जी के नेतृत्व में। मैं उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से राज्यपाल महोदय को बधाई दूं या क्या दूं। जो सरकार 72 तक पूर्ण शराब बन्द करना चाहती थी उस सरकार ने राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में शराबबन्दी पर एक शब्द भी नहीं दर्शाया। मेरा तो मानना यह है जिन 6 जिलों में आपने शराबबन्दी की है वहां पर भी इसको खोल दो। दूसरा क्या कहें उस सरकार को जो सरकार दारुड़ी बेचती है।

"जो दारुड़ी बेचकर धन खीचे दिन रात।
करे बावली बात तो, बुरी न मानो बात।"

अगर वह राज बावली बात करे तो हमें बुरा भी नहीं मानना चाहिये क्योंकि वह शुरू से ही खराब कामों में लगी हुई है, शराब की आमदनी का मोह नहीं छोड़ रही है, लाटरी दैनिक निकल रही हैं– सरासर जनता में जुआ की आदत डाली जा रही है। इससे बढ़कर शर्म की और क्या बात हो सकती है। शराब और जुआ की आदत डालकर लोगों के घर उजाड़े जा रहे हैं...

श्री उपाध्यक्ष : आपस में बात नहीं।

श्री मनोहर सिंह मेहता : आपने क्या फरमाया ?

श्री उपाध्यक्ष : आप जारी रखिये। आपस में बात नहीं करें, माननीय सदस्य।

श्री मनोहर सिंह मेहता :

शिक्षा

उपाध्यक्ष महोदय, शिक्षा के बारे में हर बार नारा लगाया जाता है– एक करोड़ से चालीस करोड़ का खर्चा ले गये। बहुत सारे हाई स्कूल खोल दिये, बहुत सारे हायर सैकेन्डरी स्कूल खोल दिये और बहुत सारे कॉलेज खोल दिये लेकिन मैं पूछना चाहता हूं उनका परिणाम क्या हो रहा है। आपने शिक्षा में बिलकुल परिवर्तन नहीं किया। जो अंग्रेजों के समय शिक्षा मिलती थी वही आज मिल रही है। श्रम और बुद्धि में अन्तर है। नौकरी के अलावा और आज कोई रास्ता नहीं दिखता है—

"गोरा गया पण आज भी, शिक्षा वोरी वोय,
सगला चावे नौकरी, धन्धो करे न कोय ॥"

कोई धन्धा नहीं करते हैं और बेकारी कितनी बढ़ रही है, इसका आप अनुमान लगा सकते हैं—

"राज विचारों देश में, कतरा है बेकार।
मांग करो थे तीन की, तेरा सौ तैयार ॥"

1300 आदमी तैयार है। नौकरी के अलावा दूसरा रास्ता उनको सूझता ही नहीं हैं। बुद्धि का काम करने वाले ऊंचे और शारीरिक काम करने वाले नीचे यह तो इनका मानना है। आइ. ए. एस. आफिसर्स और मिनिस्टर्स मौज करें और दूसरे लोगों को एक समय खाना भी नसीब नहीं हो। एक तरफ एम. एल. एज. को 31 रु. रोज और दूसरी तरफ एक चपरासी को दो रुपये रोज। क्या यही आपका समाजवाद है ?

चिकित्सा—

उपाध्यक्ष महोदय, मैंने जब 12 हजार किलोमीटर फ्री घूमने का विरोध किया था और वह मैंने केवल इसलिए छोड़ा था कि मेरे अमुक अमुक स्थान पर दवाखाना नहीं है वहां दवाखाना खोल दीजिये तो जवाब मिला था हमारे पास पैसे नहीं है। मेरे क्षेत्र और बहुत से माननीय सदस्यों के क्षेत्र में दवाखाना खोलने के लिये पैसे नहीं हैं और दूसरी तरफ हमारे नेता मोटरों में ऐश आराम करें, सैर-सपाटे करें। मैं कहता हूं उनको राज्य में रहने का अधिकार भी नहीं है। आज कई तहसीलों में दवाखाना नहीं है। चौमासे में बसें उन तहसीलों में नहीं पहुंच पाती है – तहसीलों में सड़कें नहीं हैं। एक बेचारा गरीब साधन के अभाव में मर जाता है, यही आपके समाजवाद की हालत है ? कई जगह तहसीलों में लोगों ने मोटरों की शकल नहीं देखी है। आज लोग चन्द्रलोक तक पहुंच गये हैं और हमारे गांवों के लोगों ने बसों की शकल तक नहीं देखी है ......

श्री उपाध्यक्ष : अब तो वोटों के जमाने में लोग गांवों के अन्दर तक मोटरें ले जाते हैं।

श्री मनोहरसिंह मेहता : उपाध्यक्ष महोदय, मेरे क्षेत्र में आज तक कई लोगों ने मोटर नहीं देखी है। वोटों के जमाने में ट्रकें जरूर जाती हैं लेकिन बसें लोगों ने नहीं

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

देखी हैं। क्योंकि पी. डब्ल्यू. डी. की कृपा से सड़कें नहीं बनी हैं। दवाखाने नहीं हैं लेकिन आ रहा है समाजवाद ?

वन—

वन की स्थिति ऐसी हो गई है, जहां से मैं आ रहा हूं सघन वन थे और इधर से उधर जाना बहुत मुश्किल था, वर्षा का औसत वनों से अच्छा था लेकिन आज सारे जंगलों को धराशायी कर दिया गया है।

"काट लिया सब रूंखड़ा, वन का पसंट पाट। कां जांके बरसात की, जदी जीवड़ा बाट ॥"

आज तो सारे उल्टे काम किये जा रहे हैं, अकाल के नाम पर पैसे का बहुत दुरुपयोग हुआ है - पत्तियों को सींचा जा रहा है—पेड़ों को नहीं सींचा जा रहा है।

अगर शिक्षा में परिवर्तन किया होता, ग्रामोद्योगों को नष्ट नहीं किया होता, वनों को नष्ट नहीं किया होता तो आज यह स्थिति नहीं आती। सारे के सारे ग्रामोद्योग नष्ट हो गये। बड़ी खूबी के साथ अभिभाषण में कहा गया है गुलाबपुरा में 121 लाख से कपड़े का मिल उद्योग खोला जा रहा है यह उसी तरह से है जिस तरह से ट्यूब वैल्स के लिये कहा जाता है कि एक जगह ट्यूब वैल लगायेंगे तो जितने आस पास के कुएं हैं वे सब सूख जायेंगे। जब एक जगह मिल खड़ा करते हैं तो सम्बन्धित दूसरे सारे धन्धे चौपट हो जाते हैं। आजादी के बाद इन 23 वर्षों में आपने धन्धों को नष्ट करने के अलावा कुछ नहीं किया है। सारे ग्रामोद्योगों को धराशायी कर दिया है और अब आप डालडा मिल खोल रहे हैं। मैं तो इसको गाय मार घी की संज्ञा देता हूं- गाय मार घी का मिल खोल रहे हैं। गाय की उपयोगिता कम हुई है—इन ट्रेक्टरों ने हमारी गाय की उपयोगिता को खत्म कर दिया है......

श्री उपाध्यक्ष : आपको तो अभिभाषण पर बधाई देनी चाहिए क्योंकि शराब बनाने वाले कुटीर उद्योगों के रूप में बना रहे हैं।

श्री नत्थी सिंह (भरतपुर) : गाय की उपयोगिता अब मत-पत्रों में रह गई है।

श्री मनोहर सिंह : एक तरफ गाय से मत लिए जाते हैं और दूसरी तरफ गायों को काट रहे हैं। आप बतायें क्या होगा इस देश में जहां गायों को काटा जा रहा है—दूध को नष्ट किया जा रहा है। इन 23 सालों में आपने दूध दूभर कर दिया है। पहले घी घड़ों में भरा रहता था—लेकिन अब तो

" दाल परीगी तेलग्यो, घी तो कोसां दूर।

नाथे मत खाबे परी, रोटी जल में चूर ॥"

23 साल में यह स्थिति ले आये हैं आप और अब इन्दिराजी के राज में तो और खासतौर से इस स्थिति में तो। अब जल में चूर चूर कर रोटी खानी पड़ेगी।

यूरिया की बात करते हैं, उससे सारे खेत खराब हो जायेंगे। आज उसी के भरोसे काम चल रहा है। सारा कम्पोस्ट खाद नष्ट होता जा रहा है इसकी उपाध्यक्ष महोदय,

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

कल्पना कीजिये क्योंकि आप तो उस क्षेत्र के हैं जहां गायों की बड़ी भक्ति की जाती है.......

श्री उपाध्यक्ष : अबकी बार तो गाय की सभी ने भक्ति की है।

श्री मनोहर सिंह मेहता : इन्होंने असली गाय की भक्ति नहीं की है। कागजी गाय की की है।

श्री वृद्धि चन्द्र जैन : नहीं, असली गाय का है।

श्री मनोहर सिंह मेहता: आपने असली गाय की है तो आपको धन्यवाद है।

श्री दिग्विजय सिंह (उनियारा) : बिना दूध देती गाय की की है।

श्री मनोहर सिंह मेहता: कितने ग्रामोद्योग चलते थे लेकिन आज लुहार, बढ़ई, तेली कतवारी, बुनकर, खाती आदि सभी के धन्धे चौपट हो गये हैं। आज असली गाय के घी में भी विश्वास नहीं रहा है। परिणाम यह होता है कि घी नहीं मिलता है। गाय को कौन रखेगा, ट्रेक्टर आ गये हैं। भारत की सारी संस्कृति को नष्ट कर दिया है और सबसे बड़ी दुर्भाग्य की बात तो यह है कि नेहरू परिवार को भारतीय संस्कृति में विश्वास नहीं है। नेहरूजी कहते थे अंग्रेज यहां से चले जायं और अंग्रेजियत बनी रहे लेकिन देश का मानना यह था कि अंग्रेज भले ही यहां रहें लेकिन अंग्रेजियत चली जाय परिणाम यह हुआ कि न भारत भारत ही रहा और न भारत इंगलैंड बन सका। वहां भी भीख पर जीवित रहने वाला यह देश अब कब तक कितने दिन जीवित रह सकेगा। पता नहीं हमारे नेताओं के सीने में दर्द क्यों नहीं होता है फिर भी हमारे नेता लाखों की मोटरों में घूमते फिरते हैं। भारत की स्थिति की कल्पना करके क्यों नहीं चलते हैं। इस भारत का क्या होने जा रहा है, इसको गंभीरता से सोचें।

पौष्टिक आहारः—

पौष्टिक आहार की बालकों की बात आई तो कहते हैं हमने बच्चों को पौष्टिक आहार देने की कोशिश की है। आप क्या और कैसे पौष्टिक आहार की व्यवस्था कर रहे हैं। दूध का मक्खन निकाल कर अमेरिका से भेजे हुए उस पाउडर मिल्क की व्यवस्था कर रहे हैं और वह मक्खन निकला दूध हमारे नेता बड़े शौक से देते हैं और गौरव से बखान करते हैं।

मैंने भी देखा हमारे भीलवाड़ा में कि कुछ कुओं में चोरी के दूध के डिब्बे डाले गये थे। पहले तो दूध की नदियां बहती थी और अब कम से कम यह तो देखने को मिला कि हमारे कुएं तो सफेद हैं। हमारे यहां सोयाबीन और बेसन भी दिया जाता है और इसके पकोड़े खिलाते हैं। हमारे पूर्वजों ने कभी भी भिक्षा के लिए हाथ नहीं फैलाया था और आज भिक्षा के लिए हाथ फैलाया जा रहा है। बच्चे शुरू से ही भिक्षा मांगना सीख रहे हैं। यह तो हालत आपने हमारे भारत की कर दी है और हम समाजवाद की कल्पना करते हैं। हां, जयपुर में जरूर दो तीन दिनों से समाजवाद के दर्शन होने लगे हैं। जब हम पान खाने पान की दुकान पर जाते हैं तो दुकानदार कहता है रेजगी दो और इस रेजगी ने कम से कम पान तो छुड़ा दिये। रिक्शा में बैठते हैं तो कहते हैं कि

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

पैसा दो। स्टोव में डालना चाहे तो तेल नहीं यह सारा का सारा क्या हो रहा है। तो उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका अधिक समय नहीं लूंगा। लेकिन मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं।

'बेकारी मारी बढ़ी दुखी भूख सूं लोग।
चौपट हो गया चूकता गावांरा उद्योग।।"

यह जो बड़े बड़े मिल स्थापित करने की प्रवृत्ति है इसको बन्द करें। लाटरी, जुआ और शराब बन्द करें। शिक्षा में आमूल परिवर्तन करें। जब तक यह नहीं करते तब तक समाजवाद नहीं आ सकता सर्वनाश आ सकता है।

इस भाषण में सहकारिता का बड़ा बखान किया गया है। उपाध्यक्षजी, सहकारी समितियों की आप अधिकांश की हालत देखें तो हालत यह है कि जो उनके मंत्री हैं या अध्यक्ष हैं वह उनको खा गये हैं।

"पंचायत और सहकारिता दोनों मंत्र महान
किन्तु चले कूकर बता बिन त्याग और बलिदान"

कल उपाध्यक्षजी, मैंने प्रश्न किया कि पंचायत समितियों के अपने फार्म्स चल रहे हैं और उनमें इतने लाखों का घाटा है केवल भीलवाड़ा जिले में और मैंने मांग की थी कि 26 जिलों की जांच तो करवायें तो बड़े गौरव के साथ मंत्रीजी ने मना कर दिया कि जांच नहीं करा सकते। मैं दोष नहीं देता क्योंकि सत्ता का बड़ा नशा होता है। शराब पीने वालों को तो एक बोतल का नशा होता है लेकिन सत्ता में तो सो बोतलों का नशा होता है :

"सत्ता माहि हैं नशो, तोल बोल कतरोक।
दारू की सो बोतला, घटकावे जतरोक।।"

शराब की सौ बोतलें गटकावें उतना नशा होता है। उन्होंने यह नहीं सोचा कि अगर किसी व्यापारी के पास दस दुकाने हैं तो वह हर साल जाकर जांच करेगा और जो दुकान घाटे में मिलेगी उसके मुनीम को निकालेगा लेकिन बड़े गौरव से मंत्री जी ने मना कर दिया कि हम जांच नहीं करा सकते। मत कराओ लेकिन हम भी प्रहरी हैं। हम अल्पमत में हैं फिर भी सहन नहीं करेंगे। हमारे राज्यपाल महोदय ने शराब बन्दी का कोई जिक्र नहीं किया लेकिन इधर और उधर बैठने वाले हम मौन बैठे हैं। अब तो स्थिति यहां तक हो गई है कि हम बाहर क्यों जायें हमारे कुछ माननीय सदस्य ऐसे भी है और 184 में से एक सदस्य तो ऐसे हैं कि जो सबसे अधिक काबिल है, लीडिंग वकील हैं, फर्स्ट क्लास फर्स्ट उनको मिला, गोल्ड मेडलिस्ट हैं लेकिन इस शराब की लत ने उनको खराब कर दिया। इसमें और किसी का दोष नहीं, दोष है उधर बिराजने वाली सत्ताधारी पार्टी का जिन्होंने शराब चला रखी है। उनको जो बुरी आदत पड़ी है उसके जनक ये हैं। सजा इनको मिलनी चाहिये कि इतने अच्छे आदमी को शराब ने खराब कर दिया। हमारा दुर्भाग्य है कि हम शराबबंदी की ओर नहीं बढ़ रहे हैं। इधर और उधर बैठने वाले भी पी सकते हैं लेकिन सबसे ज्यादा दोष पिलाने वाले का है लेकिन हमारी सरकार तो तीनों काम करती है। खुद कलाल का धंधा करती है, मिनिस्टरों के रिश्तेदार तक ठेकेदार हैं और खूब धन कमा रहे हैं।

श्री हंसराज आर्य :

"न पीने का वक्त है, न पिलाने का वक्त है
मदहोशों को होश में लाने का वक्त है।"

श्री मनोहरसिंह मेहता : अब मैं अधिक समय नहीं लेता हुआ जो धन्यवाद का प्रस्ताव है उसका घोर विरोध करता हूं। इसमें कोई ऐसी चीज नहीं है कि जिससे राज्यपाल महोदय को धन्यवाद दिया जाये बल्कि सख्त से सख्त शब्दों में इसका विरोध करने की आवश्यकता है। आप समाजवाद की ओर नहीं सर्वनाश की ओर देश को बढ़ा रहे हैं क्योंकि आप शराब बन्दी जैसे कदम से भी पीछे हट गये हैं।

जे. के. सिंथेटिक कोटा में फायरिंग के संबंध में वक्तव्य के बारे में व्यवस्था

श्री उपाध्यक्ष : माननीय सदस्य एक सूचना अध्यक्ष की व्यवस्था। जे. के. सिंथेटिक कोटा के फैक्ट्री मे पुलिस फायरिंग पर स्थगन प्रस्ताव की सूचना श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल द्वारा दी गई थी उस पर अध्यक्ष महोदय ने अपना प्रारम्भिक निर्णय दिनांक 16 मार्च, 71 को दे दिया था। आज सदन में इस मामले पर जो भावनायें प्रकट की गईं उसको दृष्टिगत रखते हुए अध्यक्ष महोदय ने श्री अग्रवाल के स्थगन प्रस्ताव पर पुनः विचार किया है और यह व्यवस्था दी है कि स्थिति के स्पष्टीकरण हेतु गृह मंत्री जी कल दिनांक 18 मार्च, 71 को एक वक्तव्य दें।

श्री विट्ठल भाई .

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर अग्रेतर वाद विवाद

श्री विट्ठल भाई (पीपलखूंट सु०): उपाध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय का जो भाषण हमने पढ़ा और देखा तो उसमें हम जो आशा करते थे कि जो अभी चुनाव हुए हैं लोकसभा के और उन चुनावों में इन्दिरा जी की जो घोषणायें हुई थीं और उन घो[षण]ाओं में बेकारी मिटाना, भ्रष्टाचार मिटाना और समाजवाद को लाना था। इस नीति से हमें मालूम था कि हमारे यहां भी इस साल राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं लेकिन इसमें कोई नयी बात नहीं है सिर्फ पहले पहल राज्यपाल महोदय ने बताया है कि समाजवाद की नीति हम लोग अपना रहे हैं और समाजवाद लायेंगे। ठीक है यह तो कई सालों से यह कांग्रेस पार्टी और कांग्रेसी हुकूमत समाजवाद का नारा लगाती आई है और इस समय भी जो चुनाव हुए हैं वह इस समाजवादी नारे से हुए हैं और जो भी कांग्रेस का बहुमत हुआ देश में वह इस कारण से हुआ कि समाजवाद का थोथा नारा इन्दिरा जी ने लगाया। यह कोई सच्चा नारा नहीं है और इस थोथे नारे के कारण से देश में हो सकता है इन्दिरा जी का बहुमत लोकसभा में आया लेकिन मैं यह बात जरूर कहता हूं कि इस थोथे नारे से कुछ होने जाने वाला नहीं है। कभी समाजवाद आने वाला नहीं है। समाजवाद की नीति अगर अपनाते तो कुछ हो सकता था लेकिन जिस समय कांग्रेस मरने जा रही थी और मरते समय समाजवाद का थोथा नारा लगाकर देश के जो गरीब लोग थे, जो अनपढ़ थे, जो हरिजन और आदिवासी थे उन लोगों ने सोचा कि इन्दिरा जी अब गरीबों का भला करने जा रही हैं तो उन्होंने इन्दिरा जी को वोट दे दिया, न कि पढे हुए लोगों ने वोट दिया। हो सकता है आदिवासी लोगों ने वोट दिये, हरिजनों ने दिये लेकिन इस कारण से दिया कि इन्दिरा जी ने समाजवाद का थोथा नारा दे दिया।

Page No 80

श्री हंसराज आर्य : दिल्ली वाले अनपढ़ हैं क्या ? असलियत को असलियत मानो।

श्री विट्ठलभाई : आप सुने तो सही। यह भी आपको पता नहीं है कि कितने पढ़े हैं कितने नहीं।

श्री विजयसिंह : आपके मंत्री मण्डल में माननीय कन्हैयालाल जी अनपढ़ हैं, रामचरण जी अनपढ़ हैं, अंगूठा छाप।

श्री हंसराज आर्य : समाजवाद के नारे ने आपका सारा पाटिया साफ कर दिया यह तो मानो।

श्री उपाध्यक्ष : आर्डर, आर्डर, माननीय सदस्य कृपया स्थान ग्रहण करें।

श्री विट्ठल भाई : मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इस झूठे और थोथे नारे का नतीजा आपको मालूम हो जायेगा अगले विधान सभा के चुनावों में। समाजवाद क्या है, क्या ला रहे हैं, क्या कर रहे हैं, अभी क्यों आलोचना कर रहे हैं। अभी आप ही हमारे सामने आलोचना कर रहे थे कि सरकार ने क्या क्या किया। वह तो आपने अभी बताया कि सरकार ने क्या क्या किया लेकिन जब आपके दिल में यह हुआ कि समाजवाद आने वाला नहीं है और सरकार टूटने वाली है तो आप अब कह रहे हैं। यह आलोचना सारे देश में चल रही है कि यह थोथा नारा इन्दिरा जी पूरा नहीं कर सकेगी और न सुखाड़िया जी पूरा कर सकेंगे, यह निश्चित बात समझ लीजिए।

इस बजट के भाषण से मालूम हो गया है। इस बजट भाषण में क्या है? क्या नीति है? क्या नीति को लेकर आगे बढ़ने वाले हैं और क्या गरीबों का भला करने वाले हैं? नहीं कर सकते हैं, यह निश्चित बात आप मानें। आलोचना विधान सभा में हमेशा से होती आ रही है। हम लोग आलोचना करते हैं और सच्ची बात की आलोचना करनी पड़ेगी। आज तो आप (सरकारी पक्ष) भी आलोचना करने लगे आज की सारी नीति को देखते हुए।

श्री हंसराज आर्य : जनसंघ और स्वतन्त्र पार्टी तो राजाओं का साथ दें यह तो उनकी नीति की बात है लेकिन समाजवादी भी राजाओं की स्थापना करके कौन से समाजवाद की स्थापना कर रहे हैं।

श्री विजयसिंह : इस समाजवाद में ही माननीय सदस्य ने 6 मुरब्बे जमीन कबाड़ ली है।

श्री सुरेन्द्र व्यास : राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर बोलें तो ज्यादा अच्छा रहेगा

श्री विट्ठल भाई : आज हम आ रहे थे विधान सभा में तो हमारी गाड़ी को 100-200 लोगों ने रोक लिया। उन लोगों की मांग थी कि बाजार में घासलेट नहीं मिल रहा है। हम लोगों को कांग्रेसी समझ लिया और हमारी गाड़ी रोक दी। हम लोगों ने कहा कि भाई हम कांग्रेसी नहीं हैं हम तो विरोधी लोग हैं। घासलेट नहीं मिल रहा है सारे इलाके में नहीं मिल रहा है। हमारे यहां भी नहीं मिल रहा है, लेकिन विधान सभा में इस बात को जरूर कहेंगे। घासलेट की कमी का कारण क्या है। मैं यह कहना चाहता हूं कि समाजवादी नीति और आपके समाजवाद के

(श्री विट्ठल भाई)

अनुसार लोग बाजार में घासलेट के लिए तरस रहे हैं। जो मिनिस्टर और बड़े बड़े लोग हैं वे बिजली से काम ले रहे हैं ...

श्री हंसराज आर्य : घासलेट ...

श्री उपाध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री विट्ठल भाई : लेकिन जो दूसरे छोटे लोग हैं, छोटे वर्ग के आदमी हैं कोई पान वाला है, मामूली आदमी है वह बिजली नहीं ले सकता है। वह घासलेट काम में लेता है, लेकिन एक रुपया देना पड़ता है एक बोतल का। वह देते हुए भी घासलेट बाजार में नहीं मिल रहा है। यह क्या नीति है आपकी? कम से कम आप जांच करें। इस विभाग का मिनिस्टर सोया हुआ क्यों है। क्या इसको पेट्रोल में जला दिया, क्या चुनाव में जला दिया या बाहर जो इसके कुए हैं वे बन्द हो गये? क्या कारण है? हो सकता है कि सेठ लोगों ने स्टाक में बन्द कर रखा हो। किस कारण से है? यह किस की जिम्मेदारी है? यह सरकार की जिम्मेदारी है। लेकिन सरकार इसको नहीं देखती है। लोग तड़फ रहे हैं। उसके लिए हम लोगो को रोका, और हो सकता है कि हम लोगों को पीटने की कोशिश करते। बड़ी मुश्किल से छूटकर आये। आप महंगाई को रोक नहीं पाये। आप भ्रष्टाचार को रोक नहीं सके। आपने भ्रष्टाचार हर विभाग में बढ़ाया है, चाहे बिजली विभाग को लें, चाहे नहरी विभाग को लें, चाहे शिक्षा विभाग को लें, चाहे अस्पताल के विभाग को लें, किसी भी विभाग को लें, भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में कहीं भी यह नहीं कहा गया है कि भ्रष्टाचार को मिटायेंगे। वह सबसे बड़ी चीज है। आज जितने भी विभाग हैं उनमें कोई भी काम गरीब के लिए नहीं हो रहा है। गरीब जाता है तो चूंकि उसके पास पैसा नहीं है तो उसका काम नहीं होता है। जो पैसे वाले होते हैं उनका काम होता है। गरीब आज भटकता फिरता है। भ्रष्टाचार को मिटाने की कोशिश क्यों नहीं करते हैं। आज समाजवाद का नारा तो लगा रहे हैं, लेकिन भ्रष्टाचार को क्यों नहीं मिटाते हैं। जब तक आप इसको नहीं मिटायेंगे तब तक गरीबों का भला नहीं हो सकता है। आज आप कहते हैं तो हैं कि गांव गांव में बिजली आ गई है, खेत खेत में पानी पहुंच गया है तो कौन से गांव में बिजली दे दी है और किस गांव में खेत खेत पर पानी पहुंच गया है। जहां पर बान्ध बन्धे हुए होते हैं वहां पर अफसर अपनी नादिरशाही करते हैं। वहां पर भी पक्षपात होता है। कुछ लोगों को पानी देते हैं और कुछ लोगों को पानी नहीं देते हैं। जिन्होंने पैसा खिला दिया उनको पानी दे दिया जाता है और जहां पैसा नहीं खिलाया जाता हैं वहां पर पानी नहीं दिया जाता है। राजनैतिक पक्षपात भी चलता है। घाटोल में एक बन्धा है उससे पानी वहां पर एक समाजवादी गांव हैं वहां की हर साल फसल सूख जाती है लेकिन उसको पानी नहीं देते हैं। इस तरह से हर जगह पर पक्षपात होता है। यह क्यों होता है। अगर पानी देने का है तो सब को दें। उसमें राजनीति कहां से आ गई। पानी देने में समाजवादी और कांग्रेसी का क्या होता है। उसमें तो हर आदमी को पानी देना चाहिए। पानी और बिजली देने में पक्षपात क्यों। जिस क्षेत्र में कांग्रेसी लोग रहते हों या जहां से उनको वोट मिल

(श्री विट्ठल भाई)

गये हों तो उनको बिजली दे दो और जहां पर समाजवादी लोग रहेते हों उन गांवों में आप बिजली नहीं देंगे । घाटोल जो जोशीजी का क्षेत्र है उसके तीन मील के एरिये में ही एक कस्बा है खमेरा वह मेरे क्षेत्र में है वहां पर बिजली आज तक नहीं आई है जबकि जोशीजी के क्षेत्र में बिजली दे दी गई है । 57 के चुनाव में कांग्रेस के लोगों को उन्होंने वोट दिया लेकिन उनको बिजली आज तक नहीं मिली तो इस साल फिर उन्होंने वोट नहीं दिया । इस नीति का नतीजा डूंगरपुर और बांसवाड़े के लोकसभा के चुनावों में मालूम हुआ कि आपका वहां पर सफाया हो गया...... ...

एक माननीय सदस्य : (कांग्रेस) वहां से जीते हैं ।

श्री विट्ठल भाई : 1000 से जीते हैं तो क्या जीते हैं । उसमें दो सीटें हमारी थीं और 5 सीटें कांग्रेस की थीं लेकिन फिर भी आपको 1000 वोट ही ज्यादा मिले । यह मामूली चीज नहीं है ।

एक माननीय सदस्य : हारे तो सही ।

श्री विट्ठल भाई : यह पक्षपात की नीति ही है कि बांसवाड़ का यह नतीजा रहा । आज आदिवासी और पिछड़े हुए इलाके बांसवाड़े और डूंगरपुर में क्या हो रहा है कि दो साल पहले रिलीफ चला तो उसमें मेड़बन्दी चली और मेड़बन्दी की गई खेतों की । आज क्या हो रहा है कि 25 पर्सेन्ट उसका काश्तकारों से पैसा वसूल किया जा रहा है और वह भी डंण्डे के बल से किया जा रहा है । रिलीफ का पैसा आप काश्तकारों से वसूल करेंगे । यह किस बात की वसूली हो रही है । रिलीफ चला और दो साल निकल गये । रिलीफ के नाम पर मेड़बन्दी चली और आज आप 25 पर्सेन्ट की वसूली कर रहे हैं । यह कोई नीति है ? 25 पर्सेन्ट तो पहले से ही लोग खा गये। उसकी आपको चिन्ता नहीं है । उन गरीबों के खेतों की मेड़बन्दी की गई तो आज उनकी भैंस, बकरी और घर का सामान बेचकर वसूली कर रहे हैं । यह क्या नीति है ? यह सरकार थोड़ा ध्यान दे । मैं निवेदन करूंगा कि वहां के लिए इस 25 पर्सेन्ट की वसूली है उसको रोका जाय । उसको माफ किया जाय अगर आपको जिन्दा रहना है तो । अगर मरना ही है तो कोई ऐतराज नहीं ।

कई चीजों को दिक्कते हैं । मैं आपको बता दूं ।

यह जो टोपीदार बन्दूक है,जिस पर राजाओं के वक्त कोई टैक्स नहीं था, वह काश्तकार अपने खेतों की रखवाली के लिए जंगल में जाते है या उनकी झोंपड़ियां हैं। कोई चोर आ जाये या जानवर आजाये, उनके लिए ले जाते हैं । उन बन्दूकों पर एक रुपया सालाना टैक्स है लेकिन वहां के सरकारी अधिकारियों ने उन पर 25-25 रुपया लिया है । उनसे पच्चीस पच्चीस रुपया लिया गया है । हम लोग चिल्लाते रहे कि टैक्स बन्द करो । आप के खजाने में एक रुपया गया होगा लेकिन उनकी जेब में 24 रुपया गया है । 24 रुपया आप के नौकरों के पास गया है । यह वोट का नतीजा मिला है ।-इसी तरह से पहले भी विधान सभा में बोला हूं । अब उन लोगों पर पेनल्टी भी लगाई जा रही है । उस इलाके में डण्डा बजा रहे हैं । वह क्या कारण

(श्री विट्ठल भाई)

है । वह आदिवासी हरिजन हैं । वह हरिजन है । वह भूमिहीन है । उनको कहते हैं कि हम जमीन देंगे । तो क्या आप उस पर पैनल्टी लगवायेंगे । जो भी उनका घर का सामान है, वह भी बिकवायेंगे । फिर समाजवाद का नारा क्यों लगाते है ? जिनके पास जमीन नहीं है, उनको खेती करने वालों को जमीन दो । उनको पानी दो । अगर बिजली की जरूरत है तो उनको बिजली दो । बांध बनाने की जरूरत है तो बांध बनाओ । छोटे मोटे बांध बांध दिये हैं, उनसे राजस्थान सुधरने वाला नहीं है बिजली दे दी है तो भी सुधरने वाला नहीं है । कुवे खुदवा दिये होंगे तो भी राजस्थान सुधरने वाला नहीं है । आपने जो समाजवाद का नारा दिया है उसका मतलब ही यह है कि अपनी नीति को बदलो । समाजवाद लाओ । उसका मतलब ही यह है कि अपनी नीति को बदलो सबसे बड़ी बात जो भ्रष्टाचार आपके यहां है, जब तक भ्रष्टाचार है तब तक आप गरीबी हटाने के लिए कितना ही पैसा खर्च करो । गरीबी नहीं जायेगी । गरीबों का कोई विकास नहीं होने वाला है ।

एक तरफ राष्ट्रीयकरण हुआ और लोगों को पैसा नहीं मिला । मैं अपने जिले की बात कह रहा हूं । वहां क्या हो रहा है । लोग सोचते हैं कि बैंको में कर्जा मिल रहा है चलो अर्जी दो । फार्म भरो । जब तक वह पहुंचता है तब तक उनका 200/150 रुपया खर्च हो जाता है । 100 आदमियों में से एक आध को मिल पाता है । बाकी का नहीं होता है । फिर आपस में कहते हैं कि वह खा गया, वह खा गया । वह कांग्रेस के नेता होते हैं जो एजेण्ट होते हैं । सरकारी नौकर भी एजेण्ट होते हैं । आप लोग भी कहते थे कि वह खाते हैं । मगर यह करना है·······

एक माननीय सदस्य : समाजवादी नहीं खाते हैं ?

श्री विट्ठल भाई : बांसवाड़ा में तो आप का सफाया हो ही गया है, लेकिन राजस्थान में सफाया न हो जाये । यह जो झूठे नारे लगाये हैं, उनसे तो कुछ हो नहीं सकता है । मैं कहता हूं कि समाजवाद ला नहीं सकते हैं । निश्चित समझ लें कि सफाया आप का होगा । क्योंकि जो नीति आपकी थी वह नीति सही नीति नहीं है । आपकी कथनी और करनी में फर्क है । जनता में कहते क्या हैं और करते क्या हैं ? जो गरीब लोग थे उन्होंने सोचा कि वोट दे दो ।

श्री विजयसिंह : माननीय सदस्य को पता नहीं है कि उनका सफाया होता दिखेगा तो उधर से इधर आजायेंगे ।

श्री विट्ठल भाई : आप उनसे कहते हैं कि आपके हम कुए खुदवायेंगे । आपके खेतों को पानी देंगे । हम आपको बैंकों से कर्जा दिलायेंगे । इस लोभ लालच से वोट मिल गये हैं । मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा । हमारी पार्टी का 15 मिनट का समय था । इतना कह कर मैं स्थान ग्रहण करता हूं ।

श्री उपाध्यक्ष : श्री रघुनाथ विश्नोई ।

श्री रघुनाथ विश्नोई (सांचोर) : उपाध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय ने यहां आकर जो अभिभाषण किया है, वास्तव में जो कार्य किये गये हैं, उनकी रूपरेखा रखी गई है । पिछले दिनों अकाल ग्रस्त क्षेत्रों में जो इन्तजाम किया गया था भले ही उसमें कमियां रही हों लेकिन फिर भी लोगों को सन्तोष हुआ ।

(श्री रघुनाथ विश्नोई)

(3.06 म. प.)

(श्री विजयसिंह, सभापति, पदासीन)

उसीका यह परिणाम था कि लोकसभा के चुनावों में जनता ने हमको इस प्रकार विजयी बनाया ।

एक माननीय सदस्य : असली कांग्रेसी कौन है इसमें ?

श्री रघुनाथ विश्नोई : यह तो ...

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : शेर की खाल पहनकर सियार दौड़ने लगे हैं ।

श्री रघुनाथ विश्नोई : आप अपने कलेजे पर हाथ रखकर विचार करें । इससे साफ जाहिर होता है कि इन्दिरा गांधी का मुकाबला करने के लिए जो महा गठबंधन किया गया था, दिल्ली के राज्य से हटाने की कोशिश की गई थी, व नाकामयाब हुई है । रूस की बात अलग है । हिन्दुस्तान की जनता ने जो समर्थन दिया है वह इतिहास में अमर रहेगा । 350 सीटों का तो आप भी अंदाजा नहीं लगा सकते थे । हम भी अन्दाजा नहीं लगा सकते थे । प्राइममिनिस्टर की जो समाजवादी नीति थी उसी का यह मतलब था कि जनता द्वारा यह विश्वास व्यक्त किया गया है । विश्वास इतना ज्यादा व्यक्त किया है कि लोकसभा में, संविधान में संशोधन करने की आवश्यकता हो तो दो तिहाई सीटों पर जिताकर भेजें । लोगों को यह शक था, इस कारण लाखों वोटों से जिताकर भेजा । आप यह देखें, मैसूर, गुजरात, यू. पी. में–जहां दूसरी पार्टियों की सरकार थी, वहा दूसरी पार्टियों की सरकार होते हुए भी वहां की जनता ने बहुमत से, भारी बहुमत से नई कांग्रेस को जिताकर भेजा है ....

श्री दिग्विजयसिंह : माननीय सदस्य से मैं निवेदन करूंगा कि आपके पोस्टर पर आपकी प्रधान मन्त्रीजी की फोटो के बजाय जगजीवनरामजी की फोटो होती तो इतने कांग्रेस के सदस्य नहीं आते ।

श्री रघुनाथ विश्नोई : कुछ भी हो । जगजीवनरामजी की भी थी और प्रधान मंत्री जी की । आपने देखा होगा, जगजीवन राम की फोटो के पोस्टर जगह जगह लगाये गये थे ।

श्री दिग्विजयसिंह : प्रधान मंत्री की फोटो के पोस्टर थे ।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : यह बात बताइये, ऊपर किनकी फोटो थी और किनकी नीचे थी ।

श्री रघुनाथ विश्नोई : 'कुछ फर्क नहीं होता है, ऊपर कोई हो, नीचे कोई हो । जनता ने कांग्रेस के कार्यक्रम में विश्वास प्रगट किया है ...

श्री नत्थीसिंह : वोट मिल गये ।

श्री रघुनाथ विश्नोई : और यह बता दिया है कि चार दलों के गठन का नतीजा क्या होता है । जो नतीजा हुआ, वह आपके समक्ष है । चुनाव में हार जीत जो कुछ हुई वह भी आपके समक्ष है । हारजीत को आपको स्पोर्ट्स मैन स्प्रिट से मान लेना चाहिए । वैसे विभिन्न पार्टियों के नेताओं ने अपने वक्तव्यों में कहा है कि जनता का

(श्री रघुनाथ विश्नोई)

फैसला हमारे सिर पर है। हम आशा करते हैं कि जनता की आशा की पूर्ति होगी। उन्होंने यह आशा की है कि जनता ने विश्वास प्रकट किया है तब ही इतने बहुमत से चुना है। तो दलों के नेताओं ने अपना यह मत व्यक्त किया है। इसलिए मैं आशा करता हूं कि हिन्दुस्तान की सरकार बनेगी, मजबूत सरकार बनेगी, वह जनता के वोटों के जरिये से बनेगी–और इसका बनना जारी है – यही सरकार हिन्दुस्तान में समाजवाद लायेगी। अभी हाल ही में प्रेस कांफ्रेन्स में प्रधान मंत्री ने, प्रायोरिटीज के आधार पर जो मेनीफेस्टों में बातें कही है, के सम्बन्ध में है कि इनके अनुसार ही सरकार कार्य करने की कोशिश करेगी। इसके लिए कांग्रेस ने शपथ ली है इसलिए हमारी आशा, जनता की आशा पूर्ति होगी। माननीय सभापति महोदय, बड़े बड़े करोड़पति पैसे के बल पर यह समझते थे कि पैसे से वोट ले लेंगे। मेरे क्षेत्र के अन्दर पाटोदियाजी खड़े हुए थे, उन्होंने वहां पैसे की नदियां बहायीं, वहां पर शराब का बोलबाला था, अफीम की घूमधाम थी, लेकिन करोड़ों रुपया खर्च करने के बाद आखिर तीन बजे तक काउंटिंग में रहे, परन्तु ज्यादा वोटों में फर्क आता देखा तो चले गये····

श्री नत्थी सिंह : आपके अन्दर के दोनों करोड़पति थे।

श्री रघुनाथ विश्नोई : हमारे करोड़पति कैसे थे, वह जनता से पूछो। वहां लोगों के पैसे से उन्होंने इलेक्शन लड़ा, अपने पैसे से चुनाव लड़ा····

एक माननीय सदस्य : अपनी स्थिति बता दो।

श्री रघुनाथ विश्नोई : हमारे निर्वाचन क्षेत्र में जो पेट्रोल और जीप के सिवाय कुछ खर्चा नहीं हुआ। बाकी जो खर्चा है वह कुछ नहीं हुआ। हर स्थान पर पहुंचने के लिए पेट्रोल और जीप का बन्दोबस्त करना पड़ता है, बाकी कुछ नहीं किया गया। लोगों ने पैसा इकट्ठा करके इलेक्शन लड़ा है, इसलिए सारे हमारे जीते हैं, यह जनता की जीत है। यह मान लीजिये कि पैसे के बल पर आगे इलेक्शन नहीं जीते जायेंगे। यह एक तथ्य है। निर्विवादित तथ्य है। इसलिए जनता का विश्वास लेकर, जनता की भावनाओं को रेस्पेक्ट किया जाकर जो प्रधान मन्त्री ने साफ कहा है कि गरीब जनता में मेरा विश्वास है, गरीबों के द्वारा विश्वास व्यक्त किया गया है। आप कह दीजिये, करोड़ों रुपये का चन्दा लिया गया, मशीन के द्वारा तारे का निशान तो उधर चला गया और गाय बछड़े का चुनाव इधर चला गया। यह अपने आप को सेटिसफाई करने की तरफ कोशिश कर रहे हैं। लेकिन यह बात बैठने वाली नहीं है। यह जनता का सीधा फैसला है, उसके अनुसार आपको चलना पड़ेगा। अगर लोगों को धोखा देकर, धोखे में डाल कर वोट लेने की कोशिश की गई तो आगे भी आपको इलेक्शन लड़ना पड़ेगा। अगर एक दफा जनता को धोखे में डाल कर वोट लिये जाते हैं तो आगे धोखा नहीं चलने वाला है। इन चुनावों में लोगों को बड़े बड़े सब्जबाग दिखाये गये, राजा महाराजा और करोड़पतियों के द्वारा, राजस्थान में लेकिन करोड़पति तो साफ हो गये, जनता का यह साफ फैसला है कि करोड़पति धन के बल पर चुनाव नहीं जीत सकते हैं। जनता जब फैसला कर देती है तो उससे जो देश की स्थिति है, उसमें वोटर जो वोट डालते हैं

(श्री रघुनाथ विश्नोई)

उससे धीरे धीरे प्रजातंत्र देश में मजबूत होने जा रहा है। जब दिल्ली की सरकार कमजोर हो गई थी, अल्पमत में आ गई थी तो हिम्मत के साथ में मतदान कराया गया, अगर यह रिस्क लेकर जनता के द्वारा फैसला नहीं कराया जाता तो कोई रिजल्ट नहीं मिलता। उस समय लोग कहते थे कि प्रधान मन्त्री की अक्ल मारी गई है, अभी तो साल भर बाकी है। लेकिन हिम्मत के साथ उन्होंने फैसला किया और उसका नतीजा देश के सामने आया। प्रधान मन्त्री से लोगों की जो आशायें थीं उनकी पूर्ति की, जब लोगों ने उनमें विश्वास किया है तो जो पालिसी रखी है, जो मेनीफेस्टो में नीति रखी है वह भी पूरी होगी।

सभापतिजी, गवर्नर महोदय ने जो तथ्य अपने अभिभाषण में रखे हैं, अकाल में इन्तजाम अच्छा किया गया, उस नतीजे के कारण जनता ने विश्वास करके कांग्रेस को मत दिया है। जहां पर गड़बड़ियां हुई हैं, जहां पर भ्रष्टाचार हुआ है, जहां पर अनियमिततायें हुई हैं, वह मोटे तौर पर चाहे सुपरवाइजर करे, मेट ने करी हों–जनता ने उसको मानते हुए उस व्यक्ति को हटा दिया है। गांवों में हमें भी यह चीज देखने को मिली है। अगर किसी आदमी ने फेमिन में किसी तरह की गड़बड़ी की है, तो जनता ने उसे आउट राइट रिजेक्ट किया है। यह मत समझें कि जनता नहीं समझती है। वह समझती है। जो जनता के लिए बुरा करता है उसे समाप्त किया जा सकता है। यह इलेक्शन का फैसला है। जो लोग बदमाशी करने वाले हैं, चाहे इधर बैठने वाले हों, चाहे उधर बैठने वाले हों उनकी आंखें खुल गई हैं। जनता में यह शक्ति आयी है कि जनता के साथ जो धोखा करेगा, उस पर जनता विश्वास नहीं करेगी। यह साफ हो गया है। सरकार ने जगह जगह अकाल राहत में जगह जगह काम किये हैं, इन्तजाम किया है, पुख्ता काम किया है, सड़कें बनाई हैं, बांध बनाये हैं–उनका रिजल्ट सामने आया है। इनसे लोगों का उत्पादन बढ़ा है। फिर भी जो कमियां रह गई हैं जो काम की कमी है, जो अधूरे काम पड़े हुए हैं उनको रूरल कन्स्ट्रक्शन प्रोग्राम में लिया जाय, जो अधूरे काम पड़े हुए हैं। उनको सरकार के द्वारा पूर्ण किया जाना चाहिये, ताकि करोड़ों रुपया जो लगा है, उसका काम पूरा होकर जनता को फायदा मिल सके। इसके अलावा राजस्थान में विशेषतौर से मैंने प्रस्ताव रखा था पेयजल की समस्या के समाधान के लिए और उस समय राजस्थान सरकार ने आश्वासन दिया था कि बोर्ड का गठन किया जायगा। एक साल हो गया लेकिन आज भी गांवों में पीने के पानी की कमी है। इसलिए इस काम को पूरा किया जाय। सभापति महोदय, मैं आपके जरिये, राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित कराना चाहूंगा कि इतनी अवधि के बाद भी जिस आश्वासन पर मैंने अपना प्रस्ताव विथड्रा किया था, उसको कार्यान्वित करने के लिए सरकार ने सक्रिय कदम नहीं उठाया है। इसलिए हम चाहते हैं कि इस सम्बन्ध में आगे सक्रिय कदम उठायें। इस मद में भारत सरकार ने करोड़ों रुपये दिये हैं, और आगे भी दिये जाने की सम्भावना है। इसलिए इस बोर्ड का गठन किया जाय। आज जालौर में खारे पानी के गांव हैं, वहां पर पीने का पानी उपलब्ध नहीं है, इसलिए वहां पर क्षेत्रीय योजनाओं के जरिये पीने का पानी

(श्री रघुनाथ विश्नोई)

उपलब्ध कराया जाय। इसके बारे में जो योजनायें बनी हैं, पेयजल की योजना, पीने के पानी की समस्या का समाधान करने के लिए उनको कार्यान्वित करके राज्य सरकार इस समस्या का समाधान शीघ्र करे ताकि जो लोगों को पीने का पानी मिलना चाहिये वह मिले, अभी जो स्कीम अधूरी है उनको भी पूरा किया जाय। आज जालोर में पांच सौ, छः सौ गांवों में मीठा पानी उपलब्ध नहीं है। इसलिए वहां के रीजनल योजनाएं बना कर, ट्यूबवैल बना कर पाइप के जरिये वहां पानी पहुंचा कर इस पीने के पानी की समस्या का समाधान किया जाना चाहिये ताकि लोगों को पानी मिल सके।

दूसरे लोगों को, बैंक नेशनलाजेशन के बाद, छोटे छोटे काश्तकारों को लोन उपलब्ध होने लगा है, लेकिन बैंकिंग सिस्टम में बैंक्स के रूल इतने काम्प्लीकेटेड हैं कि भूमि विकास बैंक के जरिये लोन लेने के लिए लोग मारे मारे फिरते हैं। रूल्स काम्प्लीकेटेड होने की वजह से लोग इधर उधर मारे मारे फिरते हैं और उनकी आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती है। जब फसल बोने का समय आता है, तो मनी लैण्डर से उनको लोन लेना पड़ता है और बैंक से लोन फसल बोने के बाद में मिलता है इस कारण उसका उपयोग नहीं होता है। इसलिए इस ओर भी मैं सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि जो बैंक से ऋण की सुविधा नेशनलाइजेशन के बाद में दी है, वह जिले में दस मील के रेडिअस में, परिधि में लागू है। यह ठीक नहीं है। क्योंकि हमारी तहसील में एक बैंक है, दूसरी बैंक नहीं है और सौ मील का एरिया है, इसलिए वहां दस मील का रेडिअस रखने का प्रश्न पैदा नहीं होता है क्योंकि काश्तकार इससे ऋण प्राप्त करने से महरूम रह जाते हैं। इसलिए फाइनेन्स डिपार्टमेंट को इस मामले को टेकअप करना चाहिए और बैंक इन्स्टीट्यूशन के लोगों को बुला कर इस पर विचार करके निर्णय लेने की आवश्यकता है। राजस्थान में यह परिधि तोड़ दी जाय, क्योंकि कई जगहों पर एक ही बैंक है। यह बंदिश हटा दी जाय और किसी भी बैंक से किसी भी एरिया के व्यक्ति को लोन मिल जाना चाहिए। यह सुविधा प्रदान करदी जाय और जो बैंक के रूल्स काम्प्लीकेटेड हैं उनको सरल कर दिया जाय ताकि बैंक नेशनलाइजेशन की जो भावना है कि छोटे छोटे काश्तकारों को लोन दिया जाकर भूमि का विकास करके जो उत्पादन बढ़ाना चाहते हैं उसमें सहायता मिल सके।

इसके अलावा जो लैंड एलॉटमेंट करके सनद दी गई है, उनके लिए भी लोन शीघ्र मिल जाना चाहिए। सरकार ने वैसे गारन्टी दी है लेकिन एक भी काश्तकार को लोन उपलब्ध नहीं हुआ है। इस बारे में विशेष-तौर से इन्तजाम करें ताकि करोड़ों लोग हैं जिनको सनद के जरिये लैंड का एलाटमेंट हुआ है, और जिन्हें लोन नहीं मिलता है बैंक के जरिये और दूसरे लोगों पर निर्भर रहना पड़ता है, दूसरों को अधिक ब्याज देनी पड़ती है जबकि उनके पास साधन नहीं है और जिनके पास साधन हैं उनसे काश्त कराते हैं उनको फायदा नहीं मिलता है। इसलिए सरकार ने जो गारन्टी का फैसला किया है उसको इम्प्लीमेंट करने के लिए जगह जगह ग्रुप बना कर लोन की सुविधा दी जानी चाहिए।

(श्री रघुनाथ विश्नोई)

इसके अलावा राजस्थान में सहकारी समितियां काफी बनी हैं, बैंकिंग इन्सटीट्यूशन्स बढ़ी हैं लेकिन राज्य कर्मचारी सहकारी समितियों को खतम कर रहे हैं और उन लोगों को जो ऋण मिलता है उनका कुछ हिस्सा बांधकर वास्तव में जो मौके पर ऋण वितरित किया जाता है, उसमें गड़बड़ी करते हैं। मैं जालौर जिले के लिए कह सकता हूं। भूमि विकास बैंक या सहकारी बैंक के जरिए जो लोन्स वितरित हुए हैं उनमें भारी घोटाला व गड़बड़ है। कुछ प्राइवेट लोग और कर्मचारी मिलकर कुछ हिस्सा खा गए और लोगों से फर्जी बांड्स के आधार पर वसूली करने जा रहे हैं। हजारों केसेज नजर आए हैं, लोगों ने शिकायत की है। जो फर्जी बांड्स हैं उनके बारे में राज्य सरकार जालौर जिले में पूर्ण रूप से जांच कराए। भूमि विकास बैंक के पंपिंग सेट्स के लिए ऋण वितरण में घोटाला हुआ है और वसूली में दिक्कतें क्यों आ रही है। अभी रिजर्व बैंक और एपेक्स बैंक के आॅडीटर्स ने जाकर आडिट किया है और गंभीर अनियमिततायें देखी हैं। उन्होंने कहा है कि रुपया वसूल नहीं हो पाता है और कर्मचारी खाते नहीं हैं और मिलकर खा जाते हैं। यह वास्तविक तथ्य है कि कुछ कमियां हैं उनको दूर करने की आवश्यकता है। सारी संस्था खराब नहीं होती हैं, सहकारी मूवमेंट किसानों के हित में है लेकिन कुछ स्वार्थी लोग और कर्मचारी लोभ के वशीभूत होकर जो गड़बड़ी करते हैं, जनता के साथ धोखा करते हैं उनके खिलाफ जहां आरोप हों वहां जांच की जाकर सजा दी जाए, सस्पेंड किया जाना चाहिए, चार्जशीट दी जानी चाहिए, यह मेरा कहना है। ऐसे कुछ केसेज हैं लेकिन सारा मूवमेंट बदनाम होता है। इसलिए मैं राज्य सरकार से आग्रह करता हूं कि राजस्थान भूमि बैंक जालौर के संचालक मंडल में एक श्री शंकरलाल ए०आर० थे जिन्होने जाते जाते बगैर नोटिस के बैंक को भंग कर दिया, राजस्थान भूमि विकास बैंक को सूचित नहीं किया। ए० आर० बैंक का नामीनेटेड सदस्य था, बराबर हाजिर होता रहा है। तबादला हुआ बैंक को भंग कर दिया और निरीक्षक के स्तर के आदमी को प्रशासन सौंप दिया जबकि 20 लाख से ज्यादा जहां लोनिंग हो तो वहां राज्य सरकार के सक्यूलर के अनुसार वहां ए० आर० के स्तर से नीचे का सचिव नहीं होना चाहिए। राज्य सरकार सो रही है, जनता को बेचैनी है। लोग मुकदमेबाजी से परेशान हैं, वसूली रुकी हुई है और कर्मचारी भारी पैसा खाकर लोगों को लूट रहे हैं। इसकी जांच कराई जाए कि क्या घोटाला है। एक राज्य कर्मचारी जनता के चुने हुए जन प्रतिनिधियों के साथ धोखा करें और वसूली के समय लोगों को तंग करें यह बुरी बात है। गत वर्ष अकाल की वजह से वसूली बंद थी। कई तरह की गंभीर अनियमिततायें हैं। मैं राज्य सरकार से आग्रह करूंगा कि इसकी जांच की जाए।

इसके अलावा, अब राजस्थान में दो तीन साल से ईश्वर की कृपा से, जैसे राज्यपाल महोदय ने कहा है कि भगवान ने मेहरबानी की, बरसात समय पर हुई और खरीफ की फसल अच्छी हुई है लेकिन किसानों की आशाओं पर पानी फिर गया है। बाजार में फसल आई और व्यापारियों ने मिल कर 30) रु० क्विंटल में अनाज का भाव रखा

(श्री रघुनाथ विश्नोई)

जबकि सरकार ने 55) रु० क्विटल रखा है। राज्य सरकार ने कहा था कि जितना अनाज होगा हम 55) रु० क्विटल में खरीदेंगे। मैं जालौर जिले से आता हूं वहां विशेषकर सांचौर तहसील में गाड़े के गाड़े खड़े हैं और खरीदने वाला नहीं है। फूड कारपोरेशन का क्वालिटि इन्सपेक्टर और वहां के व्यापारी लोग मिल जाते हैं और लोगों को चूसते हैं। मैं खाद्य मन्त्री से निवेदन करूंगा कि खाद्य निगम व भारत सरकार से यह मामला उठाएं और वहां अधिकारी मुकर्रर करें और सीधे बाजार में खरीददारी का इन्तजाम करें। किसानों ने अच्छा अनाज पैदा किया है परन्तु कोई अनाज नहीं बिक रहा है। आज 30) रु० क्विटल भाव तक जा चुका है। मैंने स्थगन प्रस्ताव भी पेश किया था और विरोधी पक्ष के नेता ने कहा था कि 55) रु० कम है। मैंने कहा था कि 55) रु० में खरीदें तो भी गनीमत है....

श्री रामचन्द्र आर्य : आप सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव रखें तब जाकर ठीक होंगे। नहीं तो ये मानने वाले नहीं हैं। कहते तो आप सत्य हैं लेकिन ये लोग मानने वाले नहीं हैं।

श्री रघुनाथ विश्नोई : नहीं मानेंगे तो जनता इनको मना देगी, जनता सर्वोपरि है। मैं पुन: निवेदन करता हूं कि राज्य सरकार शीघ्र से शीघ्र कदम उठाए खरीददारी के। जगह जगह तहसील सांचौर में मन्डियां स्थापित करें, बाड़मेर में भी करें। हमने स्थगन प्रस्ताव भी दिया है। लोगों की सबसे बड़ी समस्या यह है कि उनके अनाज को कौन खरीदेगा। कुछ अन्तर्राजीय बैरीयर्स थे और टैक्स थे वह हटा दिए, इससे थोड़ा बहुत फायदा हुआ लेकिन कोई खरीदारी नहीं हो रही है। इसलिये राज्य सरकार इन्टरफीयर करे और जो 55) रु० क्विटल भाव निर्धारित किया है वहां मार्केटिंग सोसाइटीज को एजेन्सी देकर या खुद बाजार में दुकान खोलकर अच्छा धान ले लें। लो तो सही। क्वालिटि इन्सपेक्टर 10-10) रु० प्रति क्विटल लेते हैं। छोटी मोटी चीज को देख कर अनाज रिजेक्ट कर देते हैं। नतीजा यह होता है कि लोग लूटे जा रहे हैं। मैं राज्य सरकार से समस्या के समाधान के लिये निवेदन करूंगा क्योंकि राज्यपाल महोदय ने बताया था कि बहुत अच्छी फसल हुई है। इधर रिकवरी आ गई। सब तरह की वसूली। किसानों को एक न एक समस्या लगी रहती है। बाजार में वे जायें तो सारी चीजें महंगी मिलती हैं तो राज्य सरकार विशेषतौर से इन्तजाम करे वरना लोग तबाह हो जायेंगे और सरकार से उनका विश्वास हट जायगा।

इसके अलावा, राज्यपाल महोदय ने कुछ बातें बताई हैं। कुछ नहर के बारे में या हाइब्रीड वैराइटीज के जरिये उत्पादन बढ़ाने के बारे में। यह सही है कि उत्पादन बढ़ा है परन्तु हाइब्रीड वैराइटीज के साथ-साथ अच्छा बीज, खाद और पानी की व्यवस्था राज्य सरकार करे तो कम से कम जालौर जिले में इतना उत्पादन मिल सकता है कि सारे डिवीजन या राजस्थान के काफी हिस्से की समस्या का हल निकाला जा सकता है।

श्री रामचन्द्र आर्य : सरकार मुंह फाड़ रही है, आपके भाषण को गिट रही है।

श्री रघुनाथ विश्नोई : जनता उसको बर्दास्त नहीं करेगी। जालौर जिले में बिजली

(श्री रघुनाथ विश्नोई)

की पूरी व्यवस्था नहीं है। मुझे विद्युत मंत्री ने विश्वास दिलाया था कि 24 घण्टे बिजली सांचौर में देंगे लेकिन दुःख की बात है कि सारे आश्वासन झूठे साबित होते हैं, उनका पालन नहीं होता है। इतना राज्य सरकार का खर्चा होने के बाद भी वहां लोगों को कनेक्शन्स नहीं देते। जो 5 मील की परिधि के अन्दर पंपिंग सैट्स के लिये कनेक्शन्स मांगते हैं तो नहीं देते हैं। तो जो आपने काम किया है उस बारे में पूर्ण व्यवस्था करके 24 घण्टे बिजली सांचौर में चल कर आसपास के लोगों की मांग पूरी करें।

(घण्टी)

5 मिनट।

श्री सभापति : आपने अपनी पार्टी का अधिक समय लिया है।

श्री रघुनाथ विश्नोई : दूसरे किसी में काट देना। पिछले तीन चार वर्षों में लोगों ने मेहनत करके कुए खोदे हैं, पंप सैट्स लगाए हैं, परन्तु बिजली की मांग कर रहे हैं। मैं फिर मन्त्री महोदय से निवेदन करूंगा कि जिला जालौर में फूड की समस्या को मिटाने के लिए बिजली ज्यादा से ज्यादा उपलब्ध कराई जाये। जो माही नदी की योजना है उसको पूर्णरूप से कार्यान्वित किया जाए और हजारों काश्तकार जो काश्त करते हैं उनको बिजली के कनेक्शन्स दिये जायं। वहां सबसे ज्यादा कुओं की संख्या है और पंपिंग सैट्स की ज्यादा संख्या जोधपुर डिवीजन में सबसे ज्यादा 51 हजार पंपिंग सैट्स वहां लगे हुए हैं। लेकिन बिजली कनेक्शन्स का उसमें एक दो पर्सेन्ट भी अनुपात नहीं आता है। इसका विशेषतौर से राज्य सरकार प्रबन्ध करें।

आवास की समस्या के बारे में निवेदन है कि जिला जालौर में लो इनकम ग्रुप या मिडिल इन्कम ग्रुप में तीन चार वर्ष में भीनमाल और जालौर में रुपया कभी नहीं दिया गया है। राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में कहा कि आवास की समस्या को हल किया जाय। यह तो माना ही नहीं जा सकता कि जिला जालौर में ऐसे लोग न बसते हों। इसलिये यहां पर भी प्रावधान रखें ताकि वहां पर भी आवास की समस्या की पूर्ति की जा सके।

सभापति जी, इसके अलावा हमारे जिले में विशेषतौर से भीनमाल और जालौर में हाई स्कूल का हाल तीन चार वर्ष पहले गिर गया। उसको वापिस नहीं बनाया गया। उसको शीघ्र ही बनाया जाय। लोगों में असंतोष है। तहसील सांचौर में एक हायर सैकेण्डरी स्कूल है। सरकार ने यह आधार बनाया है कि इतना कन्ट्रिब्यूशन दें तो मिडिल स्कूल खोल सकते हैं। दूसरे जिलों में बिल्डिंग खड़ी कर देते हैं। गांव के लोग पांच सात रुपया ही तो चन्दा दे सकते हैं। इसलिये यह परिपाटी बिल्कुल बन्द कर देनी चाहिये और लोगों को शिक्षित करने के लिये रूरल एरिया में अलग योजना बनाना चाहिये ताकि यह आधार खत्म करके सरकार को कच्चे मकान बना कर ही मिडिल स्कूल और हाई स्कूल खोल देने चाहिये। ताकि जो पढाई हो उसका फायदा मिल सके।

पिछले वर्षों में मलेरिया और अन्य बिमारियां फैली हैं। विशेषतौर से मलेरिया से कई मौतें हुई हैं। अब यह सीजन और आने वाला है और इसलिये सरकार को पहले

(श्री रघुनाथ विश्नोई)

ही प्रिवेंन्टिव मेजर्स ले लेना चाहिये । ताकि कोई एपेडेमिक आगे न आ सके और मौते न हो सकें। पहले भी राज्य सरकार का इस ओर ध्यान आकर्षित किया था और पुनः करता हूं।

गवर्नर महोदय ने जो आंकड़े रखे हैं, दूसरी जो भी डिफिकल्टीज हैं, जनता की भावना के अनुसार उसको पूरा करते हुए प्रधान मंत्री ने जो नीति निर्धारित की है उसके अनुसार काम करना चाहिये और नहीं किया तो जनता दूसरा फ़ैसला कर सकती है।

मैंने जो तथ्य रखे हैं उन पर सरकार को गम्भीरता से विचार करना चाहिये और गवर्नर महोदय ने जो कृपा पूर्वक अभिभाषण दिया है उसके लिये आभार प्रकट करता हूं।

श्री सभापति : श्री नंदलाल।

श्री नन्दलाल (किशनगंज सु०) : सभापति महोदय, राज्यपाल महोदय के द्वारा दिया गया अभिभाषण मैंने पढ़ा। सारे अभिभाषण के अन्दर समाजवाद की भाषा का प्रयोग किया गया है। सबसे पहले इसके अन्दर समाजवाद के लक्ष्य के लिये महत्वपूर्ण कदम उठाया, वह बताया गया।

चुनाव की बात आई। मैं आपके माध्यम से राज्य सरकार को बता देना चाहता हूं कि जितनी घोर अनियमिततायें इस चुनाव में कांग्रेस की ओर से हुई है, सरकार की गाड़ियों का उपयोग किया गया, सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया गया, सरकारी गाड़ियों में बैठकर कांग्रेस के नेता पहुंचे....

श्री रघुनाथ विश्नोई : किस जगह ?

श्री नन्दलाल : कोटा जिले में जहां से कांग्रेस हारी है।

श्री माधोसिंह भैंसवाड़ा (उप मंत्री) : फिर क्या हुआ ?

श्री नन्दलाल : रेस्ट हाऊस को कांग्रेस पार्टी के काम में लाया गया। एक महीने तक कोई दूसरा आदमी रेस्ट हाऊस में नहीं बैठ सका। एक मंत्रीजी ने अड्डा जमा रखा था। कांग्रेस की मीटिंगे चलती रहती थीं। मैंने भी वहां ठहरने की कोशिश की तो बताया गया कि एंगेज्ड है।

पौलिंग स्टेशन पर पहुंचे। जो वोटर लिस्ट हमारे पास आ चुकी थी वह ठीक थी। एक एक नाम मिलता था। लेकिन वोट देने पहुंचे तो उनका उनमें नाम नहीं था और लाल स्याही से नाम कटे हुए थे। मेरे गांव के लिये मैं बता सकता हूं कि इस प्रकार की अनियमिततायें हुई। पंचायत के चुनावों में वोट दिये, 67 के चुनावों में वोट दिये और अब उनके नाम काट दिये।

कांग्रेस पार्टी ने समाजवाद का नारा दिया और चुनाव चिन्ह लिया गाय और बछड़ा। बछड़ा भी ऐसा जो सरकारी बछड़ा। 24 घंटे दूध पीने वाला। लगातार चूसता गया। जैसे आप लोग बैठे हुए हो। आप समाजवाद का नारा लगाते हो और जनता को चूसते हो। केवल आपकी थोथी बातें हैं।

माननीय वृद्धिचन्द्रजी ने जनसंघ पार्टी के लिए कहा कि जनसंघ राजा महाराजाओं की गोदी में जाकर बैठ गया। 67 की बात बता देना चाहता हूं सुखाड़ियाजी ने उदयपुर में चुनाव लड़ा तो महाराणा साहब का पहला वोट डलवाया, फूलों की माला डाली,

(श्री नन्दलाल)

एक लाख पर्चे बंटवाये कि महाराणा साहब ने कांग्रेस को वोट दिया। उस वक्त कांग्रेस महाराणा साहब की गोदी में नहीं बैठी थी? वृद्धिचन्द्रजी बता रहे थे कि कांग्रेस वाले ऐसा करना चाहते हैं और देश को खा जावेंगे। पाकिस्तान से वार चली थी। ये ही आर.एस.एस. के. वालेन्टियर्स थे जिन्होंने सेवा की। नवाब साहब लोहारू वहां पहुंचे थे। वे भूल नहीं सकते हैं। आर.एस.एस. को बदनाम करने की दृष्टि से कहा गया है। कोई यह बात नहीं कह सकता कि आर.एस.एस. ने स्वतन्त्र पार्टी अथवा कांग्रेस के साथ काम नहीं किया। सब के साथ काम किया।

राष्ट्रपतिजी, (सभापतिजी),

श्री सभापति : मुझे कोई ऐतराज नहीं है।

श्री नन्दलाल : आप भी राष्ट्रपति बन सकते हैं। ऐसी कोई बात नहीं है।

जहां तक बैंकों का राष्ट्रीकरण किया है, वह राष्ट्रीयकरण नहीं है। मैं उसको सरकारी-करण मानता हूं। मेरा इलाका पिछड़ा हुआ इलाका है। एक भी आदमी को एक भी पैसा नहीं मिला। उसका एक मात्र कारण है कि गरीब आदमी बैंक में पहुंचते हैं तो मैनेजर कहता है कि दो पूंजीपतियों की जमानत लाओ। पूंजीपति गरीब आदमी की जमानत देने के लिए तैयार नहीं। पैसा उनको मिलता है जो कांग्रेस पार्टी से चुनाव लड़ते है। नाथूलालजी जैन को, जो झालावाड़ क्षेत्र से चुनाव में खड़े हुए, मैं आपको यह जानकारी दे रहा हूं कि उनको इसी चुनाव से पूर्व लड़की की शादी के समय फर्टीलाइजर के लिये 8 हजार रुपये का लोन दिया। आठ हजार रुपया लिवा लिया। मैं चैलेन्ज से कहता हूं। आप जानकारी कर लें।

सहकारी समितियों के सम्बन्ध में चर्चा आई। मेरे क्षेत्र में वन सहकारी समितियां भी हैं कत्थे और गोंद की। मैं जानकारी दे रहा हूं कि जिस समय ये समितियां नहीं बनी थीं तब मेरे इस इलाके के गरीब सहरियों का तथा अन्य वन सम्पत्ति पर निर्भर करने वाले गरीब लोगों का ठीकसर गुजारा चल जाता था। गोंद और कत्थे में मजदूरी करके अपना पेट आराम से भर लेते थे। पर आज दिनभर महनत वे ही करते हैं पर अपनी मेहनत से इकट्ठे किये गये गोंद और कत्थे को वे बहुत सस्ते भाव पर इन सहकारी समितियों को दे देते हैं और पूरी कीमत वे नहीं पाते जबकि वे सहकारी समितियों उन्हीं चीजों को बहुत ऊंचे भावों पर बेचकर काफी अच्छा पैसा कमाती हैं। पर यह पैसा इन समितियों में भी नहीं रहता। वे तो घाटे में ही बताई जाती है। पैसा उनके अध्यक्ष और मन्त्री लोग आपस में मिलकर हड़प कर जाते हैं। वे आज लखपति बन गये हैं। नाम उनके मैं बताना नहीं चाहता। समितियां घाटे में चल रही हैं।

श्री रघुनाथ विश्नोई : नाम बताना कोई जरूरी भी नहीं है।

कई माननीय सदस्य : नाम तो जरूर बताने चाहिये।

श्री नन्द लाल : एक शर्मा हैं युगल किशोर जी हैं और भी कई नाम हैं। बारां में चावल की सहकारी मिल बनी। एक साल भी नहीं चल पाई कि बन्द हो गई। अध्यक्ष और मन्त्रियों ने सैकड़ों बोरियां

(श्री नन्दलाल)

चावल की गायब कर दीं। आज उस मिल में ताला लगा है। दूसरे लोगों की मिलें चल रही हैं। सहकारी मिल बन्द पड़ी है।

बिजली का जहां तक सम्बन्ध है, हालांकि बिजली कोटा से निकलती है और कोटा में ही किशनगंज शाहबाद क्षेत्र में बिजली आज दिन तक नहीं पहुंच पाई है जबकि यह तहसील हैडक्वार्टर भी है। यह क्षेत्र डाकुओं के आंतक से ग्रस्त क्षेत्र है। मध्यप्रदेश जो वहां से लगा हुआ है बोर्डर तक बिजली पहुंच गई है उधर और इधर राजस्थान में भी बारां और पार्वती नदी के किनारे तक बिजली पहुंच चुकी है; पर इस इलाके के अन्दर नहीं आई। अब जब कभी उधर कांग्रेस मन्त्री या कार्यकर्ता नेता आदि आदि जाते हैं तो कहते हैं कि तुम जनसंघ को वोट देते हो इसलिये तुम्हें बिजली नहीं मिलेगी। अगर सरकार की यही मनोवृत्ति है तो मैं कह देना चाहता हूं कि आप कुछ भी करें; वहां के वोट आगे भी आपको नहीं मिलने वाले हैं। कांग्रेस इस तरह की हीन वृत्ति रखकर वहां कभी कामयाब नहीं हो सकती।

शिक्षा के बारे में भी यही हाल है उस इलाके का। गांव वालों को कहा जाता है कि अपने श्रमदान से मकान बनाओ, जबकि शहर वालों पर ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। मैं यह बता देना चाहता हूं कि यही नहीं, इसके बाद भी जहां सरकार ने पक्षपात करके भी जो स्कूल खोली हैं वे ऐसे ऐसे इलाकों में खोल दी हैं जहां उनकी जरूरत नहीं थी पर चूंकि वह इलाका कांग्रेसी सदस्य का है इसलिये खोलना जरूरी हो गया। पर हालत वहां स्कूलों की यह है कि कहीं मास्टर है तो बच्चे हैं नहीं और बच्चे हैं तो मास्टर नदारद है। यहां तक होता है कि कहीं कहीं मास्टर आपसे 150/- माहवार तनख्वाह वसूल करता है और स्कूलों में बच्चों को पढाने के लिये तीस रुपया माहवार पर किसी दूसरे आदमी को बिठाकर चला जाता है। तीस रुपया उसको देता है और बाकी अपने घर का काम करता है।

राजपुर एक ग्राम है। जंगली इलाका है, डाकूग्रस्त एरिया है वहां कोई मिडिल स्कूल नहीं है. वहां के लड़के पढ़ने के लिये वहां से दूर मध्य प्रदेश सीमा में लगने वाले गांव में जाते हैं। रामगढ़ गांव है, वहां माध्यमिक स्कूल की आवश्यकता है, वह नहीं खुली अभी तक।

जिस स्कूल के बारे में मैंने जिक्र किया उसके बारे में बताऊं कि दो सालों से गांव की जनता उसे अपने खर्चे, से चला रही है। शिक्षा मंत्रीजी से मैं भी मिला था डेपूटेशन भी मिला था। आश्वासन भी दिया। पर आज तक वह पूरा नहीं किया गया।

अपने क्षेत्र की बात बताऊं। शाहाबाद में उपरेती इलाके में तालाब से लोग पानी पीते हैं। वहां की जनता सुबह दो बजे उठ कर गाड़ियां जोतकर दस दस मील से पानी लेकर आते हैं। बरसात तक गर्मियों में I6 मील दूर तक जाना पड़ेगा। पर आज तक सरकार ने वहां पानी का प्रबन्ध नहीं किया। कई बार चर्चा भी की।

लघु सिंचाई योजनाओं के बारे में चर्चा आई। राज्यपाल के अभिभाषण में कहा गया कि भीमसागर मेजर फीडर का काम प्रारम्भ कर दिया गया है। गोपालपुरा में भी शुरू

(श्री नंदलाल)

कर दिया जावेगा। गोपालपुरा मेरे क्षेत्र में पड़ता है। इस तालाब का शिलान्यास करने सुखाड़िया साहब आये थे। पर उनके चमचों को यह अच्छा नहीं लगा। वे कहने लगे कि सुखाड़िया साहब यह कहने आये हैं कि गोपालपुरा का काम बन्द कर दिया जायेगा अगर चुनावों में कांग्रेस को वोट नहीं दिये तो। तो क्या हम यह समझें कि उद्घाटन वोट मांगने के लिये करने आये थे।

एक माननीय सदस्य : उद्घाटन या शिलान्यास ?

श्री विजयसिंह (मकराना): कबरन्यास।

श्री नन्दलाल: शाहबाद प्रोपर के लिये डिस्पेन्सरी में डाक्टर है। आज वह बिल्डिंग ही बड़ी टूटी फूटी हालत में है, पर उसकी मरम्मत की तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता। मन्त्रियों से कहा जाता है पर वे आश्वासन देकर चले जाते हैं। आज तक सरकार अस्पताल की बिल्डिंग नहीं बना सकी। किराये के उसी टूटे फूटे मकान में चल रहा है। एक कस्बे में डिस्पेन्सरी है, पर डाक्टर नहीं है। कम्पाउण्डर ही वहां काम चला रहा है। नर्स और कम्पाउण्डर और डाक्टरों का कहीं कहीं पता ही नहीं। दवाईयों का पता नहीं।

एक माननीय सदस्य: नर्सों को तो जयपुर में बुला लिया होगा।

श्री नन्दलाल: परिवार नियोजन का यह हाल है कि एक मेरे मित्र ने नसबन्दी कराई। पर डेढ़ साल बाद उनके बच्चा हो गया। इस पर मियां बीबी में झगड़ा हो गया तो जो आपरेशन करते हैं या लूप लगाते हैं वह ठीक तरह से तो होना चाहिये न।

श्री मनोहरसिंह मेहता: पूरे गांव का आपरेशन थोड़े ही किया था ?

श्री नन्दलाल: गांधी शताब्दी में आंकड़े दिये हैं कि 130000 एकड़ भूमि गरीब काश्तकारों में बांटी गई। मैं अपने क्षेत्र के बारे में निवेदन करूं कि वहां से उन लोगों को थोड़े दिनों के बाद हटा दिया। उन्होंने इस अलाटमेंट में भी गरीब लोगों का पैसा खाया। कहा गया अपने अपने लोगों को वे अपने अपने आदमियों को लावें। उनसे फार्म भरवा कर लिये गये और फिर अपने ही अपने अपने आदमियों को दिल खोल कर जमीन अलाट कर दी। आज की तारीख में अब वहां जमीन नहीं है, बड़े-बड़े लोगों ने उस पर कब्जा कर रखा है।

जमीन के बटवारे के सम्बन्ध में सीलिंग का चक्कर चला। पटवारी से लेकर ऊंचे अधिकारियों तक ने काफी पैसा इसमें मारा। पांच, सात लाख रुपया हरिनारायण शर्मा वहां से लेकर गया है।

डाकुओं से रक्षा के लिये आर०ए०सी० की पुलिस वहां तैनात है। अब कहने को जनता की डाकुओं से रक्षा करना उनका काम है, पर करते क्या हैं ? मध्य प्रदेश में डकैती हुई तो पकड़ते हैं राजस्थान के लोगों को। कहते हैं तुमने डकैतों को सामान दिया है, मदद दी हैं, उनको छिपाया है। काफी पिटाई यह कह कर उनकी करते हैं और इसके बाद उनको छोड़ देने के नाम पर पैसा मांगते हैं। इस तरह से लूट इस पुलिस ने मचा रखी है। आज भी यही हालत वहां चल रही है। मैं बता देना चाहता हूं कि उस क्षेत्र के रामगढ़ के आस-पास गोपालपुरा और अन्य कई गांवों के आस-पास उस गांवों में रहने वाले लोगों से इस तरह से वहां के

(श्री नंदलाल)

डी. वाई. एस. पी. ने लाखों रुपया कमाया है। गरीब काश्तकारों को ठोकते हैं, पीटते हैं और फिर पैसा लेकर लूटते हैं। असली डकैत तो ये बने हुए हैं वहां की जनता के लिये गरीब लोगों के लिये। डकैत तो उनको लूटते हैं जिनके पास पैसा होता है पर ये डकैत गरीब काश्तकार लोगों को लूटते हैं। ऐसी सूरत में इस आर०ए०सी० को वहां से हटा लिया जावे। ये पुलिस वाले गरीब जनता को सताते हैं, मारते हैं पीटते हैं शराब की बोतलें उनसे मंगवाते हैं, गलत काम करवाते हैं, और उनके बीच में ही बैठ कर डंडे बजाते हैं। सरकार उन गरीब लोगों की बिलकुल नहीं सुनती।

श्री रामचन्द्र आर्य : उनका दोष नहीं है यह, वे तो यहां की सरकार को हिस्सा देते हैं।

इस अभिभाषण में एक सब से बड़ी बात यह है कि सड़कों के बारे में कोई चर्चा नहीं की गई है। मेरे क्षेत्र के अन्दर आज से 23 साल पहले स्टेट टाइम में जो सड़के बनी हुई थी, उसके बाद कोई नयी नहीं बनाई गई है। और आज हालत यह है कि कोई मोटर उन पर नहीं निकल सकती हैं।

श्री सभापति : माननीय सदस्य आपस में बात न करें।

श्री नन्दलाल : आज हालत यह कि वहां पर मोटर नहीं चल सकती है। मोटर मालिक मोटरें बंद कर के बैठ जाते हैं और आवागमन के जो साधन उपलब्ध होने चाहिये वह नहीं मिलते हैं। ऐसी सूरत के अन्दर मेरे क्षेत्र के अन्दर जो सड़के हैं उनकी बहुत बुरी दुर्दशा है। सुखाड़िया साहब को उद्घाटन के लिये पहुंचना था लेकिन सड़क खराब होने के कारण वहां पर नहीं पहुंच सके और उनको वापिस कोटा आना पड़ा है। अब जो सड़कें बनाई गई हैं उनमें पुलिया नहीं बनाई गई है और इस कारण बरसात के अन्दर सड़कों पर आना जाना बन्द हो जाता है और नाव के अन्दर बैठ कर लोगों को आना जाना पड़ता है। इन सारी बातों को बताते हुए मैं इस भाषण को जो राज्यपाल महोदय ने दिया है उसका विरोध करता हुआ अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

श्री सभापति : श्री दौलतराम सारण

श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ़) : सभापति महोदय, इस सदन के सामने राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के सम्बन्ध में धन्यवाद का प्रस्ताव विचारार्थ प्रस्तुत हुआ है। मैं उस प्रस्ताव का विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूं। यह विरोध केवल विरोध के लिये नहीं है परन्तु मैं यह महसूस करता हूं कि इस राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में जो एक स्टेट के हैड के भाषण में होना चाहिये वैसा उसमें कुछ नहीं है। एक ग्राम पंचायत की, एक ग्राम सभा की रिपोर्ट होती है वह भी अच्छे ढंग की होती है। इसमें केवल कुछ साधारण बातों का उल्लेख मात्र किया गया है। न तो राज्य की रीति-नीति का कोई उल्लेख है न राज्य का कार्यक्रम और उसकी क्रियान्विति का लेखा जोखा है। इसलिये यह अभिभाषण महज एक तकमीली खानापूर्ति है। इसलिये राज्यपाल महोदय इस भाषण के आधार पर धन्यवाद के पात्र नहीं हो

(श्री दौलतराम सारण)

सकते हैं ।

राज्यपाल महोदय ने अपने भाषण के अन्त में यह अपेक्षा की है कि जनहित में आप सब का सदैव की भांति पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा । यह माननीय सदस्यों से अपेक्षा की गई है लेकिन सभापति जी मैं नहीं समझता कि राज्यपाल की यह सरकार इस प्रकार का पूर्ण सहयोग प्राप्त करने का कोई प्रयत्न भी करती है, तभी कोई अपेक्षा भी करती है । इस सदन में रोज ऐसी घटनाएं होती हैं, समस्यायें आती हैं जिनमें प्रतिपक्ष के लोग महत्वपूर्ण सुझाव देते हैं, महत्वपूर्ण मुद्दे सामने प्रस्तुत करते हैं लेकिन यह सरकार उन मुद्दों को, उन सुझावों को महज अपनी शिकायत समझ कर उपेक्षित कर देती है, उन पर गौर नहीं करती और उनके

(3.55. म.प.)

(श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत, सभानेत्री पदासीन)

अनुसार अपनी नीतियों में, कार्यक्रमों में परिवर्तन करने की अपेक्षा महसूस नहीं करती है और आज यह सरकार लोकतान्त्रिक आदर्शों से हटती जा रही है । लोकतन्त्र में पक्ष और विपक्ष दो बाजू होते हैं लेकिन यह सरकार ऐसा महसूस करती है इसकी मान्यता ऐसी नजर आ रही है कि वह केवल एकपक्ष की है और एक ही पक्ष को देख कर चलती है, विपक्ष को बिलकुल अपेक्षित कर के, नजरअन्दाज करके चलना चाहती है और इसी का यह परिणाम है कि आज यह सरकार अपने आप में रास्ता भूले हुए नजर आ रही है । अगर यह विपक्ष की बात पर ध्यान देती, विपक्ष की आलोचनाओं पर गौर करती, और विपक्ष के सुझावों को मानती तो आज इस देश और प्रदेश का प्रशासन का स्वरूप दूसरा ही होता । आज बहुत सी समस्यायें हल हो गई होती और अनेक कठिनाइयां दूर हो गई होती लेकिन इस सरकार ने ऐसा लगता है कि लोकतंत्र की सामान्य मान्यताओं को अपने मानस में स्थान नहीं दिया है । इसका मानस, इस सरकार का मानस, लोकतान्त्रिक नजर नहीं आता है, ऐसा हम विपक्ष के लोग महसूस कर रहे हैं ।

सभानेत्रीजी यह मैं इसलिये कह रहा कि आज सुबह ही इस सदन में कोटा में जो गोलीकाण्ड हुआ उसके सम्बन्ध में विपक्ष की ओर से चिन्ता जाहिर की गई । सरकार से इस मुद्दे पर वक्तव्य देने के लिये आग्रह किया गया लेकिन एक घंटे का समय हो जाने तक गृह मंत्री जी ने और सरकारी पक्ष ने उस पर ध्यान नहीं दिया और उस पर कुछ कहना भी मुनासिब नहीं समझा । स्थिति ऐसी हुई कि आगे सदन की कार्यवाही चलना असम्भव हो गया तब जाकर कुछ फरमाना पड़ा । ऐसी स्थिति जिस पक्ष की हो वह पक्ष कभी भी लोकतान्त्रिक मानस वाला नहीं कहा जा सकता । लोकतन्त्र थोथी भावना और अपंग दृष्टिकोण से नहीं चल सकता है । इसमें जितना पक्ष का महत्व है उतना ही विपक्ष का महत्व होता है बल्कि उसका अधिक महत्व है तब लोकतन्त्र सही ढंग से चल सकता है, यह मेरी मान्यता है। मेरी ही नहीं लोकतंत्र में आस्था रखने वाला प्रत्येक समझदार व्यक्ति की मान्यता है और सभानेत्रीजी यहां न तो सौहार्द की प्रवृत्ति है और न सहिष्णुता ही है । यह लोकतन्त्र का जो बुनियादी गुण है वह नहीं होने का परिणाम यह आया है कि आज

(श्री दौलतराम सारण)

जन सामान्य में रोष, क्षोभ और असन्तोष बढ़ रहा है सहिष्णुता और सहयोग के सम्बन्ध की भावना गायब होती जा रही है। यह इस शासन का संचालन करने वाले नेतृ वर्ग का दोष है, उनके मानस की विकृति का परिणाम है और जरा भी सहिष्णुता होती, सौहार्द्र होता, उनका मानस लोकतान्त्रिक होता तो ऐसी स्थिति देश में नहीं होती। देश को सही नेतृत्व नहीं दिया गया है, राष्ट्र के राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण नहीं किया गया हैं और न इन्होंने देश को सही मार्ग-दर्शन ही दिया हैं। आज यह देश कुंठाओं से, निराशा से दबा पड़ा हैं और आज देश में बेकारी है और हमारा यह देश कर्ज के बोझ से दबता चला जा रहा है। यह स्थिति राष्ट्र की है, और यही बनती जा रही हैं। भारतीयता का जो नैतिक आधार वह धूमिल होता जा रहा हैं। हमारा राष्ट्रीय चरित्र गिरता चला जा रहा है और उसके उत्थान के लिये कोई प्रयास होता हुआ हमें नजर नहीं आता है। आज समाजवाद की बात कही जा रही है, लोकतन्त्र की रक्षा का नारा दिया जा रहा हैं, धर्म निरपेक्षता की दुहाई दी जा रही है परन्तु पैसा, दबाव, प्रलोभन के आधार पर मता को बटोरा जाता है, और बटोरा भी जा सकता है, परिणाम कुछ भी हो सकता है लेकिन उसमें स्थायित्व नहीं होगा, इसकी बुनियाद बालू के ढेर पर हैं, इसकी बुनियाद गहराई पर नहीं हैं, असलियत पर नहीं है इसलिये यह भुलावा वोट बटोरने में दिया जा सकता है लेकिन कामयाबी करने का रास्ता दूसरा ही होगा। इस रास्ते से कामयाबी नहीं मिलेगी। आप के उद्देश्य की स्पष्टता होनी चाहिये और नीतियों के प्रति वफादार होना चाहिये जो शासक दल में नजर नहीं आता हैं। जो लोग कांग्रेस की दुहाई देते हैं और इसके नाम पर वोट मांगते हैं उनकी नीतियों के बारे में क्या आस्था है यह उधर से बोलने वाले मेरे से पूर्व वक्ताओं ने स्पष्ट कर दिया है। माननीय सदस्य भादरा से आने वाले ने अभी इस सदन को बताया है और उससे इस शासन की नीतियों का खोखलापन इस सदन के सामने स्पष्टरूप से उन्होंने रख दिया है। मैं उनको इस बात के लिये धन्यवाद देता हूं। कांग्रेस का पहला उद्देश्य था नशाबन्दी करना, आज उसकी घोर उपेक्षा की जा रही है और सारे राष्ट्र को इन्होंने शराबखोरी में डूबो दिया हैं। दूसरा कांग्रेस का उद्देश्य था- कांग्रेस का रचनात्मक कार्यक्रम था आत्मनिर्भरता का, स्वावलम्बन का। व्यक्ति स्वावलम्बन, ग्राम स्वावलम्बन, राष्ट्र स्वावलम्बन लेकिन आज व्यक्ति परावलम्बी है, ग्राम परावलम्बी है, राष्ट्र परावलम्बी है आज 80 प्रतिशत कृषकों का यह देश 9 प्रतिशत कृषकों वाले देश अमेरिका पर आश्रित है। आज अमेरिका अनाज नहीं भेजे तो करोड़ों के घर चूल्हा नहीं जले। आज कोई राष्ट्र नहीं है जिसका भारत कर्जदार नहीं हो। इतना रुपया खर्च करने के बाद भी देश में आर्थिक क्षमता पैदा नहीं हुई। हमारी पूंजी की पुनः नियोजित की क्षमता पैदा नहीं हुई उसका एकमात्र कारण यह है कि पैसे का सदुपयोग नहीं किया जा सका। पैसे कुछ चन्द लोगों की जेबों में चले गये इसलिये आर्थिक नियोजन का कार्यक्रम असफल हो गया। आज सारी जगह निराशा का वातावरण है·······

(माननीय सदस्य श्री प्रेमसिंह सिंघवी द्वारा व्यवधान, अश्रव्य) आज राष्ट्र में नई

(श्री दौलतराम सारण)

प्रतिभाओं का उदय नहीं हो रहा है आज देश के अनेक नौजवानों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर नहीं मिलता। वे दूसरे देशों में जाकर अपनी प्रतिभा को रखते हैं। यहां दर-दर की ठोकरें खाते हैं और फिर कहते हैं समाजवाद ला रहे हैं, समाजवाद ला रहे हैं। मैं पूछना चाहता हूं समाजवाद काला है, सफेद है या चितकबरा है समाज-वाद का स्वरूप क्या है ? कोई समाजवाद का स्वरूप स्पष्ट नहीं है।

(पुन: माननीय सदस्य द्वारा व्यवधान, अश्रव्य)

उस तक पहुंचने का रास्ता स्पष्ट नहीं है। समाजवाद लाने का जो नक्शा है उसमें उपभोग, उत्पत्ति, विनियम और वितरण की व्यवस्था ठीक नहीं होगी, सन्तुलित कार्यक्रम नहीं होगा तब तक समाजवाद नहीं आ सकता है। उत्पादन नही बढ़ेगा, बढे हुये उत्पादन को उपभोक्ता तक ठीक प्रकार नहीं पहुंचाया जायगा, उत्पादन का ठीक मूल्य उत्पादक को प्राप्त नहीं हो सकेगा और देश के आम नागरिकों की न्यायोचित मांगों को पूरी नहीं की जायेगी तो समाजवाद नहीं आ सकता है। मुझे पता नहीं अराजकता और हिंसा आ जाय लेकिन समाजवाद नहीं आ सकता है। इसलिए मैं कहना चाहूंगा मेरे कांग्रेसी मित्रों से देश के उत्पादन को नियंत्रित और विकसित कीजिये। कृषि-जन्य उत्पादन को बढ़ाइये, पशुओं से होने वाले उत्पादन को बढ़ाइये, खनिज सम्पत्ति को अधिक से अधिक निकालिये मुझे इसका भी खेद है कि सरकार की छोटे और बड़े उद्योगों के प्रति कोई स्पष्ट नीति नहीं है। आज तक सरकार ने बड़े उद्योगों के क्षेत्र को निर्धारित नही किया है। आज अंगोछा बुनकर भी बुनते हैं और इसको मिल भी बनाती है। चद्दर को बुनकर भी बनाते हैं और बड़े उद्योग भी बनाते हैं। इस तरह इन्होंने उद्योगों का बंटाढार कर रखा है। देश को सुनियोजित कार्यक्रम चाहिये, देश को ठीक प्रकार से आर्थिक कार्यक्रम चाहिये लेकिन यहां तो योजना का कोई आधार नहीं है। अमेरिका ने पैसा दे दिया मुर्गी पालन के लिए, मुर्गी की खाद्य के लिए काफी पैसा दे दिया और उसको ले आये चाहे देश को जरूरत नहीं हो। इसी तरह रूस ने कहा तो वहां से पैसे ले आये इसलिये दूसरे के पैसों पर योजना बनाते हैं। हिन्दुस्तान की साधन और क्षमता के आधार पर योजना नहीं बनाते हैं। एक योजना बनाते हैं तो उसको दूसरी योजना में समाप्त कर देते हैं। दूसरी योजना बनाते हैं तो तीसरी योजना में समाप्त कर देते हैं, तीसरी योजना में उसको लेते हैं तो चौथी योजना में उसको बन्द कर दिया है। यह तो इनकी हालत है क्योंकि पैसे देने वालों ने पैसे देने बन्द कर दिये इसलिये योजना ठप्प हो गई। मेरे पास समय नहीं है नही तो मैं यहां एक एक का विश्लेषण करता। सभानेत्री जी मैं कहना चाहूंगा यह बहुत गंभीर मसला है। जो गलतियां की हैं उसको सुधारना होगा और गलतियों को मंजूर करना होगा। जनता ने विश्वास व्यक्त किया है तो जनता के साथ विश्वासघात नहीं होना चाहिये, उसकी पूर्ति होनी चाहिये। अगर समाजवाद लाना है, उत्पादन बढ़ाना है तो सही नीतियां निर्धारित करें, पूर्ण निष्ठा के साथ निर्धारित करें और सच्चरित्रता के साथ उस पर अमल करें। यह कौनसा समाजवाद है जो 29 नवम्बर को तो ड्राइ डे घोषित करें और 30 तारीख

(श्री दौलतराम सारण)

से रोज शाम को शराब के नशे में झूमते रहें नीतियां तब क्रियान्वित की जा सकती हैं जब शासक ईमानदार और सच्चरित्र हों। जब उनकी स्वयं की आस्था शराब पीने को है तो वे शराबबन्दी का काम नहीं कर सकते हैं। जिनकी सम्पत्ति 12-12 लाख और 15-15 लाख की है वे क्या समाजवाद की बात करेंगे।

मैं आज पूछना चाहता हूं समाजवाद समाजवाद की बात की जा रही है। आज करोड़ों लोग सड़कों पर भूखे नंगे फिर रहे हैं। उनको एक समय पेट भरने के लिये दलिया तक नहीं मिलता है आज इस देश में 30 करोड़ ऐसे लोग हैं जिनको एक समय भोजन मिलता है। कुछ मुट्ठी भर लोग ऐसे हैं जिनके पास करोड़ों की सम्पत्ति है इसी का नाम क्या समाजवाद है ? उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त करके भी आज हजारों नवयुवक सड़कों पर फिर रहे हैं। आज 6 लाख इंजीनियर हैं जो बेकार घूम रहे हैं। मैं पूछना चाहता हूं आपकी किसी शिक्षा योजना का या किसी भी योजना का तालमेल जीवन के साथ है क्या ? आपकी योजना पैसों के आधार पर बनती है। आपकी योजना का जीवन के साथ कोई तालमेल नहीं है, हमारी क्षमता और आवश्यकता के साथ उसका तालमेल नहीं है। इसी का परिणाम है देश में आर्थिक संकट की स्थिति पैदा हो गई है। जो लोग राजा-महाराजाओं का विरोध करते हैं, जो पूंजीपतियों का विरोध करते हैं-पूंजीपतियों और राजा महाराजाओं के विरुद्ध नारे लगाते हैं मैं पूछना चाहता हूं श्रीमन् ये पूंजीपति और राजा महाराजा कहां से आये। ये बिड़ला और टाटा कहां से पैदा हो गये ? 17 साल तक एकछत्र नेहरू ने राज्य किया, उसके बाद उसकी पुत्री इन्दिरा ने पांच साल राज्य किया फिर भी ये पूंजीपति कहां से टपक पड़े। इतने सालों तक तो कोई ध्यान नहीं दिया गया—ये सब नेहरू और इन्दिरा की देन है, इन्हीं पर देश की जिम्मेदारी थी जो आज देश का प्रत्येक नागरिक भुगत रहा है। 75 परिवारों ने राष्ट्र का अधिकांश धन बटोर लिया, यह सब आपकी गलत नीतियों का परिणाम है। मैं कहना चाहता हूं राजा-महाराजाओं को क्यों नहीं समाप्त किया। आज आपके समाप्त करने की बात आई है जब राजा महाराजा राजनीति में थंभ ठोक कर खड़े हो गये हैं। समाजवाद की व्यवस्था में अगर आप अनुचित मानते हैं तो उनको आप पहले हटाते। आज जब आपकी बराबरी करने को खड़े होते हैं तो उनको कोसा जाता है। उनको साफ कहते सारे देश की जनता आपके साथ थी लेकिन आपने सदा गुरेज किया है। अगर कश्मीर का राजा आपके साथ हो गया तो वह सामन्तवादी नहीं है और नवाब पाटौदी आपके खिलाफ है तो वह पूंजीपति हो गया है। अब दो नजरिये से देखने वाली बात जनता बर्दाश्त नहीं करेगी। यह दुमुंही वाली बात जो आपके साथ राजा महाराजा हो गये वे अच्छे हो गये और जो आपकी खिलाफत करें वे खराब हो गये- अधिक दिन नहीं चलने वाली है। जनता अब इसको कतई बर्दाश्त करने वाली नहीं है। नबाब लुहारू आपके साथ हैं तो वे सामन्तवादी नहीं और एक तरफ डूंगरपुर के महारावल आपके साथ नहीं है तो वे सामन्तवादी हैं जबकि नवाब लुहारू घोर सामन्तवादी है। ये दुमुंही नजरिये देश की जनता बर्दाश्त नहीं करेगी। हो सकता है आप एक धोखा देकर जनता

(श्री दौलतराम सारण)

को अपने विश्वास में रख लें लेकिन यह अधिक दिनों तक जनता अब बर्दाश्त करने वाली नहीं है ......

श्री रामचन्द्र आर्य : ये तो चोरों की तरह जाते हैं रात में ......

श्री दौलतराम सारण : यदि लोकतंत्र के प्रति आपकी आस्था है तो पक्ष और विपक्ष को समान महत्व दिया जाय बल्कि विपक्ष को अधिक गम्भीर और चिन्तन के साथ सुना जाय। लेकिन वैरी आयोग में विपक्ष ने कितने दिन धरणा दिया उसका कोई परिणाम नहीं निकला। उस समय आपके लोकतन्त्र का, मानस का क्या परिणाम था ? मैं कहना चाहता हूं अगर आप में लोकतन्त्र में आस्था वाली बात होती तो पंचायतों के चुनाव कराये कितना समय हो गया, आप क्यों नहीं पंचायतों के चुनाव समय पर करा रहे है ? यही आपका लोकतन्त्र है ? यही क्या आपका समाजवाद है ? अगर आप इस तरह का लोकतंत्र चलायेंगे तो वह समय दूर नहीं है जब लोगों की लोकतन्त्र से निष्ठा दूर हो जायगी आप लोकतन्त्र की बात करते हैं लेकिन अभी चुनाव हुए हैं और चुनावों के बारे में आपको बड़ा गरूर है, आपको बहुमत मिला है और वह चाहे किसी तरह से भी मिला हो लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि लोकतन्त्र के निर्माता संविधान के अन्तर्गत बने हुए चुनाव कानून के अनुसार 35 हजार का खर्चा वैध है और इसको इन्दिराजी ने पास करवाया और आपने कितना कितना खर्चा एक एक निर्वाचन क्षेत्र में किया ? आप ईमानदारी से बतायें, मेरे कांग्रेसी मित्र ईमानदारी से बतायें कि एक एक कान्स्टीट्युएन्सी के लिए आपने कितना कितना पैसा दिया। मैंने सुना है और कांग्रेसी मित्रों से सुना है कि हर एक निर्वाचन क्षेत्र के लिए दो, दो लाख रुपया पार्टी ने दिया है और चन्दा आफिसर्स की मार्फत, चन्दा इन्सपैक्टर्स की मार्फत, चन्दा थानेदारों की मार्फत, चन्दा इन्जीनियर्स की मार्फत अलग करवाया गया है और वह कितना है यह कहा नहीं जा सकता। जब यह स्थिति है तो आप क्या लोकतन्त्र चलायेंगे। जब आप मर्यादाओं का पालन नहीं करते, आप अनियमितताएँ करने के लिए, शासन का दबाव इस्तेमाल करने के लिए, अपने ही आपमें छूट देना चाहते हैं तो यह लोकतन्त्र कहां टिकेगी श्रीमन् ? आप करोड़पतियों को उलाहना देते हैं कि उन्होंने इतना पैसा खर्च किया। आपने उनको हरा दिया और वह हार गये इसमें मैं आपके साथ हूं। मुझे सबसे ज्यादा खुशी हुई जब पैसे वाले हारे, जब राजा महाराजा हारे लेकिन मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आज आप राजाओं और पूंजीपतियों का विरोध करने वाले आपकी क्या कारगुजारियां हैं, जरा ठंडे दिल से तो सोचो। आप दूसरों को उलाहना तब दे सकते हैं जब आप अपने आप में उस स्तर को कायम रखें जो दूसरों के लिए आप कह रहे हैं। इसलिए मेरे मित्रों मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि अगर आप वाकई में लोकतन्त्र में विश्वास रखते हैं तो लोकतन्त्र के पक्ष और विपक्ष दोनों के महत्व को समझकर चलो। आज जब हमारे मुख्य मंत्रीजो कहीं जाते हैं, किसी विपक्षी सदस्य के क्षेत्र में जाते हैं तो गला खोलकर कहते हैं कि आपने कांग्रेस को वोट नहीं दिये इसलिए आप वोट दो तो निर्माण का काम हमसे लो। यह है आपके लोकतन्त्र का नजरिया, यह है आपके लोकतन्त्र की मान्यता। आप पक्ष और विपक्ष के अन्दर निर्माण और विकास के मामले में

(श्री दौलतराम सारण)

भेद नहीं कर सकते। आप कर सबसे वसूल करते हैं और किसी भी पार्टी की सरकार हो जो निर्वाचित सरकार है उसको बिना भेदभाव के निर्माण और विकास के काम करने पड़ेंगे और झक मार कर करने पड़ेंगे लेकिन हमारे मुख्य मंत्रीजी इस तरह से गैरजिम्मेदारी से बातें कहते हैं और फिर लोकतन्त्र की दुहाई दें मुझे खेद है कि इस तरह से आचार और व्यवहार में अन्तर लेकर चलने वाले लोगों के हाथ में लोकतन्त्र सुरक्षित नजर नहीं आता। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि लोकतन्त्र मर्यादाओं के आधार पर सुरक्षित रहता है, अनुशासन के आधार पर चल सकता है— अगर हम केवल खारा खारा थू और मीठा मीठा गप करने की बात करके चलें, अनुकूल बातों को सहायक समझ लें और प्रतिकूल बातों के लिए आंख बन्द करके चलना शुरू कर दें तो लोकतन्त्र के लिए खतरा हो सकता है इसलिए लोकतन्त्र के बारे में मुझे इतना ही कहना है।

अब समाजवाद की बात कहना चाहता हूं। आपके समाजवाद के बारे में इस राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में कुछ कुछ छोटी बातें लिखी गई हैं और कुछ बातें अच्छी भी हैं। मैं उनको बुरा नहीं मानता लेकिन वह ऐसी हैं कि जैसे फटे पर थाती लगाना—इससे अधिक नहीं हैं। उनके परिणाम को समाजवाद का परिणाम नहीं कह सकते। समाजवादी परिणाम लाने के लिए हमें बुनियादी परिवर्तन करने पड़ेंगे मान्यताओं में और क्रियान्विति में हर तरीके से। अगर आपमें वह करने की तैयारी नहीं है तो फिर आप समाजवाद नहीं ला सकेंगे अगर समाजवाद लाना चाहते हैं तो क्रांतिकारी परिवर्तन कीजिये और निश्चित आधारों पर कीजिए सामाजिक ढांचे में भी और आर्थिक और प्रशासनिक ढांचे में भी। क्योंकि राज्य का सारा काम प्रशासन के माध्यम से होता है और प्रशासन इस काबिल नहीं है कि आपकी नीतियों की क्रियान्विति कर सके। आज प्रशासन को आप लोगों ने राजनैतिक हस्तक्षेप करके अपनी पार्टी के अन्दर पावर का स्ट्रगल करके अखाड़ा बना दिया है और इस तरह से प्रशासन को झकझोर दिया है। आज प्रशासन में ईमानदार लोग भी हैं, आज प्रशासन में भले आदमी भी हैं, अच्छे लोग भी हैं लेकिन उनकी योग्यतायें, ईमानदारी और कुशलता आज कुण्ठित है और वे आज बिलकुल विक्षुब्ध हैं। इसलिए कि उनके पास अवसर नहीं हैं और उनके पग पग पर बाधायें हैं। मैं मेरे कांग्रेसी मित्रों से कहना चाहता हूं कि अगर आप राजस्थान के 2 करोड़ 25 लाख लोगों की बहबूदी के लिए सोचना चाहते हैं तो सबसे पहले पार्टी में बैठकर फैसला करो और राज्य कर्मचारियों पर महरबानी करो आपस में मत लड़ो। आप प्रस्ताव करो कि कभी भी किसी की बदली करवाने और रोकने के लिए किसी के पास नहीं जायेंगे। अगर आपने यह फैसला कर लिया तो राजस्थान में आधा भ्रष्टाचार खत्म हो जायेगा, आधी बीमारी मिट जायेगी।......

श्री **बद्रीप्रसाद गुप्ता** : फिर इनको वोट कौन दिलवायेगा। आज कर्मचारी ही तो इनको वोट दिलवाते हैं।

श्री दौलतराम सारण : आज हर एक एम० एल० ए० के कमरे में आपको पांच, सात, दस आदमी मिलेंगे और वे उनके पीछे ऐसे फिरते हैं जैसे मुर्गी के पीछे उसके बच्चे फिरते हैं।

श्री विजयसिंह : यह केवल कांग्रेसी एम० एल० ए० हैं।

श्री दौलतराम सारण : अपना प्रमोशन और फिक्सेशन करवाने के लिये वे कर्मचारी इनके पीछे पीछे फिरते हैं क्योंकि हर काम में आज सिफारिश चाहिए। अगर कोई सीधा जाता है तो बॉस कहता है कोई जैक लाओ ..

श्री रामचन्द्र आर्य : यही तो जागीरी ने रखी है।

श्री दौलतराम सारण : जैक योंही नहीं मिलता। मैं यह कहना चाहता हूं कि जैक भी ऐसे ही नहीं मिलता। जैक बदले में 2 हजार मांगता है, जैक बदले में 5 हजार मांगता है। हर एक जैक की अलग अलग कीमत है। सिंचाई के पटवारी की कीमत 800 रुपया है और ओवरसीयर की कीमत 3000 है और जिलेदार की कीमत 5000 है और एस. डी. ओ. की कीमत 7000 हैं और वह भी दो तीन महीनों में भी बदला जा सकता है बीच में जरूरत पड़ जाये तो। इस तरह से जैक का अलग अलग दाम है और फिर सेल्स टैक्स का भाव तो और भी महंगा है। इसी तरह से पुलिस के थाने भी निश्चित है कि यह 15 हजार का है और यह 10 हजार का है। आप इसी प्रशासनिक व्यवस्था से समाजवाद लाना चाहते हैं, असम्भव है दोस्तों। इसलिए समाजवाद लाना चाहते हैं तो सबसे पहले समाजवाद के जरिए को, समाजवाद के माध्यम को ठीक करो। इसमें पैसे नहीं लगते। इसमें इरादे लगते हैं, इसमें अपने आपकी दृढ़ता लगती है, अपने आपका चरित्रबल लगता है। अगर वह आपमें है तो बटोर करके इसमें लगो और फिर देश के सामने आओ। लेकिन जब तक पुलिस का सिपाही और पटवारी लूटता है तब तक कैसे समाजवाद आयेगा। आपने 52 पैसे तो खतोनीक की नकल के तय कर रखे हैं लेकिन वह 52 रुपये में भी नहीं मिलती। इन्तकाल तस्दीक नहीं होते 200 और 400 रुपये में भी फिर आप अपेक्षा करते हैं कि जनता खुश होगी, ऐसे जनता खुश नहीं हो सकती। कानून का अमल प्रशासन द्वारा होता है नीतियों का अमल प्रशासन द्वारा होता है—कानून कितने ही अच्छे बनाओ, घोषणायें कितनी ही अच्छी करते जाओ लेकिन उनकी क्रियान्विति का माध्यम ठीक नहीं करेंगे तो कोई भी कार्यक्रम आपके पूरे नहीं हो सकेंगे इसलिए इस तरफ ध्यान दो। अगर आपके इरादे नेक हैं और यदि आप चाहते हैं कि देश में परिवर्तन आये।

तीसरी बात मुझे उत्पादन के बारे में बतानी थी कि उत्पादनों के स्रोतों से उत्पादन बढ़ायें। सबसे बड़ा स्रोत है जिसके ऊपर 80 प्रतिशत जनता निर्भर करती है वह है खेती लेकिन खेती के बारे में इस अभिभाषण में उल्लेख किया है कि इतनी खाद, इतने उन्नत बीज, कीटनाशक दवायें और बीमारी नाशक दवाएँ हैं जिनका वितरण किया गया लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि कितने प्रतिशत खेतों पर ? आप सिंचित 21-22 लाख हैक्टर जमीन तक ही पहुंच पाये हैं और इस समय बाकी की सारी जमीन बारानी है और आप वर्षा पर निर्भर करते हैं और उसके लिए न तो उन्नत बीज है और न खाद है अच्छी। आज जो आप रासायनिक खाद देते हैं वह पूरे सिंचित क्षेत्र में भी नहीं पहुंचा पाये हैं। आप जो बीज बांटते हैं वह केवल 22 लाख हैक्टर तक भी नहीं पहुंचा पाये हैं और फिर कहते हैं कि हमने हरित क्रांति कर दी और हरित क्रान्ति का क्या हाल है। एक साल अच्छी

Page No 103

(श्री दौलतराम सारण)

फसल हो गई तो राज्यपाल महोदय ने भी भगवान की दुआ की और हरेक मेरा भाई कांग्रेसी उठता है और वह भगवान को दुआ देता है। खुदा न खास्ता अकाल पड़ गया तो आपकी बढ़ी हुई आमदनी का प्रतिशत गायब, आपकी आत्म-निर्भरता गायब, फिर सारी खाद्य-समस्या और खाद्य-नीति उलट-पुलट। यह कब तक चलेगा? अगर समाजवाद लाना है तो जो बुनियादी उद्योग है खेती उस पर ध्यान दें। उसके सम्बन्ध में घोर लापरवाही की है उसका नतीजा है कि देश बिल्कुल ही परावलम्बी बन गया है खाद्य के नाते। सीलिंग का कानून अभी तक अधर में झूल रहा है, लैण्ड युटिलाइजेशन एक्ट अभी तक अधर में झूल रहा है। आपका बड़ी बड़ी जमीनों को लेने का कानून वस्ता-ए-खामोशी में पड़ा हुआ है, और आप अनेकों कानूनी प्रावधानों को अमल में नहीं ला रहे हैं। इस तरह से काम नहीं चलेगा।

श्री रामचन्द्र आर्य : अमल में लाते तो यह करोड़पति कैसे हो जाते?

श्री दौलतराम सारण : आपका सबसे बड़ा प्रोजेक्ट राजस्थान नहर है जिसके बारे में इसमें भी लिखा है। राजस्थान नहर को बने 10 साल हो गये पानी आते हुए लेकिन आज तक आप हर साल भूमि को नीलाम करते हैं। उसकी नीति निर्धारित नहीं करते हैं। इस तरह की कोई मूर्खता की बात दुनिया में नहीं हो सकती है। इसके बारे में किसी किसान से जाकर पूछिये। वह कितना मखौल उड़ाता है। प्रतिवर्ष नीलाम में लेकर कौन उस पर खर्चा करेगा, उसमें कोई सुधार करेगा? लेकिन कोई आपको फिक्र नहीं है! कई बार इस सदन में इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है, लेकिन बड़े बड़े लोग इसमें इन्ट्रेस्टेड हैं और लाखों रुपयों की सरसों हरवर्ष पैदा करते हैं, फर्जी नाम से एलाटमेंट होता है और प्रतिवर्ष फर्जी नाम से नीलाम में उठाते हैं। इसमें बड़े बड़े नेता, अधिकारी और मंत्री स्तर के लोग इन्वाल्ड हैं, मिले हुए हैं, और उनकी साजिश की वजह से उस भूमि का स्थाई आवंटन नहीं हो पा रहा है। इस तरह से राजस्थान नहर विकास के चरण में ठीक प्रकार से प्रगति नहीं कर पा रही है और पानी का पूरा उपयोग नहीं हो रहा है, भूमि का विकास नहीं हो रहा है। इस तरफ ध्यान क्यों नहीं जाता है? आप कहते हैं कि गांधी शताब्दी वर्ष में इतने हरिजनों को भूमि दी। तीन सैशन्स में गलत आवंटन की जांच का आश्वासन सदन में दिया गया था और स्पीकर के चैम्बर में जाकर विरोधी पक्ष के सब नेताओं की मौजूदगी में 62 से 69 तक के गलत आवंटन की जांच का आश्वासन दिया गया था। क्या हुआ उसका? आज तक सदन में उसकी कोई रिपोर्ट नहीं दी गई। लाखों एकड़ जमीन गैरकाश्तकार लोगों को गैर-कानूनी तरीके से आवंटित कर दी गई और जो भूमिहीन थे वे उससे महरूम रह गये और वे मारे मारे फिर रहे है और वे मौज कर रहे हैं, लेकिन मुझे अफसोस है कि उस सम्बन्ध में कोई कार्यवाही नहीं की गई विरोधी पक्ष के सुझाव देने के पश्चात् भी। इसी तरह से राजस्थान नहर में घोटाले हैं औरई डेम में घोटाले हैं एलाटमेंट के बारे में उनके बारे में हमने यहां पर प्रकाश डाला है, लेकिन आपके कान पर जूं तक नहीं रेंगती है! फिर भी आप कहते हैं कि हम गरीबों की तरफ बड़ा ख्याल

(श्री दौलतराम सारण)

रखते हैं। ग्राप कितना गरीबों का ख्याल रखते हैं उसकी एक नजीर मैं ग्रापके सामने रखना चाहता हूं। राजस्थान नहर ग्रौर दूसरे सिंचित क्षेत्र में विरोधी पक्ष के बार बार निवेदन करने पर भी आपने कहा कि जमीनों का नीलाम करेंगे। हमने यह कहा कि नीलाम नहीं करते गरीबों को तकसीम कर दो और उनसे ग्राप किश्त ले लें कीमत की, लेकिन ग्रापने नहीं माना। आखिर 20 हजार लोगों को जेल जाना पड़ा ग्रौर तब जाकर आपने नाक रगड़ कर उस बात को माना। आप पहले ही मान लेते तो कितनी शलीनता होती ग्रौर लाखों रुपये बच जाते खर्चे के और लोगों की परेशानी बच जाती। लेकिन ग्रापने नहीं माना। इस तरह की अनेक बातें मैं आपके सामने रख सकता हूं मेरे कहने का मतलब यह है कि ग्रापका नजरिया यह है कि शिकायत करें, प्रस्ताव भेजें, प्रतिवेदन भेजें, कोई प्रार्थना-पत्र दे, प्रतिनिधिमंडल मिलने आये तो यह सरकार, यह शासन उनकी बात नहीं सुनता है, लेकिन ग्रापने जरा भाषा बदली, ग्रापने कोई एक्शन बदला, ग्रापने कोई सख्ती लगाई, ग्रापने कोई हिंसा का इशारा दिया तब यह शासन सुनता है। यह जो नजरिया है वह लोकतान्त्रिक नहीं है, जनतान्त्रिक नहीं है। अगर वास्तव में जनतन्त्र का ग्रादर करते हैं तो जनता की बातें सुनें ग्रौर समझें ग्रौर उनके कष्टों को दूर करने का प्रयास करें।

भादरा से ग्राने वाले विधायक महोदय ने कहा कि ग्राज तक राजस्थान में पीने का पानी उपलब्ध नहीं करा सके हैं। बाड़मेर से आने वाले माननीय मित्र ने कहा कि ग्राज तक प्यास से लोग बिलबिला रहे हैं। उन्होंने पानी की समस्या को रखा है ग्रौर भी ग्रनेकों समस्याओं को रखा है जो कि मैं रखने वाला था, लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे बातों को उन्होंने रख दिया मैं उनसे कहना चाहता हूं कि पार्टी मीटिंग में ग्राप इन बातों को उठायें। यह विधायकपना रहे या न रहे जैसे कि पहले लोग थे तो अनेकों का शोक-प्रस्ताव कल यहां हो गया हमारा भी हो सकता है। हम आज ग्राये हैं ग्रौर कल चले जायेंगे, लेकिन हम जिस काम के लिये आये हैं, जिस कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए ग्राये हैं उसके लिए लड़ेंगे ईमानदारी से और उसको जरा भी कर पायेंगे तो हमारी शान रह जायगी। अगर जनता के हित में दल का त्याग भी करना पड़े तो करना चाहिए। पार्टी छोड़ने की बात नहीं ग्राती है। अगर ग्राप में कोई मोह है, कोई लोभ है तो पार्टी में रहें, लेकिन पार्टी के ग्रन्दर भी ग्रापने जब बात को उनके सामने व्यक्त कीजिये। चाटुकारिता से ये नहीं मानने वाले हैं।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता (बानसूर) : चुनाव ग्रा रहे हैं। खिलाफ बोलेंगे तो टिकिट कट जायगा।

श्री दौलतराम सारण : इधर के कुछ लोग मूल ग्रधिकारों की बात कहते हैं। संविधान में दिये गए मूल ग्रधिकारों को बड़ा खतरा है। खतरा लोगों के दिल में बैठाना चाहते थे और ग्रपने पीछे लोगों को करना चाहते थे, लेकिन देश के एक बड़े वर्ग को रोजी, रोटी चाहिए। उसे मूल अधिकार नहीं चाहिए। पहले भूखे को रोटी चाहिए, नंगे को कपड़ा चाहिए, मकानहीन को आवास का स्थान चाहिए, जो रोग-ग्रस्त हैं उनके लिए चिकित्सा चाहिए। वह अगर नहीं मिलती है केवल नारेबाजी से काम नहीं चलेगा।

(श्री दौलतराम सारण)

इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि मूल अधिकार, संविधान और जनतन्त्र की दुहाई अब नहीं चलेगी। अधिक समय तक अगर इसको चलाने की चेष्टा की गई तो अभी तक तो ज्यादा खराब नहीं हुआ लेकिन आगे परिणाम गम्भीर आयेंगे। इसलिए मूल अधिकारों की अपेक्षा जो मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकताएं हैं उनकी पूर्ति का प्रयास कीजिए। यह सबसे बड़ी आवश्यकता है।

मुझे यह कहते हुए बड़ा संकोच हो रहा है कि इस शासन ने संविधान की बड़ी अवमानना की है, इस शासन ने संविधान की मंशा और भावना की उपेक्षा की है, इस शासन ने संविधान के निर्देशक सिद्धांतों की उपेक्षा की है। संविधान ने निर्देश किया है कि शासन 15 वर्ष तक के छात्रों को निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा प्रदान करें, लेकिन आज तक उस सीमा तक नहीं पहुंच सके है। इसमें शिक्षा के आंकड़े दिये गये हैं वे कितनी दूर तक आज है अगर मैं उनके बारे में कहूं तो मुझे कहते हुए हैरानी होती है कि 25 वर्ष की स्वाधीनता के बाद भी हम वहीं के वहीं खड़े हुए हैं। मैं वहीं खड़े हुए है इसलिए कह रहा हूं कि 15 पर्सेंट से अधिक निरक्षरता का निवारण नहीं कर सके हैं वैसे निरक्षरता का प्रतिशत बढ़ रहा है। स्कूलों की संख्या जो आपके हिसाब से है उस हिसाब से भी मैं कहूं कि आज भी बहुत बड़ी संख्या निरक्षरों की बढ़ती जा रही है। अगर यही रफ्तार रही तो जितनी भी शिक्षण संस्थाएं हैं, जितना भी धन हम व्यय कर रहे हैं उसका ठीक उपयोग नहीं हो रहा है। एक मास्टर को 40 लड़के पढ़ाने चाहिए लेकिन आज इतनी छात्रों की संख्या उसके पास में नहीं है और हमारे राष्ट्र की शक्ति का दुरुपयोग हो रहा है, हमारे धन का दुरुपयोग हो रहा है, शिक्षकों की क्षमता का दुरुपयोग होरहा है। वह व्यवस्था आप नहीं कर पा रहे हैं।

इसके अलावा मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इसमें कोई दो राय नहीं है कि आपने शिक्षण संस्थाओं को बढ़ाया है, इसमें कोई दो राय नहीं है कि आपने शिक्षकों की संख्या को बढ़ाया है, लेकिन कितनी असंतुलित संख्या में। कहीं पर एक-एक, दो-दो मील के अन्तर पर ही दो-दो, तीन-तीन हाई स्कूल और कहीं कहीं पर पूरे ही क्षेत्र में एक भी हाई स्कूल नहीं है। कहीं पर 3-3, 4-4 डिग्री कालेज और कहीं पूरे डिस्ट्रिक्ट में एक भी डिग्री कॉलेज नहीं है। आपने इस तरह से असंतुलित तरीके से शिक्षण-संस्थाओं का नियोजन किया है कि उसका परिणाम यह आया है कि सैकड़ों छात्र ऐसे है जो कोई प्रारम्भिक स्कूल नहीं इसलिए स्कूल में नहीं जा सकते हैं।

ऐसा मैंने कल एक प्रश्न के उत्तर में कहा था। ऐसे सैकड़ों गांव है जहां आठ-आठ और दस-दस मील तक स्कूल नहीं है। मिडिल स्कूल नहीं है, छात्रावास नहीं है। कालेजों में जाकर वह रह नहीं सकते हैं। वहां का खर्च इस प्रकार का है। वहां कोई ढंग नहीं रखा गया है। इसलिए वह स्कूल में पढ़ नहीं सकते हैं।

यही हाल चिकित्सा का है। शहरों में नित नई डिस्पेन्सरी और सुविधाएं बढ़ाई जा रही हैं और गांव वैसे ही पड़े हैं। इसी तरह से पानी के बारे में सवाल है। जल कल योजना चल रही है। कहां, जहां पानी पहले से है। जहां दूर से पानी लाते हैं वहां कोई

(श्री दौलतराम सारण)

सुविधा नहीं है। जहां पहले से ही पानी था वहां ही पानी की यह नई सुविधा बढ़ाई गई है। यहां पोलिटिकल इन्फ्लुएन्स से शिक्षा संस्था खुलती है या राजनीति का दलगत प्रभाव है। मैं यह शिकायत के तौर पर नहीं कर रहा हूं. गम्भीरता से कह रहा हूं। 4 करोड़ आपने पीने के पानी के लिए खर्च किये हैं। यह स्थाई हल किया है। मेरा ख्याल है इस खर्च में जो पखालों से और ट्रकों से पानी ले जाने में लगे हैं, वह गलती से लिख दिये हैं। खैर यह आप जानें [यह तो छोटासा नगण्य है। अकाल सहायता के बारे में जो जितना बेतहाशा खर्च किया गया है, अगर मैं भूलता नहीं हूं तो करीब डेढ़ अरब रुपया खर्च कर दिया गया है. वह सारे इलाके में कहां खर्च किया गया। लेकिन ऐसे मस्टर रोल बनाये गये हैं जिनमें गलत नाम लिखे गये। जैसे केवलराम, कुर्सीदास खेजड़ादास। इस प्रकार के फर्जी नाम लिख कर लाखों रुपये उड़ा दिये गये हैं। यह सरकार जांच कराने को तैयार नहीं है। कई बार बहस मे, प्रश्नों में यह मांग की जा चुकी है। लेकिन इसके लिए आप तैयार नहीं है।

श्री रामचन्द्र आर्य : यह आप किसे सुना रहे हैं। यहां तो कोई नहीं है। (सरकारी पक्ष की ओर संकेत करते हुए)

श्री दौलतराम सारण : यही पैसा अगर सही ढंग से खर्च किया जाता तो नक्शा दूसरा नजर आता। सही ढंग से खर्च किया जाता तो वहां सैंकड़ों मन कपास मिल जाती। क्षेत्र सदा के लिए अकाल से मुक्त हो जाता। आप अगर चूरू लिफ्ट योजना पूरी कर देते नागौर बीकानेर लिफ्ट की सात लाख की योजना का आपने केवल 1 लाख 4 हजार की योजना बनाई है। उस छोटी सी योजना का कोई परिणाम आने वाला नहीं है। मूल योजना नागौर तक जाती। बड़ी सफलता होती। वह काम करने के लिए आप तैयार नहीं है। वहां फालतू पैसा करोड़ों रुपयों को बरबाद किया है। अगर आपने यह कार्य किया होता तो यह लिफ्ट योजना नागौर तक पहुंच गई होती। इसी तरह से मैंने एक प्रश्न दिया था कि हमारे जिले में औद्योगिक और उत्पादक कार्य कराये जायें। उत्पादक ये कि नहरों से सिंचाई की सुविधा दी जाये और ग्रामोद्योगी कार्य बढ़ाये जायें। उपयोगी यह कि कुवें और तलाब बनाये जायें। खैर, यह सरकार जाने ! कोई सरकार आयेगी तो देश हित के लिये सोचेगी। जो नल कूप बनाये हैं वह बेकार पड़े हैं। उनसे उत्पादन लिया जा रहा है न घास पैदा की जा रही है। वह पैसा बेकार लगा पड़ा है तो मैं कहना चाहता हूं कि रेगिस्तान में अब तक जो भू-तल जल का सर्वेक्षण किया गया है उस पानी के इस्तेमाल से रेगिस्तान की काया पलट हो सकती है। हो सकता है और भी सर्वे कराया जाये तो और भी स्थानों में अधिक पानी मिल सकता है। इस प्रकार भू-तल जल को उपयोग करके इस रेगिस्तान की समस्या को स्थायीरूप से हल किया जा सकता है।

(समय समाप्ति सूचक घण्टी)

लेकिन इस तरह कोई ध्यान नहीं लगाता है। वैसे समस्या के लिये कई ड्राफ्ट बनाये हैं।

(समय समाप्ति सूचक घण्टी)

क्यों साहब ? (आसन की ओर संकेत)

श्रीमती सभानेत्री : समय हो चुका है। दूसरे सदस्य भी बोलेंगे।

श्री दौलतराम सारण : मैं उनको मना नहीं करता हूं।

एक माननीय सदस्य : (अश्रव्य)

श्री दौलतराम सारण : तो मैं··· (अल्प विराम)। मेरी गाड़ी पटरी से उतार दी है।

एक माननीय सदस्य : फिर आजाएगी।

श्री दौलतराम सारण : हां तो मैं कह रहा था, पहले आवास के लिए भूमि दी जाये। कच्ची बस्तियों में लाखों लोग बिना मकान के पड़े हुये हैं आप उनको आवास के लिए भूमि दे दें। तो दूसरा सवाल आता है मकान का। मकान के लिए आप अगर उपयुक्त सहयोग दे सकते हैं तो बहुत अच्छी बात हैं, लेकिन नहीं भी दे सकते तो कम से कम आप एक मोडल, मकान का नक्शा तो दे दीजिये, उनको ईंट, चूना, माटा, खोर–यह पकाने या बनाने की छूट तो दे दीजिये····

(4.42 म. प.)

(श्री विजयसिंह, सभापति, पदासीन)

आपने इन पर पाबन्दी लगा रखी है, कोई ईंट, माटा, चूना, खोर निकालें तो वह पर्मीशन ले कलेक्टर से। यह नमूना है आपके समाजवाद का, यह आवास की समस्या के समाधान का दृष्टिकोण है। आप नजरिया बदलिये। जगह जगह अनावश्यक हस्तक्षेप बन्द कीजिये। लोगों को अपनी शक्ति और क्षमता से आगे बढ़ने का अवसर दीजिये। यह होगा तो बहुत सी समस्यायें लोग अपने आप हल कर लेंगे। आपकी अनावश्यक रोड़े बाजी के कारण बहुत समय ज्यादा बरबाद होता है।

पीने के पानी के बारे में मैं निवेदन करना चाहता हूं, आज लोग कुए नहीं बना सकते हैं, कुण्ड नहीं बना सकते हैं। कुए और कुण्ड बनाने की हमारे रेगिस्तान में निश्चित जगह होती है, हर जगह बना सकते। लेकिन राजस्थान सरकार उसकी अनुमति देती है। अगर कोई बनाले तो उखाड़ने की बात आती है, दफा 91 के अन्तर्गत। यह अदूरदर्शिता-पूर्ण बात है। इसलिए आपका जो नजरिया है उसको बदलिए और परिस्थितियों को देखते हुए बात करिये।

एलाटमेंट, एलाटमेंट, एलाटमेंट के बारे में, भूमि के बारे में रोज बात होती है। लेकिन भूमि की समस्या का समाधान नहीं होता है क्योंकि आप लोग देखते हैं कि भूमि का एलाटमेंट हो जायगा तो हमारे लिए भूमि नहीं बचेगी। आप देश की समस्याओं की ओर देखिये, देश में अधिक भूमि की आवश्यकता है, भूमि आवश्यक है, पानी के लिए आवश्यक होती है, खानों के लिए आवश्यक होती है, ईंट, माटा, चूना, खोर के लिए आवश्यक होती है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए भूमि का एलाटमेंट होना चाहिये। लेकिन बेतहाशा भूमि का एलाटमेंट हो रहा है। गांवों का प्लानिंग नष्ट किया जा रहा है। गांवों के लोग परेशान है। इसके लिए बड़े दुःखी हैं। लेकिन किससे कहें। उनकी कोई सुनने वाला नहीं है, देखने वाला नहीं है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि लोगों की मुसीबत की तरफ गौर करें और उनको दूर करने का प्रयत्न करें अगर वास्तव में जनता के प्रति हमदर्दी है

श्री सभापति : अब आप दूसरों को भी मौका दें।

श्री दौलतराम सारण : कृषि के बारे में कह रहा था, जो उद्योगों को औद्योगीकरण

Page No 108

(श्री दौलतराम सारण)

के नाम पर छूट देते हैं, रियायत देते हैं, लेकिन खेती के सम्बन्ध में आप कोई रियायत नहीं देते हैं, खेती के लिए कुए के लिए बिजली ले तो उसको गारन्टी और स्योरिटी देनी पड़ेगी और पन्द्रह पैसे यूनिट के देने पड़ेंगे, लेकिन बड़े बड़े उद्योगों के नाम से बिजली मांगे तो सरकारी खर्चे पर लाइन ले जाकर कारखाने पर लगाई जाती है, रियायती रेट पर जमीन और पानी दिया जाता है, बिजली का उत्पादन व्यय है छः पैसे, आठ पैसे लेकिन उनको तीन चार पैसे यूनिट पर दी जाती है, लेकिन खेती के लिए रियायत नहीं है। डी. सी. एम. के रासायनिक कारखाने को रियायत है, जिसकी कि खाद जापान की आयतित खाद से दुगने मूल्य पर बिकती है, वह किसानों को खाद लेनी पड़ती है। लेकिन खेती की पैदावार बढ़ाने वाले को कोई रियायत नहीं है, जो डी. सी. एम. के कारखाने को है। यह डबल पालिसी चल नहीं सकती है। यह अस्सी प्रतिशत लोगों के पैसे के आधार पर चन्द लोगों को औद्योगीकरण के नाम पर लाभ देने की नीति अधिक समय तक नहीं चल सकती है। इसी तरह से खाद, बीज, औजारों के लिए, कीट नाशक औषधियों आदि के बारे में आपकी नीतियां वैसी नहीं हैं। ऋण किसान लेगा तो उसको दस पर्सेंट देना पड़ेगा, उद्योगपति लेगा तो तीन पर्सेंट, चार पर्सेंट पर मिलेगा, पांच पर्सेंट पर मिलेगा। यह रियायत क्यों है ? मैं पूछना चाहता हूं, यह रियायत किस आधार पर है ? यह औद्योगीकरण के आधार पर नहीं है। यह चन्दे और दान के नाम पर है, यह छूट दी जाती है और नाम औद्योगीकरण लिया जाता है। इसी तरह से आज फसल के मामले में है, किसान पैदा ज्यादा करता है लेकिन उसकी पैदा जब बाजार में मण्डी में जाती है तो वहां भावों पर आपका नियंत्रण नहीं है। आज से कुछ महीने पहले जब किसान खेती कर रहा था, उस समय उसने सौ रुपये, एक सौ दस रुपये के भाव पर अनाज खरीदा था, उस वक्त इतने भाव से बीज खरीदा था, लेकिन आज चालीस रुपये, तीस रुपये के भाव से बेचने को वह मजबूर हो रहा है। यह फर्क इतना कहां से आ गया अचानक ? उधर कारखाने में बनी चीजें खरीद रहा है, उसमें इतना फर्क नहीं है, कपड़े के मूल्य में, औजार के मूल्य में, खाद के मूल्य में, कीटनाशक दवा के मूल्य में बढ़ोत्तरी आ गई है, दूसरी ओर जो चीजें वह बाजार से लेता है उनका मूल्य बढ़ गया है लेकिन अनाज का मूल्य आधे से कम हो गया है। यह नीति रहेगी तो इस देश में समाजवाद नहीं आयेगा। उत्पादन तो बढ़ेगा लेकिन किसान के घर से बाजार का जो चक्कर है वह बढ़ जायगा और देश में खुशहाली नहीं आयेगी, जहां वह अपनी पैदावार बाजार में डालता है वहां पर खुशहाली आयेगी। इन नीतियों के परिणाम से किसानों को लाभ नहीं मिलेगा। इसलिए आप इस पर गौर कीजिये, यह मेरा आपको कहना है। (समय समाप्ति–सूचक घण्टी) बन्द कर दूं मैं ?

श्री सभापतिः माननीय सदस्य ! आपने कम से कम पचपन मिनिट ले लिए हैं, दूसरे सदस्यों को बोलना है, इसलिए।

श्री दौलतराम सारण : बी.के.डी. के और कोई सदस्य बोलना चाहते हैं ?

श्री सभापति : पहले रामचन्द्र आर्य बोले हैं।

श्री जुझारसिंहः टाइम बाकी है क्या।

श्री दौलतराम सारण : अच्छी बात है।

श्री सभापति : धन्यवाद ! श्री जयनारायण सालोदिया।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : इनका भाषण खत्म होगा नहीं आज।

श्री जयनारायण सालोदिया : आज नहीं होगा।

श्री सभापति : आज ही खत्म होगा।

श्री जयनारायण सालोदिया : नहीं, नहीं। आज नहीं होगा, किसी और को बुलवा लीजिये।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : (श्री लाभचंद वैद के खड़े होने पर) इनको बोलने दीजिये, दस मिनिट में खत्म कर देंगे।

श्री मनोहर सिंह मेहता: उनको बोलने दीजिये।

श्री जयनारायण सालोदिया (निवाई): चेअरमैन महोदय, राज्यपाल महोदय, का अभिभाषण मैंने पढ़ा, मैं भी अन्य माननीय सदस्यों की भांति इसे पढ़कर इस विचारधारा का बना हूं कि राज्यपाल महोदय का जो अभिभाषण हमें पढ़ने को मिला उसमें कोई राज्यपाल महोदय मार्गदर्शन करते राजस्थान की जनता या सरकार का- ऐसी कोई बात नहीं थी। ऐसा अभिभाषण राज्यपाल महोदय के द्वारा इस सरकार के द्वारा दिलवाया जायगा ऐसी सपने में भी उम्मीद नहीं थी। जो राज्यपाल महोदय ने अभिभाषण पढ़ा है उससे न तो सरकार की तरफ से मार्गदर्शन है, न राज्यपाल महोदय की तरफ से मार्गदर्शन है, केवल नारेबाजी है– समाजवाद समाजवाद। किस चिड़िया का नाम समाजवाद है? कोई जानकारी नहीं मिलती है। क्या है समाजवाद? किस तरह का समाजवाद बनाना चाहते हैं? क्या राज्यपाल महोदय की मन्शा है? क्या सरकार की मन्शा है? यह इस किताब से कोई जानकारी नहीं मिलती है? हम राज्यपाल महोदय पर लाखों रुपये मात्र का खर्च करते हैं। वह केवल एक दिन विधान सभा में पधार कर अभिभाषण देते हैं, वह भी इस तरह का बोगस अभिभाषण दें, रद्दी की टोकरी में फैंकने के लायक है यह अभिभाषण। इसमें राज्यपाल महोदय ने कोई कृपा नहीं की है, न कृपापूर्वक भाषण दिया है। मैं कहता हूं, राज्यपाल महोदय पर जो स्टेट का खर्चा हो रहा है, वह बेकार का खर्च है, फिजूल खर्च है। राज्यपाल महोदय की पोस्ट को इस स्टेट से खत्म किया जाना चाहिए, तोड़ देनी चाहिए, यदि समाजवाद के अन्दर विश्वास करते हैं। एक तरफ आप समाजवाद में विश्वास करते हैं, दूसरी तरफ पचास बीघा में बना हुआ बंगला दे रखा है, दस गाड़ियां हैं, सौ नौकर हैं और बाकी की व्यवस्था की है। अगर समाजवाद में भरोसा करते हैं तो इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। यह केवल विधान सभा के सामने एक दफा पधार कर अभिभाषण दे जाते हैं। यह शर्म की बात है, डूब मरने वाली बात है। एक तरफ किसान नंगे खड़े हैं, मजदूर बेकार खड़े हैं, राजस्थान में बेकारी ज्यादा फैल रही है, इंजिनियर बेकार खड़े है, दूसरी तरफ राज्यपाल महोदय पर इतना खर्च करे। वह पधारें तो यहां से वहां तक पग पावड़े बिछायें, झण्डियां लगायें, उनको सलाम करें। यह दोनों बातें समाजवाद में नहीं चलने वाली है। यह समाजवादी ढंग है? या राजाशाही ठाठ आप कर रहे हैं। माननीय चेयरमैन महोदय·······

श्री मनोहर सिंह मेहता : शराब की सबसे ज्यादा चोट हरिजनों पर पड़ती है, यह मत भूलें।

श्री जयनारायण सालोदिया : चुनाव की बात मैं आप लोगों के समक्ष रख देना चाहता हूं। जिस भ्रष्ट तरीके से लोकसभा के चुनाव हुए हैं, उतने भ्रष्ट तरीके को कोई सरकार नहीं अपना सकती है। मुझे पहले ही भरोसा था कि यह निकम्मी सरकार, यह कमजोर लोग, कच्चे दिल और आत्मा के लोग इस तरह की बातें करेंगे, जो कि इन्होंने की है। वोटर लिस्ट, जैसा मेरे पूर्व वक्ताओं ने कहा और मैंने भी इस सम्बन्ध मे स्थगन प्रस्ताव दिया था, मेरे क्षेत्र की वोटर लिस्ट में से लोगों के नाम के नाम निकाल दिए, एक से पचास तक गायब। वह सब मर गये? सरकार मरी है या वह मर गये हैं? आप लोगों के मताधिकार को छीनना चाहते हैं? आप हिन्दुस्तान के लोगों का मत देने का अधिकार खत्म करना चाहते हैं, एक कलम से काटना चाहते हैं। यह सरकार निकम्मी है, यह सरकार गैरजिम्मेदार है। यह सरकार लोगों के अधिकारों को खत्म करने वाली सरकार है। क्या वह लोग हिन्दुस्तान में नहीं है, क्या मामला है? म्युनिसिपैलिटी चुनाव में जिन्होंने वोट दिये, पंचायत चुनाव में जिन्होंने वोट दिये, अभी अभी बाई इलेक्शन हुए उसमें वोट दिये लेकिन लोकसभा के चुनाव में पर्ची लेकर वोट देने आते है तो उनका नाम कटा हुआ था। जब कि उनसे पूछा नहीं गया, उनको जानकारी नहीं दी गई कि तेरा नाम काट दिया गया है। ऐसी गैरजिम्मेदार सरकार ने चुनाव में इस तरह के हथकण्डे अपनाये हैं। यह सरकार निकम्मी है.......

श्री नाथूराम (बागीडोरा) : आपने क्या किया? नाम निकाल दिये तो आपने क्या किया।

श्री जयनारायण सालोदिया : (श्री गिरधारी लाल व्यास से) आप तो सरकार की दुम हैं, आप क्यों बोलते है? चुनाव में भारी खर्चा हुआ। मेरे पास से बदकिस्मत से सुखाड़िया जी गुजरे। उनका कार्यक्रम पढ़ा। 15–20 दिन का इतना बड़ा कार्यक्रम था और लवाजमा ऐसा कि राजा महाराजा भी झख मारें, राजा-महाराजाओं की भी ऐसी सवारियां नहीं देखी। चुनाव मीटिंग्स में सुखाड़िया जी और दामोदर जी को देखा तो दो पुलिस की गाड़ियां आगे और दो पुलिस की गाड़ियां पीछे। जैसे अतिक्रमण कर रहे हों, बरात में जा रहें हैं, युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर कन्वोकेशन में जा रहे हैं। इस तरह की बात करते हैं और समाजवाद के नाम से जनता को धोखा देते हो, जनता को गुमराह करते हो। जनता का खून क्यों पीते हो? उनसे वोट जबरदस्ती छीनते हो। क्या करना चाहते हैं आप हिंदुस्तान में? राजस्थान की जनता को किस तरह का समाज–वाद आप देना चाहते हैं? आप गरीबी खतम करने की बात करते हैं। आपने अपनी खुद को गरीबी जरूर मिटाई। मंत्रिमंडल में बैठने वाले मेरे साथी गरीब थे। 20 साल पहले उनकी क्या हैसियत थी, आज उनकी क्या हैसियत है? 20 साल पहले उनके पास एक इंच जमीन नहीं थी आज हजारों बीघा जमीन है। 20 साल पहले एक मकान भी नहीं था आज 5–5 बंगलें हैं उनके पास 20 साल पहले एक रुपया भी बैंक बैलेन्स नहीं था आज करोड़ों रुपया बैंक बैलेन्स है। पहले साइकल नहीं थी आज सवा लाख की गाड़ियां हैं। आपने देश को गरीब बनाया, गरीब

(श्री जयनारायण सालोदिया)

को ज्यादा गरीब बनाया और अपनी गरीबी खतम की। इन्दिराजी ने देखा कि गरीबी खतम करनी है। उन्होंने गौर करके देखा कि कुछ गरीब हो सकते हैं हिन्दुस्तान में। अपने सिवा किसी को गरीब नहीं पाया। तो छोटी कार बनाने का लाइसेंस अपने बेटे को दे दिया। इस प्रकार उनके घर की गरीबी खतम हुई। कार के कारखाने की वजह से उनके घर कम से कम 5 करोड़ रुपये हैं। दूसरी तरफ नौजवान खड़े हैं और इधर इंदिराजी के घर में 5 करोड़ रुपए हैं....।

एक माननीय सदस्य : छोटी कार बनेगी तो आपको भी मिलेगी।

श्री जयनारायण सालोदिया : आप तो बेकार रहोगे, आपको कार नहीं मिलेगी। इंदिराजी समाजवाद का खूब काम कर रही है। बेटा कार बनाता है, मां बेकार बनाती है।

एक माननीय सदस्य : मां सरकार बनाती है। आपके पास कार है।

श्री जयनारायण सालोदिया : मेरे पास कोई कार नहीं है। अगर हो तो तोड़ कर आप ले जायें। सरकारी साधनों के लिए निवेदन करूं कि मेरे यहां चुनाव हो रहे थे। जब सुखाड़िया जी और जगजीवनरामजी वहां आए तो थानेदार ने सारी ट्रकें पकड़ीं। सब लोगों को बुलाकर इकट्ठा किया। इस तरह सरकारी मशीनरी का खुलकर उपयोग किया गया।

दूसरी बात जब सुखाड़िया जी निवाई गए तो फिर थानेदार ने सारे इलाके की ट्रकें पकड़ीं और सब लोगों को वहां बुलाकर इकट्ठा किया। यह चुनाव कोई कांग्रेस पार्टी लड़ रही थी या राजस्थान सरकार लड़ रही थी या थानेदार चुनाव लड़ रहा था। जब वोट पड़ने लगे तो थानेदार ने सारे साधन इकट्ठे किए, सब को बुलाया, वोटरों को बुलाकर वोटिंग करवाई। आखिर क्या नक्शा लेना चाहते हैं? किस तरह का प्रजातंत्र कायम करना चाहते हैं? न आपको गरीबी मिटाने में आस्था है, न प्रजातंत्र में आस्था है न चुनाव में आस्था है। आपका तो कुर्सी से वास्ता है उस पर टिके रहें। येन केन प्रकारेण चाहे कोई भी कैसे वोट दे। साम, दाम, दंड, भेद से राजस्थान की गरीब जनता की छाती पर बैठकर मूंग दलना चाहते हैं। गरीबों की रूखी रोटी छीनकर आप मक्खन लगाकर खाना चाहते हैं।

मंत्रियों के बारे में निवेदन करना चाहता हूं। अगर आपको समाजवाद कायम करना है तो जो आपकी मंत्रियों की फौज है, एक अलीबाबा 39 चोर, उनको कम करना पड़ेगा, उनको आदर्श बनाना पड़ेगा। लड़कों की शादियों में 2–2 लाख रुपया खर्च किए जाते हैं, वह रुपया गरीबों को बांटना पड़ेगा, देश के काम में लाना पड़ेगा तब तो आपका समाजवाद है, नहीं तो जनता आपके समाजवाद को अच्छी तरह से देख लेगी। जो आपने नारे देकर, जिस चलाकी से जनता से वोट लिए हैं जनता आपको छोड़ने वाली नहीं है। जनता आपसे पूछेगी कि 23 साल में क्या किया, 23 साल में गरीबी खतम नहीं कर सके, फिर किस मुंह से कहना चाहते हैं कि गरीबी खतम करेंगे, समाजवाद लायेंगे? हमें कोई भरोसा नहीं है न राजस्थान की जनता को भरोसा है कि आपकी नीतियों द्वारा समाजवाद आने वाला है।

(श्री जयनारायण सालोदिया)

राज्यपाल महोदय के लिए मैंने निवेदन किया, उनके रहने और मेरे रहने में कितना फर्क है ? मेरे रहने और साधारण क्लर्क के रहने में कितना फर्क है ? क्लर्क के रहने में और जो भीख मांगते हैं, जो बेकार हैं उनमें कितना फर्क है ? जमीन आसमान का फर्क है । फिर उसको समाजवाद कहते हैं ?

इन्दिराजी पधारी हैलीकोप्टर से जैसे कोई इंदराणी आसमान से उतर रही है और एक एक जगह जहां जहां चुनाव सभायें थी वहां 30-30 हजार 40-40 हजार खर्च किया गया । क्या वह समाजवादिन थी ? उसके बाद भी आप लोगों को वोट मिले, आपकी जीत हुई, उसके लिए मुबारकवाद । लेकिन समय रहते आपको चेतना चाहिए. हम आपके शुभचिंतक की हैसियत से कहना चाहते हैं कि यदि आपके समाजवाद के ढोंग का नारा यह बेकार की बात रही और जनता ने आपके ढोंग की पोल को देख लिया तो आपकी कीमत दो पैसे की नहीं रहेगी । इसलिए अगर आप समाजवाद लाना चाहते हैं तो हम आपको सहयोग करना चाहते हैं हम आगे हैं आपकी मदद करना चाहते हैं लेकिन वोट लेने वाला समाजवाद नहीं लाना चाहते

श्री वृद्धि चंद जैन : स्वतंत्र पार्टी तो समाजवाद के पक्ष में नहीं है ।

श्री जयनारायण सालोदिया : आपको किसने बता दिया आप समझते तो कुछ हैं नहीं।

श्री वृद्धिचंद जैन : सब समझते हैं ।

श्री दिग्विजय सिंह : आप हैलीकोप्टर के समाजवाद में विश्वास करते हैं ।

श्री जयनारायण सालोदिया : राजमाता गायत्री देवी तो जीप में पधारती फिरी और इंदिराजी हैलीकोप्टर में फिरती है । शर्म आनी चाहिए आपको ।

श्री वृद्धि चंद जैन : समय की महत्ता को समझना चाहिए ।

श्री जयनारायण सालोदिया : शर्म आनी चाहिए, आप जनता के दुश्मन हो, बिल्कुल प्रतिक्रियावादी और धन्नासेठोंके दलाल हो ठेकेदार हो । मेरे यहां कांग्रेस का उम्मीदवार था, सारा पैसा सीमेंट फैक्ट्री का लग था साहू जैन का । सारे साधन उनके थे । क्या वह धन्ना सेठ नहीं है ? वह किसका उम्मीदवार था ?

श्री वृद्धि चंद जैन : आपकी पार्टी में सब राजा और पूंजीपति थे । सब के सब ढह गए ।

(कई माननीय सदस्य बोलने लगे)

श्री दिग्विजय सिंह : एन. के. सांघी कौन था ?

श्री जयनारायण सालोदिया : शर्म से डूबना चाहिए आपको । राजस्थान में ...

श्री गिरधारीलाल व्यास : राजमाता 9 महीने इंग्लैंड में रहती है ।

श्री सभापति : सदन की अनुमति से सदन का समय 5 मिनट के लिए बढ़ाया जाता है ।

श्री जयनारायण सालोदिया : जिसका राज चला गया वह राजा नहीं, जिसकी जागीरदारी चली गई वह जागीरदार नहीं ।

श्री वृद्धि चंद जैन: आज भी राजमाता और राजा कहलाते हैं।

श्री जयनारायण सालोदिया : वह तो कहलाते हैं। आपको मना नहीं करते हैं।

श्री वृद्धि चंद जैन : वह खत्म करेंगे। आज भी उनको भी समाप्त करेंगे। बहुतों को खत्म कर दिया और कर देंगे।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : आपको भी सेठ कह दे ?

श्री जयनारायण सालोदिया : आपने झक मारी है। आपको चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये। आप एक भी राजा महाराजा को नहीं हरा सके। आप जैसे निकम्मे····

श्री वृद्धि चंद जैन : भरतपुर के महाराजा को हराया है।

श्री जयनारायण सालोदिया : हराया आपने शिड्यूल्ड कास्ट के लोगों को। जो राजा नवाब आप में हैं, कल तक महाराजा साहब की सुखाड़ियाजी खुशामद करते थे आज आप से अलग हो गये।

श्री वृद्धि चंद जैन : यह बहुत अच्छा हुआ कि अलग हो गये।

श्री जयनारायण सालोदिया : उदयपुर डिवीजन में जो परिणाम हुआ है सुखाड़ियाजी का वह मालूम हो गया है आपको।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : नवाब साहब आपमें हैं। सेठ साहब आप है।

श्री जयनारायण सालोदिया : सभापति महोदय, आप इन पर कन्ट्रोल कीजिये।

श्री लाभ चन्द वैद्य : नवाब साहब को क्या कहते हैं आप ?

श्री वृद्धि चन्द जैन : नवाब साहब।

श्री लाभचन्द वैद्य : आपकी पार्टी में बैठे हैं इसलिये नवाब साहब है और इधर बैठे तो नहीं।

श्री जयनारायण सालोदिया : यही आपकी कथनी और करनी में फर्क है।

श्री वृद्धि चन्द जैन : जब ही जनता ने फैसला दिया है।

श्री जयनारायण सालोदिया: आपकी बुद्धि पर मुझे तरस आता है।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : वृद्धि चन्दजी को समाजवाद की विशेष हवा लगी है।

श्री जयनारायण सालोदिया : जो फरक आपकी कथनी और करनी में है उसका तो नमूना है ही और फिर आपके समाजवाद के तो क्या कहने। आपने देखा होगा कि 23 वर्ष की आजादी के बाद शिड्यूल्ड कास्ट और शिड्यूल्ड ट्राइब्स ने आपका जितना साथ दिया है और कांग्रेस को वोट देकर मजबूत किया है उतना किसी को नहीं।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : एक जानकारी चाहता हूं कि माननीय सेठ वृद्धि चन्दजी को डिप्टी मिनिस्टर कब बनाया जा रहा है ?

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : मैं सेठ नहीं हूं।

श्री जयनारायण सालोदिया : यह तो आपकी सूरत से ही लगता है कि आप सेठ नहीं हैं।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : जाति से नहीं हूं।

श्री जयनारायण सालोदिया : राजस्थान में ही नहीं हिन्दुस्तान में जितने अनुसूचित जाति के लोग हैं, जिन्होंने 23 वर्ष तक आप लोगों को वोट दिये और कोई भी आपकी सरकार बनती है तो उनके द्वारा बनती है चाहे वोटों के द्वारा या चाहे दल बदल करके बने। इन लोगों का आपके साथ सहयोग है। आप उनके साथ क्या कर रहे है? आपने 23 वर्ष में उनके लिए क्या किया है?

श्री गिरधारी लाल व्यास : तमाम हिन्दुस्तान भर के लोगों ने वोट दिया और आपने नहीं दिया।

श्री सभापति : क्या समय बढ़ाया जाय?

श्री जयनारायण सालोदिया : और बढ़ा दीजिये।

श्री सभापति : दस मिनट के लिये और बढ़ा देता हूं।

श्री जयनारायण सालोदिया : आपकी राय उन लोगों ने मानी तो आपने उन्हीं की गरदन काटी। आज भी शिड्यूल्ड कास्ट और शिड्यूल्ड ट्राइबस के लोग भूमिहीन बैठे हैं। बेकार बैठे हैं। आपने गांधी शताब्दी में एक साल का अलाटमेंट कर दिया लेकिन कलेक्टर ने उनको पट्टा नहीं दिया। किस प्रकार आप शिड्यूल्ड कास्ट की हालत को ठीक करना चाहते हैं? आप तो अपनी बढ़ती हुई भूख को मिटायें जो कभी मिटने वाली नहीं है फिर गरीब की बात करिये।

यह जो सरकार समाजवाद लाना चाहती है उस गरीब को आपने कितना उठाया है? आपने उसको आबाद करने के लिये क्या किया? कुछ नहीं। आपने अपने बंगले बना लिये, आपने अपनी कोठियां बना लीं। आपने उस गरीब को क्या दिया? वह गरीब जो आपकी नींव का पत्थर है उसको आपने क्या दिया? सिवाय भूख और बेकारी के आपने उसको कुछ नहीं दिया और फिर आप समाजवाद की बात करते हैं। यह आपके मुंह से कहना अच्छा नहीं लगता है। यदि आप वास्तव में समाजवाद लाना चाहते हैं पहले आप अपने बंगले को छोड़िये, अपनी गाड़ियां छोड़िये और आप जनता के बीच में आइये। एक मंत्री आज भी चपरासी की तरह से ट्रीट करता है उप मंत्री को और कलेक्टर एक हीन आदमी की तरह से उसको ट्रीट करता है। ऊपर से केवल समाजवाद की बात करते हो। पहले आप अपने आपको सुधारो, अपनी करतूतों को सुधारों। समाजवाद तो केवल आपका जनता को मूर्ख बनाने का नारा है।

माननीय सभापति महोदय, एक बात और निवेदन करना चाहता हूं कि अगर असली माने में समाजवाद लाना है तो जैसा मैंने निवेदन किया, मैं माननीय राज्यपाल और राष्ट्रपति की बहुत इज्जत करता हूं, लेकिन उनकी जो परिपाटी है रहने करने की, उससे मैं सहमत नहीं हूं। मैंने अखबारों में पढ़ा है कि जो उनके मकान हैं वे 1200 एकड़ में हैं। एक आदमी का मकान 1200 एकड़ में राष्ट्रपति का मकान हो, पचास एकड़ में राज्यपाल का मकान हो.......

श्री रामानन्द अग्रवाल : कितना होना चाहिए आपके ख्याल से?

श्री जयनारायण सालोदिया : जितना एक साधारण आदमी को मिले हिन्दुस्तान में जितना साधारण से साधारण आदमी को

(श्री जयनारायण सालोदिया)

हिन्दुस्तान में मिले उतना उनको मिले। एक तरफ प्रिविलेज्ड क्लास बढ़ाते जा रहे हैं दूसरी तरफ आवास की बात के लिए कहते हैं कि पैसा कहां से लायें। जो साधन देश के हैं उनको और पैसे को डिवाइड भी करेंगे तो कैसे काम चलेगा ? मैंने एक जगह राष्ट्रपति का विचार पढ़ा था....

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : यह कहां पढ़ लिया ?

श्री गिरधारीलाल व्यास : आपके देश में महमान आयेंगे तो वह कहां ठहरेंगे ?

श्री जयनारायण सालोदिया : देश के महमानों के लिए बहुत होटल है, रेस्ट्रां है वहां ठहरें। आपके मेरे कहां ठहरते है ?

श्री गिरधारीलाल व्यासः अपनी दूसरी बात है।

श्री जयनारायण सालोदिया : मै हिन्दुस्तान का रहने वाला हूं, आप भी हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं। मेरे महमानों के लिए क्या व्यवस्था है— यह कभी आपने पूछा ?

श्री रामानन्द अग्रवाल : आप इस पक्ष के हैं कि जिनके पास ज्यादा मकान हैं, बड़े मकानात हैं उनको बांट दिया जाय ?

श्री जयनारायण सालोदिया : बिल्कुल बांट दिया जाय।

श्री गिरधारीलाल व्यास : समझ कर कहा है।

श्री जयनारायण सालोदिया : बिल्कुल बांट दिया जाय।

श्री रामानन्द अग्रवाल : आपका दल यह स्वीकार करता है ?

श्री गिरधारीलाल व्यास : जो बिल आ रहा है, उसको स्वीकार करेंगे ?

श्री जयनारायण सालोदिया : बिल्कुल स्वीकार करेंगे।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : जिसके पास ज्यादा जमीन हैं उनको बांट दिया जाय ?

श्री जयनारायण सालोदिया : जिसके पास ज्यादा जमीन है उसको बिल्कुल बांट दिया जाय। राष्ट्रपति भवन का किया जाय तो उन लोगों का भी किया जाय।

श्री रामानन्द अग्रवाल : बांटों बांटों तो महल नहीं बचेगा।

श्री जयनारायण सालोदिया : उन्होंने तो पहले ही बांट दिया है। असेम्बली भवन दे दिया है, सेक्रेटरियट दे दिया है, महारानी कालेज, महाराजा कालेज दे दिया है। उन्होंने तो दे दिया है, आप भी कुछ दें, पांच पैसे भी तो दें।

श्री दिग्विजयसिंह : यह तो दो चार मकान फार्म में बना लें।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : यह कहां से लाये थे। मकान देने वाले कहां से लाये थे ?

श्री रामानन्द अग्रवाल : अभी बहुत कुछ बांटने को है, चन्द्र महल, राम बाग बांटना है।

श्री गिरधारीलाल व्यास : मोती डूंगरी बंटनी है।

श्री जयनारायण सालोदिया : वह ठीक है, वह सब बंटेगा।

श्री दिग्विजय सिंह : अभी पेट्रोल पंप बांटना है, सब बंटेगा। जो कुछ बंटने का है वह भी बंटेगा। पेट्रोल पम्प बंटेगा तब समाजवाद आयेगा।

श्री जयनारायण सालोदिया : जहां बांटने का प्रश्न आया है वह लोग आगे रहे हैं लेकिन आपका दो नम्बर का पैसा भी बंटना चाहिए, आपकी जमीन बंटनी चाहिये, जो शहरियों की जमीन पर कब्जा कर रखा है वह बंटनी चाहिए।

श्री दिग्विजय सिंह : अंगूरों का बाग भी बंटेगा।

श्री जयनारायण सालोदिया : आप पहले सड़कों पर आयें, पहले असलियत पर आयें, सड़कों पर आये वह भी बंटेगा, वह तब भी आगे रहेंगे। उन्होंने बांटा है, राज्य बांटा है, लेकिन आपने क्या किया है ?

श्री गिरधारीलाल व्यास : सब किया है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : नवाबों का बटेगा तो राजा का भी बंटेगा।

श्री सभापति : आप तसल्ली करें, इस समय कुछ बंटने वाला नहीं है।

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : इस समय नहीं बंटने वाला है तो कुछ भी बचने वाला नहीं है।

श्री जयनारायण सालोदिया : वह बंटेगा तो सुखाड़िया का फार्म भी बंटेगा।

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : जयनारायण का भी बंटेगा, वह भी नहीं बच सकता।

श्री जयनारायण सालोदिया : मेरी गरीबी बंटेगी।

श्री लाभचन्द वैद : आपका समाजवाद का ऐलान है, आप आज तक एक आदमी भी बतला दीजिये जो अमुक जगह संस्था चला रहा है, जिसने अमुक जगह कुआ खोदा है या तालाब बनवाया है। एक भी उदाहरण बता दीजिये।

श्री जयनारायण सालोदिया : चैयरमैन महोदय, मुझे बोलने दिया जाय। मैं आपसे निवेदन कर रहा था, आप लोगों ने सबसे पहले तो को-आपरेटिव को खाया है, पहले तो नारा लगाया था, को-आपरेटिव के आधार पर देश का उद्धार करना चाहते हैं। हर आदमी चिंतित है, आपके कार्यकर्ताओं ने, आपके नेताओं ने को-आपरेटिव को खा लिया है। उसके बाद पंचायत समितियों को हाथ में लिया और आप पंचायत समितियों को दस साल में खा गये, उसको डकार गये। आपको पैसा चाहिये, अब बैंकों के ऊपर हाथ डाला हैं मैं चैलेंज के साथ कहता हूं कि बैंक आपके हाथ में रहे तो दस साल में दिवालिया हो जायेंगे।

श्री गिरधारीलाल व्यास : बिड़ला का पैसा आप खा जायेंगे।

श्री जयनारायण सालोदिया : आपको तो पैसा चाहिये, कहीं से भी। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि देश का पैसा आज जो को-आपरेटिव के माध्यम से, पंचायत समितियों के माध्यम से नेताओं में बाकी पड़ा है, जो खा गये हैं जो बकाया है– उसका पता नहीं है– इस सब पैसे को आप वसूल करिये। एक तरफ जनता से टैक्स मांगते हैं, विदेशों से कर्जा लेते हैं, और देश पर कर्ज चढ़ा कर पैसा लाते हैं दूसरी तरफ उसे अपनी अपनी जेब में रखते हैं। यह बंदर बांट है, यह बड़े शौक की बात है। यह देश के साथ में गद्दारी है। देश का हनन करना है, यह आपका गुनाह है जिसे जनता बख्श नहीं सकती है। आप गुनहगार हैं देश के सामने।

श्री सभापति : सदन की कार्यवाही कल प्रात:काल 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही सायंकाल 5 बज कर 15 मिनिट पर बृहस्पतिवार दिनांक 18-3-71 के प्रात: 11 बजे तक के लिए स्थगित हुई)

परिशिष्ट 1

(अतारांकित प्रश्न सं० 19 की सूची)

ग्राम कोटवाड़ा में नाजायज तामीरात की सूची

क्रम सं०	नाम खातेदारान	पिता का नाम	जाति	ख०नं०	वर्ष निर्माण	विशेष विवरण
1	2	3	4	5	6	7
1	रामजीलाल	सुखलाल	कायस्थ	758		
2	पंचायत समिति विभाग	—	-	755		
3	घीस्या काल्या	दयोला	कुम्हार	783		भंवरलाल पुत्र कालू कुम्हार
4	राजासिंह, बलबीरसिंह, सूरतसिंह	श्रीराम	यादव	912		
5	छोटूराम, चन्दराम, रामसहाय	धाना	कुम्हार	786		रामचन्द्र पुत्र धाना कुम्हार
6	भोरीलाल	रूपनारायण	,,	792		मक्खनलाल पुत्र सुरजमल
7	छोटू	रामचन्द्र	,,	889		मोरीलाल पुत्र ईसरलाल
8	चौगान	मेहता	,,	796		
9	गणेशलाल	चौथू	जाट	862		
10	राधेश्याम	छाजू	ब्राह्मण	763/1, 829/2		
11	गिरधारीलाल	रामस्वरूप	जाट	1236		
12	,,	,,	,,	1235		
13	भंवरलाल	—	कुम्हार	1233/3		
14	गिरबरदान	—	चारण	1332, 1333		

Page No 118

1	2	3	4	5	6	7
15	गंगाराम, गुला	मंगला	कुम्हार	1227		
16	मूंग्या	नानगा	,,	1245		
17	खेमचन्द	कजोड़	,,	1257		
18	भौंरीलाल, नानूराम	छीतरमल	,,	,,		
19	छोटेलाल, सुवालाल	कजोड	कुमावत	1214, 1215		
20	ग्यारसीलाल	भूरीलाल	,,	1266		
21	रामपाल	,,	,,	1267		
22	गंगाराम	,,	,,	1265		
23	श्योलाल	गोदू	कुम्हार	1270		
24	धन्नालाल, सुवालाल	हीरा	,,	1267		
25	सुवालाल	हीरालाल	,,	1193		
26	रामपाल	टीकूराम	,,	1195/1		खाम
27	रामकिशन	श्योबक्स	,,	918		
28	रामलाल, रामगोपाल	जयकिसन	गूजर	940		
29	मोहरीलाल	विजयलाल	कुम्हार	930		
30	बालकिशन	—	राजपूत	901		
31	फतेहसिंह	बालूसिंह	,,	891		
32	छोटीलाल	गंगाराम	कुम्हार	881		
33	गोरधन सिंहजी	—	कायस्थ	1158		
34	चौथमल	मोहरीलाल	कुमावत	1156		
35	जेठूसिंह	—	कर्नल	1151		
36	संयुक्त गृह निर्माण सहकारी समिति झोटवाड़ा			1147		
37	मुलजी	नारायण	कुम्हार	1128		
38	लालचन्द	कालराम	,,	1123		
39	गोपाल	भैरू	,,	1124		
40	सुरजमल हनुमान प्रसाद	दुर्गालाल	कुमावत	1127		

1	2	3	4	5	6	7
41	राजनारायण, रामलाल, सुन्दरलाल	घीसीलाल	,,	1113		
42	रामदेव	लादू	,,	1115		
43	द्वारकाप्रसाद	रामलाल	ब्राह्मण	1113		
44	बाबूलाल, छोगालाल	जमनालाल	कुमावत	1106		
45	रुगनाथ	लच्छीराम	कुम्हार	977, 907, 981, 1064		
46	देवीलाल	गंगाबक्स	ब्राह्मण	982		
47	श्रीमती चांद देवी पुत्री श्री इसरलाल धर्मपत्नि सुरजमल श्रीमती शान्तिदेवी पुत्री गोपीनाथ धर्मपत्नी रामकिशोर श्रीमती लल्लीदेवी पुत्र जगन्नाथ धर्मपत्नी कुंजबिहारीलाल नवलकिशोर पुत्र सुरजमल		महाजन	989		पुख्ता दुकान तामीर अपूर्ण को पूर्ण
48	लादूराम	किशनलाल	सुलानिया	974, 975, 995,		मकान बड़ा
49	चुन्नीलाल	देवाराम	रेगर	1007		मकान पुख्ता
50	संयुक्त गृह निर्माण सहकारी समिति लि. झोटवाड़ा			892, 893, 894, 898		,,
51	सीताराम	गोविन्दराम	कुम्हार	1181		,,

[redacted]

शुद्धि-पत्र

(बुधवार, दिनांक 17 मार्च, 1971)

स्तम्भ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
2	अन्तिम से 9	अत्याधिक	अत्यधिक
4	,, 13	वगैरा	वगैराह
5	1-2	और धनराशि	और जैसे
8	अन्तिम से 14	प्रोम सिह	प्रेमसिंह
11	,, 1	क्या मिलता है ?	—मिलती है ?
13	,, 15	किशम्भरनाथ	विश्वम्भरनाथ
14	7	वेद	बेंद
15	अन्तिम से 10	चाहता	चाहती
22	10	क्या ?	—?
	12	श्री मनोहरसिंह	—
28	12	वृद्धा	वर्धा
31	अन्तिम से 7	आपको	आपको बताऊ
32	10	सवाई	सिवाय
33	अन्तिम से 15	ज़मीन को	जमीन—
35	,, 7	ने	के
	,, 5	काबिल	काबिले
43	,, 16	रिवाईज्ड	रिवाइज्ड
—	,, 3	ऐस्टीमेट	एस्टीमेट
46	3	इण्डस्ट्रीयल	इण्डस्ट्रियल
,,	अन्तिम से 8	रेकर्ड	रेकार्ड
47	,, 13	बारी	वारी
48	,, 12	वसुल	वसूल
49	शीर्ष 1	उत्तर	—